बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

अक्षय्यम्

जनवरी–मार्च 2024 अंक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की तिमाही हिंदी पत्रिका

होली विशेषांक

केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन

जनवरी–मार्च, 2024 तिमाही की केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक टीम्स के माध्यम से प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री देबदत्त चांद की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में कार्यपालक निदेशक द्वय श्री अजय के. खुराना, श्री लाल सिंह और मुख्य महाप्रबंधक – राजभाषा श्री अजय के. खोसला एवं अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे। बैठक का संचालन प्रमुख–राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह द्वारा किया गया।

वार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक

दिनांक 01 मार्च, 2024 से 02 मार्च, 2024 तक वाराणसी में वार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसरपर कार्यपालक निदेशक श्री अजय के. खुराना द्वारा द्विभाषी एचआर कनेक्ट पोर्टल का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में वाराणसी–1, क्षेत्रीय प्रमुख श्री कल्लोल बिस्वास, वाराणसी–2, क्षेत्रीय प्रमुख श्री ब्रह्मानंद द्विवेदी और प्रमुख–राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह उपस्थित रहे।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका '**अक्षय्यम्**' के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करना मेरे लिए हमेशा विशेष अनुभूति रही है। पत्रिका के जनवरी-मार्च 2024 अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है।

आप सभी को यह बताते हुए मुझे हर्ष हो रहा है कि वित्तीय वर्ष 2023-24 की समाप्ति पर हमने समग्र व्यवसाय में ₹24 लाख करोड़ के आंकड़े को पार किया है। यह मीलस्तंभ हमने बैंक पर ग्राहकों के अटूट भरोसे और बड़ौदियन साथियों के समर्पित प्रयासों के आधार पर और '**अनुपालन के साथ व्यवसाय**' के मूलमंत्र को ध्यान में रखते हुए हासिल किया है। आगे भी अनुपालन हमारी कार्य-संस्कृति के डीएनए का एक अटूट हिस्सा बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यनीतियों के निर्धारण के पूर्व, जमीनी स्तर पर आ रही कठिनाइयों की जानकारी तथा उनके निराकरण के सुझाव प्राप्त करने और उसके अनुरूप हमारी कार्यनीति में आवश्यक बदलाव लाने की हमारी पहल के सकारात्मक परिणाम आने आरंभ हो गए हैं। इससे एक कदम और आगे बढ़ते हुए अब हमें विभिन्न स्तरों पर स्वस्थ **संवाद-संस्कृति** को भी विकसित किए जाने की आवश्यकता है। हमें एक ऐसा कार्य-परिवेश बनाने की जरूरत है जहां परिपत्रों / पत्रों के माध्यम से संवाद के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण मसलों पर सीधी बातचीत की जाए। इस संवाद की प्रक्रिया को बैंक के अंतर्गत हमें ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर दोनों ही दिशाओं में मजबूती प्रदान करने की आवश्यकता है। संवाद की यह संस्कृति बैंक में पारदर्शिता एवं टीम भावना को सुदृढ़ करने में सहायक बनेगी।

वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य में **ग्राहक सेवा** ही मुख्य विभेदक (Differentiator) है। अभी बैंकों के पास लगभग एक तरह की तकनीक है, एक जैसे उत्पाद हैं लेकिन अंतर सेवाओं की डिलिवरी के तरीके और ग्राहकों के साथ आत्मीयतापूर्ण व्यवहार से ही उत्पन्न होता है। हमें अपनी सेवाओं के टर्न अराउंड टाइम (टीएटी) को उद्योग जगत के बेंचमार्क से बेहतर करते हुए इसे उत्कृष्टता की ओर लेकर जाना होगा और ग्राहक संतुष्टि एवं ग्राहक आनंद से भी आगे की स्थिति को लक्ष्य बनाकर चलना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि हम सभी स्तरों पर हमारे ग्राहकों से फीडबैक प्राप्त करें और उस पर कार्रवाई की प्रणाली को और बेहतर बनाने की दिशा में प्रतिबद्ध प्रयास करें। ग्राहकों द्वारा व्यक्त किए गए किसी भी असंतोष का हमें गहराई से विश्लेषण करना है और उसके पूर्ण एवं स्थायी समाधान की चेष्टा करनी है।

हमें रिटेल बैंकिंग को अपनी कार्यनीति में सबसे आगे रखने की जरूरत है या यूं कहें कि हमें अधिक से अधिक नए रिटेल ग्राहकों को बैंक से जोड़ने की नीति पर काम करते हुए अपने व्यवसाय को **रिटेलीकरण** की ओर ले जाने की आवश्यकता है। पूर्व में उपलब्ध रिटेल उत्पादों के साथ-साथ, हमने वित्तीय वर्ष 2023-24 में अनेक रिटेल उन्मुख कस्टमाइज्ड उत्पाद आरंभ किए हैं। ग्राहकों की आवश्यकतानुसार हमें उन्हें रिटेल उत्पादों की डिलिवरी करनी है और क्रॉस सेल या अप सेल की संभावनाओं को भी हमेशा ध्यान में रखना है। **शाखाओं के वर्गीकरण** (ब्रांच सेगमेंटेशन) का कार्य एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू है जिस पर बैंक का विशेष फोकस रहेगा। स्थानीय व्यावसायिक संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए शाखाओं के वर्गीकरण के कार्य को आगे बढ़ाया जाएगा। वर्गीकरण को ध्यान में रखते हुए शाखाओं को आवश्यक स्किल सेट वाले मानव संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे ताकि व्यावसायिक संभावनाओं का सम्पूर्ण और समुचित दोहन सुनिश्चित किया जा सके। बैंक के व्यवसाय को एक नए मुकाम तक पहुंचाने में यह दृष्टिकोण हमें काफी सहायता प्रदान करेगा।

सम्पूर्ण डिजिटाइजेशन के युग में, भारतीय बैंकिंग परिदृश्य भी '**डिजिटल ओन्ली बैंक**' की अवधारणा की ओर बढ़ रहा है। डिजिटल-ओन्ली बैंक, जिन्हें **नियोबैंक** के रूप में भी जाना जाता है, हाल के वर्षों में भारत में खासी लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं। ये बैंक बिना किसी भौतिक शाखा के पूरी तरह से ऑनलाइन काम करते हैं और अपने मोबाइल ऐप या वेबसाइटों के माध्यम से ग्राहकों को विभिन्न वित्तीय सेवाएं प्रदान करते हैं। डिजिटल-ओन्ली बैंकों के माध्यम से ग्राहक किसी भी समय खाता खोल सकते हैं, राशि ट्रांसफर कर सकते हैं, बिलों का भुगतान कर सकते हैं और अन्य बैंकिंग सेवाओं का उपयोग कर सकते हैं। ये सुविधाएं युवा और तकनीकी रूप से सहज ग्राहकों को विशेष रूप से आकर्षित कर रही हैं। भौतिक शाखाओं वाले पारंपरिक बैंकों की तुलना में डिजिटल-ओन्ली बैंकों की परिचालन लागत अक्सर कम होती है। यह उन्हें बचत खातों और ऋणों पर प्रतिस्पर्धी ब्याज दरों के साथ-साथ न्यूनतम दरों पर लेनदेन का ऑफर देने में सक्षम बनाता है। जैसे-जैसे तकनीक आगे बढ़ रही है और अधिक लोग डिजिटल बैंकिंग सोल्यूशन्स को अपना रहे हैं, संभावना है कि ये नियोबैंक भारत में बैंकिंग के भविष्य की दशा और दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। एक पारंपरिक बैंक के रूप में हम अपनी भौतिक शाखाओं को प्रतिस्थापित तो नहीं कर सकते हैं, किंतु हमें पहले से समृद्ध अपने डिजिटल प्लेटफॉर्म्स को और अधिक उन्नत बनाना होगा ताकि हम खुद को एक डिजिटल ओन्ली बैंक के विकल्प के रूप में भी ग्राहकों के समक्ष प्रस्तुत कर सकें। डिजिटल अकाउंट ओपनिंग जैसे डिजिटल बी3 खाता, डिजिटल लेंडिंग, वीडियो केवाईसी, ऑनलाइन रि-केवाईसी इत्यादि पहलें हमारी इसी कार्यनीति का हिस्सा हैं ताकि प्रतिस्पर्धा के दौर में हम अपने समकक्ष बैंकों से एक कदम आगे रह सकें।

हम अपनी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में ईएसजी कारकों को भी शामिल कर रहे हैं ताकि व्यावसायिक लाभप्रदता के साथ-साथ सामाजिक और पर्यावरणीय उत्तरदायित्वों की पूर्ति भी हो सके। अपने परिचालन में ईएसजी सिद्धांतों का समावेश करते हुए हम न केवल ग्राहकों के बीच अपनी प्रतिष्ठा में वृद्धि कर सकते हैं, अपितु निवेशकों को आकर्षित करते हुए दीर्घकालिक और संवहनीय विकास में योगदान कर सकते हैं। हाल ही में, बैंक ने अपनी संवहनीयता रिपोर्ट (Sustainability Report) घोषित की है जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति बैंक की प्रतिबद्धता को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। इसी प्रतिबद्धता के तहत हमने हाल ही में ग्राहकों के लिए बॉब अर्थ ग्रीन डिपॉज़िट योजना की शुरुआत की है जिससे प्राप्त होने वाली जमा राशि का उपयोग उपयुक्त पर्यावरण-अनुकूल परियोजनाओं तथा क्षेत्रों की फ़ाइनेंसिंग के लिए किया जाएगा। संस्थान में प्रत्येक स्तर पर ईएसजी की संकल्पना को लागू किए जाने की आवश्यकता है ताकि हम समाज एवं पर्यावरण से संबंधित उत्तरदायित्वों के प्रति एक संवेदनशील बैंक के रूप में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर सकें।

वित्तीय वर्ष 2023-24 हमारे लिए व्यावसायिक उपलब्धियों का वर्ष रहा है। आइये, हम बड़ौदियन्स मिलकर अपनी सफलताओं की खुशी मनाएं और आने वाले वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रतिबद्धताओं के लिए खुद को तैयार करें।

आप सभी को वित्त वर्ष 2024-25 में अप्रतिम सफलता के लिए शुभकामनाएं!

देबदत्त चांद

देबदत्त चांद
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका **'अक्षय्यम्'** के नवीनतम अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। अब हम नए वर्ष और नए वित्त वर्ष 2024-25 में प्रवेश कर चुके हैं। यह वर्ष अनेक संभावनाओं से भरा है। हम और हमारा बैंक इस वर्ष नए कीर्तिमान स्थापित करने के लिए तैयार है।

भारतीय अर्थव्यवस्था जिस गति से प्रगति के पथ पर अग्रसर है, पूरा विश्व भारत की ओर आशापूर्ण दृष्टि से देख रहा है। वर्ल्ड बैंक ने अनुमान जताया है कि वर्ष 2024 में भारतीय अर्थव्यवस्था 7.5 प्रतिशत की दर से विकास करेगी। यह वर्ल्ड बैंक के पूर्व के अनुमान की तुलना में 1.2 प्रतिशत ज्यादा है। भारतीय अर्थव्यवस्था ने उस दौर को भी देखा है जब देश में आयात करने के लिए विदेशी मुद्रा भंडार लगभग शून्य हो गया था। भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार भारतीय विदेशी मुद्रा भंडार 642.49 बिलियन अमेरिकी डॉलर के साथ ऐतिहासिक स्तर पर पहुंच गया है। यह उपलब्धि हमारे देश के वैश्विक कद में और बढ़ोत्तरी करेगी। इसके अलावा भारतीय अर्थव्यवस्था विदेशी निवेश, मंहगाई, ऋण मांग, औद्योगिक वृद्धि जैसे संकेतों पर भी सकारात्मक रही है, जो भारत की सुदृढ़ अर्थव्यवस्था का द्योतक है। ये सारे विकास भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण एवं संभावनाओं को दर्शाते हैं।

बैंकिंग उद्योग एवं देश की अर्थव्यवस्था में अन्योन्याश्रय का संबंध है। एक की प्रगति दूसरे के विकास में साधक बनती है। इसी प्रकार बैंकिंग उद्योग भी विकास के पथ पर अग्रसर है जिसकी छाप वैश्विक पटल पर भी दिखाई देती है। वैश्विक स्तर की विभिन्न संस्थाएं एवं रिपोर्ट भी भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की प्रगति, उन्नति को लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण अभिव्यक्त करती है। भारतीय रिज़र्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार 22 मार्च, 2024 तक बैंकों द्वारा दिए गए ऋण में वर्ष-दर-वर्ष 20.2 प्रतिशत एवं जमा में 13.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। ये सकारात्मक आंकड़े हमारे लिए नवीन संभावनाओं को वास्तविकता में बदलने के अवसरों को दर्शाते हैं।

हमारे बैंक ने भी ₹24 लाख करोड़ के वैश्विक कारोबार के लक्ष्य को पार कर लिया है। यह हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी की दूरदर्शी सोच, बैंक की सभी इकाइयों एवं बैंक के कर्मचारियों के अथक प्रयासों का परिणाम है। व्यवसाय एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। इसमें निरंतर वृद्धि हमें न केवल घरेलू बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भी प्रासंगिक बनाए रखती है। इसलिए व्यवसाय जुटाते समय हमें हमारे ग्राहकों से 360 डिग्री जुड़ाव स्थापित करने के प्रयास करने चाहिए। ग्राहक की संपूर्ण वित्तीय आवश्यकताएं हमारे माध्यम से पूरी हो, ऐसी हमारी कोशिश होनी चाहिए। हमारे बैंक के पास ग्राहकों की आवश्यकताओं के अनुकूल सभी वित्तीय उत्पाद एवं सेवाएं उपलब्ध हैं। जरूरत है कि हम ग्राहकों की आवश्यकताओं को ठीक ढंग से समझ कर कार्रवाई करें।

हमारा बैंक ग्राहकों की सुविधाओं को ध्यान में रखते समय भाषा के महत्त्व को भी समझता है, इसलिए अपने डिजिटल उत्पादों में भाषाओं के समावेश पर लगातार ध्यान केंद्रित किए हुए है। ग्राहक हमारे सभी कार्यकलापों के केंद्र में हैं। बैंक अपनी इस रूपांतरण यात्रा को ग्राहकों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ा रहा है। हमारी शाखाएं ग्राहकों के लिए महत्त्वपूर्ण संपर्क बिंदु हैं। ग्राहक अपनी वित्तीय आवश्यकताओं के लिए काफी उम्मीद के साथ शाखा में आते हैं। शाखाओं को उनकी आवश्यकताओं के संबंध में तत्परता से कार्रवाई करनी चाहिए, साथ ही ग्राहकों को बैंक के डिजिटल चैनलों से जोड़ने और उन पर शिक्षित करने का भी प्रयास करना चाहिए ताकि उनकी अधिकांश आवश्यकताएं हमारे डिजिटल चैनलों से ही पूरी हो जाएं और उन्हें बार-बार शाखा में आने का कष्ट नहीं उठाना पड़े।

हम सभी को साथ मिलकर हमारे बैंक को और आगे ले जाना है। मुझे विश्वास है कि हम अनुपालन के साथ व्यवसाय सुनिश्चित करते हुए अभीष्ट लक्ष्यों को हासिल करने और अपनी व्यावसायिक यात्रा को नई ऊंचाई प्रदान करते हुए बैंक को समग्र रूप में और सुदृढ़ता प्रदान करने में सफल होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

ललित त्यागी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

हमारे बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका **'अक्षय्यम्'** के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए अतीव प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। हमारी यह पत्रिका सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत कर प्रगति एवं समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है एवं हमारी सृजनात्मक शक्ति के साथ-साथ चिंतन शक्ति को भी समृद्ध करती है।

आज हम तकनीकी क्रांति के युग में जी रहे हैं। यूं तो तकनीक ने मानवता के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है किन्तु जिन क्षेत्रों को तकनीक ने सर्वाधिक प्रभावित किया है, बैंकिंग उनमें से महत्त्वपूर्ण है। हमारा बैंक अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग करने वाले अग्रणी बैंकों में से एक है। बैंक अपने डिजिटल चैनलों के माध्यम से धीरे-धीरे लगभग सभी बैंकिंग सेवाएं/ उत्पाद ग्राहकों को उपलब्ध कराने की दिशा में तेज गति से आगे बढ़ रहा है। बैंक ने व्यवसाय विकास की प्रक्रिया में सहयोग हेतु अपनी परिचालन इकाइयों के लिए भी अनेक तरह की तकनीकी सुविधाएं यथा व्यावसायिक आंकड़ों संबंधी डैश बोर्ड आदि उपलब्ध कराई हैं। इस तरह आज तकनीक अपनी कार्य दक्षता में सुधार करने, लागतों को कम करने एवं ग्राहकों को श्रेष्ठतम सेवाएं/ सुविधाएं उपलब्ध कराने में सहायक बन रही है। हमें प्रत्येक स्तर पर तकनीक के अधिकतम ज्ञान एवं इस्तेमाल की संस्कृति को बढ़ावा देना है ताकि हम आज की प्रतिस्पर्धात्मक तकनीक आधारित बैंकिंग के दौर में अपने परिचालन को किफायती बनाते हुए अपनी अलग पहचान बनाए रख सकें।

वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान हमने व्यवसाय वृद्धि की दृष्टि से उल्लेखनीय कार्य किया है। इससे परिलक्षित होता है कि ग्राहकों को आकर्षित करने, उनको उत्कृष्ट, सरल एवं सुलभ बैंकिंग सुविधाएं आसानी से उपलब्ध कराने की हमारी प्रतिबद्धता के अनुकूल हमने अच्छे प्रयास किए हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम विभिन्न सेवाएं उपलब्ध कराते समय हमारे बैंक की अनुपालन संस्कृति का पूरा ध्यान रखें, ग्राहकों के साथ संवाद और व्यवहार करते हुए सम्मान, सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व पूर्ण व्यवहार जैसे नैतिक मूल्यों को सर्वोपरि रखें। निरंतर सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम अपने साथियों को टीम भावना एवं परस्पर सहयोग के साथ काम करते हुए लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करें। हमारा उद्देश्य होना चाहिए कि तकनीक जनित नवाचारों को अपनाकर हम ग्राहकों से जुड़ाव को और अधिक सशक्त बनाएं, बैंकिंग क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ सेवाओं एवं उत्पादों के द्वारा हम बैंकिंग उद्योग में अलग मानक स्थापित करें एवं अपने बैंक को एक वैश्विक संगठन बनाने के बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दें।

मुझे विश्वास है कि हम तकनीक से जुड़े जोखिमों के बारे में जागरूक रहते हुए इसके अधिकतम उपयोग द्वारा समाज के सभी वर्गों को बैंकिंग सुविधाएं प्रदान कर बैंक के साथ-साथ स्वयं अपना भी समग्र विकास सुनिश्चित कर सकेंगे। कहते हैं कि **'सफलता की यात्रा की कोई मंजिल नहीं होती, इसमें पड़ाव आते हैं और इन पड़ावों को खूबसूरत बनाना मनुष्य के हाथ में होता है।'** एक संगठन के तौर पर आज हमने एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव हासिल किया है परंतु भविष्य हमें और कुछ बड़ा करने के लिए आमंत्रित कर रहा है।

आइए! अपने बैंक की इस अहर्निश विकास-यात्रा में अपनी भूमिका का सर्वश्रेष्ठ तरीके से निर्वहन करें।

भारतीय नववर्ष की शुभकामनाओं सहित!

संजय मुदालियर

संजय विनायक मुदालियर

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

पिछले कई दशकों से पत्र-पत्रिकाएं संवाद का एक सफल माध्यम रही हैं। पत्रिकाएं न केवल हमारी भावनाओं और विचारों की संवाहिका होती हैं बल्कि ये हमारी सृजनात्मकता को प्रकट करने का माध्यम भी होती हैं। आपकी इन्हीं सृजनात्मकताओं, सफलताओं और संघर्षों की साक्षी हमारी हिंदी पत्रिका अक्षय्यम् के नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे संवाद स्थापित करना मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है। मार्च-2024 तिमाही की समाप्ति के साथ ही हम नए वित्तीय वर्ष 2024-25 एवं नए विक्रम संवत् में भी प्रवेश कर रहे हैं। इस अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

एक सुदृढ़ जोखिम संस्कृति हमारे संगठन की सफलता की आधारशिला है जो हमारे परिचालन संबंधी कार्यों के आधार को सुदृढ़ता प्रदान करने के साथ ही अनुपालन सुनिश्चित करने में सहायक होती है ताकि हम उपलब्ध अवसरों का इष्टतम लाभ उठाने के दौरान इससे संबद्ध जोखिमों की सक्रिय रूप से पहचान कर सकें। किसी संस्थान के लिए जोखिम संस्कृति इसलिए महत्त्वपूर्ण होती है कि संस्थान के लिए लक्ष्यों को प्राप्त करने के साथ- साथ वर्तमान एवं भविष्य के संभावित खतरों को कम करते हुए संवहनीय वृद्धि दर हासिल करना भी महत्त्वपूर्ण होता है। किसी संस्था की शक्ति केवल वित्तीय कार्यनिष्पादन में नहीं बल्कि उस आस्था और विश्वास में भी है जिसके माध्यम से ग्राहकों, शेयरधारकों और व्यापक जन समुदाय को संस्थान के साथ भावात्मक रूप से जुड़ने के लिए अभिप्रेरित किया जाता है। हम अपने संस्थान में एक सुदृढ़ जोखिम संस्कृति को विकसित करके, बड़ौदियन की अनेक पीढ़ियों के श्रम एवं समर्पित प्रयासों से अर्जित अपने बैंक की प्रतिष्ठा की न केवल रक्षा कर सकते हैं बल्कि इसमें नए आयाम भी जोड़ सकते हैं। सुदृढ़ जोखिम संस्कृति हमारे लिए सफलता के नए मार्ग प्रशस्त करेगी।

हमारे बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन की एक सुदृढ़ परंपरा रही है। बैंकिंग क्षेत्र में नवोन्मेषी पहलों के अनुरूप ही राजभाषा के क्षेत्र में भी बैंक द्वारा नई पहलों की भी शुरुआत की गई है। हमारे बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन केवल अनुपालन तक सीमित नहीं है बल्कि यह ग्राहक जुड़ाव को प्रगाढ़ बनाने तथा व्यवसाय विकास का महत्त्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरी है। बैंक द्वारा ग्राहकों के लिए हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में डिजिटल बैंकिंग की अनेक सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई हैं। शाखा स्तर पर कार्यरत सभी साथियों से अनुरोध है कि बैंक द्वारा भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करवाई गई इन सुविधाओं को ग्राहकों के लिए अधिक से अधिक प्रचार करें।

भाषा एवं व्यवसाय का गहरा संबंध है। हमारी राजभाषा संबंधी सभी पहलों एवं प्रयासों के लक्ष्यों में व्यवसाय किसी न किसी रूप में जुड़ा होना चाहिए। इस दिशा में हम स्कूलों/ महाविद्यालयों में बैंक की ओर से राजभाषा के बैनर तले किए जाने वाले विभिन्न आयोजनों में नए व्यवसाय प्राप्त करने के पक्ष को भी हमेशा ध्यान में रखें। हमारी 29 नगर समितियां, जिनका संयोजन का दायित्व हमारे पास है, नया व्यवसाय प्राप्त करने की दृष्टि से अच्छा मंच साबित हो सकती हैं। इन नगर समितियों के सदस्य कार्यालय के स्टाफ सदस्य अथवा स्वयं वह कार्यालय हमारे लिए व्यवसाय प्राप्ति के महत्त्वपूर्ण स्रोत बन सकते हैं। एक व्यावसायिक संस्थान होने के नाते हमें व्यवसाय अर्जित करने हेतु सभी संबंधों/ संपर्कों का अधिकतम उपयोग करने की दिशा में अग्रसर होना चाहिए ताकि हम समिति के मंच से बैंक की प्रभावी छवि के निर्माण के साथ ही बैंक के व्यवसाय वृद्धि में भी योगदान देने में सफल हो सकें।

आइए! हम सब मिलकर व्यवसाय विकास संबंधी अपने प्रयासों को निरंतर जारी रखते हुए वित्त वर्ष 2024-25 को बैंक के व्यवसाय वृद्धि की दृष्टि से ऐतिहासिक बनाने की दिशा में कार्य करें।

शुभकामनाओं सहित,

लाल सिंह

मुख्य महाप्रबंधक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका **'अक्षय्यम्'** के नवीनतम अंक के माध्यम से पहली बार अपने विचार आपसे साझा करना मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है। यह पत्रिका न केवल बैंक के स्टाफ सदस्यों की रचनाधर्मिता और मौलिक चिंतन को अभिव्यक्त करने का प्रभावी मंच प्रदान करती है, बल्कि समग्रता में सभी स्तरों पर किए जा रहे नवोन्मेषी पहलों से रू-ब-रू होने का अवसर भी प्रदान करती है।

मौजूदा समय के प्रतिस्पर्धी बैंकिंग के दौर में अग्रणी बने रहने के लिए उत्कृष्ट ग्राहक सेवा और बेहतर ग्राहक अनुभव प्रदान करने हेतु ग्राहकों से उनकी भाषा में संवाद और संप्रेषण स्थापित करने की उपयोगिता भी बढ़ी है। आज राजभाषा संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन एवं अनुपालन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यवसाय विकास का प्रभावी माध्यम और अवसर बनकर उभरी है। आम जनता से संपर्क स्थापित करने एवं बैंक के संदेश को उन तक पहुंचाने में सोशल मीडिया, ओओएच आदि में हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का खूब प्रयोग किया जा रहा है। हमारे बैंक ने एक कदम आगे बढ़ते हुए ग्राहकों को बैंक की ओर से संप्रेषित किए जाने वाले ई-मेल/ पत्राचार में द्विभाषिकता सुनिश्चित करने की बड़ी पहल की है। वर्ष के दौरान बैंक द्वारा विभिन्न चैनलों के माध्यम से ग्राहकों को 20 करोड़ से अधिक संप्रेषण हिंदी/ द्विभाषी स्वरूप में भेजे गए हैं। यह पहल ग्राहकों के साथ जुड़ाव को एक नए स्तर तक ले जाने में और ग्राहकों को भाषाई सुगमता प्रदान करते हुए बैंकिंग में पारदर्शिता का एक नया आदर्श स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण साबित हुई है।

बैंकिंग उद्योग डिजिटल रूपांतरण के दौर से गुजर रहा है और इस परिदृश्य में तकनीकी रूप से दक्षता हासिल करना और परिवर्तन की आवश्यकताओं के अनुरूप मौजूदा प्रणालियों और प्रक्रियाओं को संवर्धित करना आवश्यक है। हमारा बैंक सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से डिजिटल बैंकिंग के क्षेत्र में ग्राहकोन्मुखी नए-नए उत्पाद विकसित करने की दिशा में हमेशा अग्रणी रहा है। महत्त्वपूर्ण यह है कि ऐसे लगभग सभी डिजिटल उत्पादों को बैंक ने हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करा दिया है। अब जरूरत है ग्राहकों को भारतीय भाषाओं में प्रदान की गई इन सुविधाओं के बारे में जागरूक करने की। समाज में अपनी भाषा एवं अपनी परंपराओं के प्रति जैसे-जैसे आकर्षण एवं गौरव का भाव उभर रहा है और बैंकिंग आम लोगों तक पहुंच रही है, भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराई गई सुविधाओं की मांग में भविष्य में काफी वृद्धि होने की संभावना है। इस पक्ष को ध्यान में रखते हुए हमें आवश्यक कार्यनीति तैयार करनी चाहिए।

बैंक ने वित्त वर्ष 2023-24 में अपने कुल कारोबार को ₹24 लाख करोड़ से ऊपर ले जाकर महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। हम सभी के समक्ष अब चुनौती है कि वित्त वर्ष 2024-25 में इस उपलब्धि को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएं। व्यवसाय विकास के इन प्रयासों में हिंदी एवं भारतीय भाषाओं की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण साबित होगी।

नए वित्तीय वर्ष की शुभकामनाओं सहित!

अजय के खोसला
मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा)

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

वर्ष – 19 * अंक – 77 * जनवरी–मार्च 2024

–: संरक्षक एवं मार्गदर्शक :–

अजय कुमार खोसला

मुख्य महाप्रबंधक – राजभाषा

–: कार्यकारी संपादक :–

संजय सिंह

प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

–: सहायक संपादक :–

प्रमोद बर्मन

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

अजित सिंह

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

–: संपर्क :–

राजभाषा विभाग

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन, पांचवी मंजिल,
आर सी दत्त रोड, अलकापुरी, बड़ौदा – 390007

फोन : 0265–2316587 / 6176

ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com
akshayyam@bankofbaroda.com

राजभाषा विभाग, बैंक ऑफ़ बड़ौदा,
पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड, अलकापुरी,
बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित।

रुपांकन एवं मुद्रण

मे. प्रिंट प्लस प्रा.लि.,
212, स्वस्तिक चेंबर्स, एस.टी. रोड,
चेंबूर, मुंबई 400071

प्रकाशन तिथि : 20/04/2024

सूचना :

बैंक के स्टाफ सदस्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएं/ सामग्री ई–मेल: akshayyam@bankofbaroda.com पर भेज सकते हैं।

अनुक्रम

इस अंक में

ब्रज की होली 8

नाशिक रंगपंचमी उत्सव (रहाड़) 13

उत्तराखंड की पहाड़ी होली 15

काशी की मसाने की होली 17

हिमाचल प्रदेश में 'टीहरा' की होली 18

याओसंग उत्सव–मणिपुर की होली 22

आंध्र प्रदेश की मेदुरू होली..... 24

केरल का मंजल कुळी..... 25

पंजाब में 'होला-मोहल्ला' की उमंग 28

तमिलनाडु में कामन पांडिगई 30

कोंकण का शिमगोत्सव 32

कर्नाटक में कामना हब्बा 33

बिहार के फागोत्सव के विभिन्न रंग 35

महिला स्वतंत्रता..... 36

कासा एवं कारोबार विकास 39

साहित्यिक नगरी वाराणसी 44

पुस्तक समीक्षा – इकिगाई 46

कार्यकारी संपादक की कलम से

हिंदी पत्रिका **अक्षय्यम्** के इस नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे रू-ब-रू होते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। जैसाकि हम सभी जानते हैं मानव का इतिहास परिवर्तन और नए को अपनाने का इतिहास है। भारतीय परंपरा में हमारे सभी प्रमुख त्यौहार भी परिवर्तन और नए के स्वागत के उत्सव के ही द्योतक हैं। हर पर्व के बाद हम नवीन ऊर्जा और अभिप्रेरणा लेकर आगे बढ़ते हैं। यह हमारी उत्सवधर्मिता ही है जो हमें सदा प्रफुल्लित और रसयुक्त बनाए रखती है। हमारे पेशेवर जीवन में भी हम परिवर्तनों और नई पहलों को सहर्ष स्वीकारते हुए उन्हें अपने दैनिक काम-काज में अपनाते हैं और बेहतर ग्राहक सेवा देने की अपनी प्रतिबद्धता को और दृढ़ स्वरूप देते हैं। बैंक द्वारा डिजिटल चैनलों के माध्यम से उपलब्ध कराए जा रहे उत्पादों एवं सेवाओं के उपयोग के लिए ग्राहकों को स्वतः सक्षम बनाने के लिए भाषा संबंधी अवरोधों को दूर किया जा रहा है और उन्हें उनकी ही भाषा में सेवा का लाभ लेने के पर्याप्त विकल्प उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

बैंक के डिजिटल चैनलों में उपलब्ध भारतीय भाषाओं की सुविधाओं के संबंध में हाल ही में राजभाषा विभाग द्वारा एक आंतरिक सर्वेक्षण किया गया जिसमें कुल 9254 स्टाफ सदस्यों द्वारा सहभागिता दर्ज की गई। सर्वेक्षण के निष्कर्षों के अनुसार 64% स्टाफ सदस्य डिजिटल चैनलों का भारतीय भाषाओं में प्रयोग करते हैं। अंग्रेजी की तुलना में 66% स्टाफ सदस्य हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के इंटरफेस को आसान मानते हैं और उपयोग की दृष्टि से अनुभव को भी 82% उपयोगकर्ता भारतीय भाषाओं के इंटरफेस को 'बहुत अच्छा' और 'अच्छा' मानते हैं। पहले चरण में, स्टाफ सदस्यों से प्राप्त इस फीडबैक के ही अनुकूल हम आगे अपने ग्राहकों से भी ऐसे फीडबैक प्राप्त करने की योजना बना रहे हैं ताकि इस सुविधा के बारे में उनकी राय जानी जा सके और तदनुसार कार्यनीतियां तैयार की जा सकें। हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से ग्राहकों को बैंक की सेवाएं उपलब्ध कराने का हमारा प्रयास आगे भी पूरी प्रतिबद्धता से जारी रहेगा।

पत्रिका के इस अंक में हमने कुछ नए प्रयोग किए हैं। भारतीय पर्व-त्यौहार अपनी छटा, ढंग, आभा के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। इन त्यौहारों से न केवल सामाजिक मेल-जोल को बल मिलता है बल्कि इनसे हमारे रिश्तों-संबंधों में नई ऊर्जा का संचार होता है। स्मार्ट-फोन के इस युग में हमारे त्यौहारों का महत्त्व बढ़ गया है। हाल ही में हमने होली मनाई। होली पर्व युगों से भारतीय जीवन का अभिन्न हिस्सा रहा है। होली के बिना भारतीय मन की कल्पना नहीं की जा सकती। होली का इतना महत्त्व होने के बावजूद हम शायद ही जानते हैं कि होली भारत के अलग-अलग हिस्सों में कितने स्वरूपों में मनाई जाती है। होली को समग्रता में जानने के लिए हम इस अंक को **'होली विशेषांक'** के रूप में अपने सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें आपको **हिमाचल प्रदेश में होली, उत्तराखंड की पहाड़ी होली, पंजाब का होला-मोहल्ला, ब्रज की होली, नाशिक का रंगपंचमी उत्सव (रहाड़), कोंकण का शिमगोत्सव, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना की होली, मणिपुर की होली (याओसंग उत्सव) से लेकर बिहार की होली और बनारस की मसाने की होली** (जिसे पुनर्सृजन के उत्सव के रूप में विलक्षण तरीके से मनाया जाता है) से संबंधित रोचक जानकारियां प्राप्त होंगी। **अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के परिप्रेक्ष्य में महिला स्वतंत्रता** संबंधी आलेख भी पाठकों की वैचारिकता को नए आयाम पर ले जाएगा। बैंकिंग कारोबार में कासा के महत्त्व और उसे जुटाने के क्रम में ग्राहक केंद्रित प्रतिविक्रय (क्रॉस सेलिंग) को रेखांकित करने वाले आलेख **'कासा एवं कारोबार विकास' और पुस्तक समीक्षा** भी पाठकों को पसंद आएगी। आशा है कि पत्रिका का यह विशेषांक आपको अवश्य रूचिकर एवं ज्ञानवर्धक लगेगा। पत्रिका के इस अंक के संबंध में हमें आपके अभिमत की प्रतीक्षा रहेगी।

नए वित्तीय वर्ष 2024-25 की मंगलकामनाओं सहित,

संजय सिंह
प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

ब्रज की होली - सकल जग होरी, या ब्रज 'होरा'

अम्बरीश वर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

भारतीय सांस्कृतिक विरासत अपने रंगीन और उत्साहजनक महोत्सवों के लिए प्रसिद्ध है और उनमें से एक है ब्रज की होली। ब्रज उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले और उसके आस-पास का क्षेत्र है, जहां हर साल होली का उत्सव विशेष धूमधाम से मनाया जाता है। ब्रज की होली को इसलिए प्रसिद्ध माना जाता है क्योंकि यहां की होली में राधा-कृष्ण के प्रेम के रंग अत्यंत विशेष और मनोहारी होते हैं। ब्रज की होली का इतिहास बहुत प्राचीन है और इसका संबंध पुरातात्विक ग्रंथों और पुराणों से है। यहां के लिए कहा जाता है कि ब्रज में होली का उत्सव भगवान कृष्ण की लीलास्थली वृंदावन-नंदगांव-बरसाना से आरंभ हुआ था, जहां उन्होंने अपनी प्रियतमा श्रीराधा और गोपियों के साथ होली खेली थी।

होली के जितने रंग हैं उससे ज्यादा उसे मनाने के ढंग हैं। ब्रज में होली की बात की जाए तो इसका रंग ही निराला है। यहां पर फूलों की होली भी खेली जाती है तो लट्ठमार होली का भी एक अलग ही अंदाज है, लड्डू की होली से लेकर गुलाल की होली, यहां पर होली के सारे रंग अलग ही हैं। यहां की होली के बारे में सच ही कहा गया है- **सकल जग होरी, या ब्रज 'होरा'** अर्थात् जहां संपूर्ण जगत में होली का पर्व मनाया जाता है तो वहीं ब्रज में होली को 'होरा' की संज्ञा दी गई है। क्योंकि होली का जो स्वरूप प्रेम, स्नेह, भक्ति, माधुर्य, हंसी-ठिठोली, उत्साह जैसे अनगिनत रंगों में रंगा हुआ ब्रज में देखने को मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। शायद इसीलिए यहां पर दूर-दूर से लोग बड़ी संख्या में ब्रज की इस अनोखी होली का आनंद लेने हर वर्ष आते हैं।

देश के बाकी हिस्सों में जहां होली एक या दो दिन की होती है, वहीं ब्रज में होली लगभग 45 दिनों तक (बसंत पंचमी से चैत्र कृष्ण पंचमी तक) अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनायी जाती है। ब्रज के कवि तो यहां तक कहते हैं कि अगर बैकुंठ-स्वर्ग में होली नहीं मनाई जाती तो वहां का वैभव व्यर्थ है- **'स्वर्ग-बैकुंठ में होरी जो नांहि, तो कोरी कहा लैं करें ठकुराई।'** एक और विशेष बात है कि जहां सब जगह होली खेली जाती है वहीं ब्रज में होली खेलने के साथ गाई भी जाती है। ब्रज में तो अनेक स्थानों के नाम तक होली से जुड़े हैं, जैसे होली वाली गली (वृंदावन), रंगीली गली (बरसाना), होली मैदान (नंदगांव), होली गेट (मथुरा), गुलाल कुंड (जतीपुरा, गोवर्धन) और तो और मथुरा में भगवान शिव के एक प्रमुख मंदिर का नाम ही 'रंगेश्वर महादेव' है।

शीतकाल की विदाई पर जैसे ही बसंत ऋतु आती है, ब्रज के मंदिरों में होली के रंग बिखरने लगते हैं। **'ढफ बाजै नवल किशोरी के,' 'ढफ बाजौ है छैल मतवारे कौ, ढफ बाजौ है'** - ये लोकगीत ढफ की थाप पर बसंत पंचमी को ही जब मंदिरों में गूंजता है तो मानिए ब्रज में तो होली आ गई।

ब्रज की होली की बात छिड़ते ही शायद आपकी जुबान पर पहला शब्द आएगा- लट्ठमार होली। चमकीले गोटा-किनारी लगे लहंगा-फरिया पहने और लंबा घूंघट डाले महिलाएं उड़ते गुलाल, रंग की बौछार और भारी उछलकूद व शोर में गाए जा रहे लोकगीत के बीच माथे पर पाग बांधे पुरुषों पर दनादन लाठियां बरसाती हैं। पुरुष एक ढाल से खुद को बचाते हैं। कभी-कभी तो जमीन पर पंजों के बल बैठे एक ही पुरुष को चारों ओर से घेरकर तीन-चार महिलाएं उस पर उछल-उछलकर ऐसे लट्ठ बरसाती हैं, मानो खेत में धान कूटा जा रहा हो।

होलिका दहन से एक हफ्ते पहले संध्या वेला में लगभग एक घंटे हर साल बरसाने की 'रंगीली गली' में यह घटना होती

है। 'रंगीली गली' लगभग 100 मीटर लम्बी संकरी-सी गली है। बरसाना, ब्रज (मथुरा) का छोटा-सा कस्बा है। ऐसा ही नजारा बरसाने से 5 किलोमीटर दूर दूसरे कस्बे नंदगांव के नंदबाबा मंदिर परिसर में अगले दिन देखने को मिलता है। सदियों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी निभाई जा रही इस परंपरा ने एक छोटे स्थान की लट्ठमार होली को इतना महान उत्सव बना दिया है कि दूर-दराज इलाकों में भी लोग होली के पर्याय के रूप में इसे याद करते हैं।

बहरहाल, ब्रज की होली इन दो स्थानों की लट्ठमार होली तक ही सीमित नहीं है। धार्मिक महोत्सव व लोकप्रिय त्यौहार होली के ब्रज में अनेक रूप हैं और बरसाना-नंदगांव की लड्डूमार होली उन रूपों में से एक है। वृंदावन-मथुरा के मंदिरों की रंगीली होली और धमार गायन, फालैन व जटावरी के होलिका दहन में प्रह्लाद लीला, जाब, बठैन व दाऊजी का हुरंगा, मुखरई, ऊमरी का चरकुला नृत्य, मंदिरों में फूलडोल सहित होली के लोक संगीत, हंसी-ठिठोली, उमंग, उल्लास, हर्ष की जो तरंग ब्रज में पैदा होती है, वह बेमिसाल है।

ब्रज की होली का गीत-संगीत से गहरा नाता है। ब्रज की होली के बारे में रसिकजनों ने कितना लिखा है- होली के रसिया, पद, गीत, चौपनी, लेख यहां तक कि होली के रूप में ब्रज का एक अलग साहित्य ही विराजमान है। जितने गीत, पद रसिया होली के हैं, उतने किसी अन्य उत्सव व त्यौहार के नहीं। तभी तो होलिकोत्सव के समय अबीर, गुलाल, चोबा, चंदन से मंदिर महकने लगते हैं। ठाकुर जी के श्रृंगार में उनके कमर में फेंटे में गुलाल की झोरी लटका दी जाती है। इन दो पदों की पंक्तियों में ऐसा ही वर्णन मिलता है-

'चीर-अबीर उड़ावत, नांचत कटि सौं बांधि गुलाल की झोरी
मगन भई क्रीडत सब सुंदरि, प्रेम-समुद्र-तरंग झकोरी' और
'भोर भए नंदलाल संग लिए ग्वाल-बाल
फेंटन भरि लिए गुलाल बोलत मुख होरी'

ब्रज के मंदिरों के गर्भगृह की ड्योढ़ी पर रखे पात्र में गुलाल और रंगीन जल भी ब्रज में होली का अहसास कराता रहता है। समय-समय पर गुलाल व रंग श्रद्धालुओं पर छिड़का भी जाता है। मंदिरों में प्रयोग किया जाने वाला रंग टेसू अथवा पलाश के फूलों को उबालकर बनाया जाता है। बसंत पंचमी को वृंदावन के शाहजी मंदिर में बसंती कमरा खुलता है। ठाकुरजी बसंती पोशाक धारण करते हैं, बसंती फूलों से श्रृंगार होता है और झाड़-फानूसों में बसंती रंग की रोशनी की जाती है। ब्रज की बस्तियों में प्रमुख चौराहों पर माघी पूर्णिमा को डांडा (लकड़ी का एक टुकड़ा) गाड़कर यह तय कर दिया जाता है कि एक महीने बाद उस स्थान पर होली जलेगी। होलिका दहन के 10 दिन पहले से काठ-कवाड़ इकट्ठा करने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है।

होली बिना पकवानों के अधूरी है और इस अवसर पर ब्रज में अलग-अलग तरह के पकोड़े बनाए जाते हैं। साथ ही बर्फी, लड्डू, दही-सोंठ के बताशे, पापड़ी चाट और गुझिया सबकी पसंदीदा हैं। गुझिया के बिना रंगो का यह त्यौहार अधूरा सा है। ऐसे में अलग-अलग तरह की गुझिया संग अनेकों पकवान समय पूर्व से तैयार किए जाने लगते हैं।

फूलों की होली: समूचे ब्रज में माना जाता है कि भगवान कृष्ण और श्रीराधा वृंदावन में फूलों से खेलते थे। पौराणिक कथाओं के अनुसार कृष्ण एक बार श्रीराधारानी से मिलने न जा सके। इस पर श्रीराधारानी उदास हो गईं, जिससे फूल, जंगल सब सूखने लगे। ऐसे में जब भगवान कृष्ण को श्रीराधा जी की स्थिति का पता चला तो वह तुरंत ही उनसे मिलने पहुंचे। वहीं अपने कन्हैया को देख श्रीराधारानी बहुत खुश हो गईं और इससे सभी मुरझाए फूल फिर से खिल उठे। वहीं उन्हीं खिले हुए फूलों से कृष्ण ने श्रीराधा के साथ फूलों की होली खेली।

हालांकि फुलैरा दौज (फाल्गुन शुक्ल द्वितीया) से फूलों की होली का आयोजन ब्रज के सभी प्रमुख मंदिरों में हो जाता है। इस दौरान पूरा आसमान फूलों से रंग जाता है। यह एक अद्भुत दृश्य है जो पूरी दुनिया को मंत्रमुग्ध कर देता है। इस दिन, ब्रज के लोग मंदिरों में जाते हैं और भगवान कृष्ण और राधा की पूजा करते हैं और इसके बाद युगल सरकार पर गुलाब, कमल, गेंदे व अन्य सुगंधित फूलों की पंखुड़ियां बरसाते हैं।

वृंदावन के समीप कीकी नगला में सैकड़ों की संख्या में देश के ही नहीं, विदेशी भक्त भी जुटते हैं। ये यहां पहले हरिनाम संकीर्तन करते हैं। उसके बाद होली के भजनों पर नाचते-झूमते फूलों की होली खेलते हैं।

बरसाने की लट्ठमार होली: ब्रज की होली का सबसे प्रसिद्ध उत्सव **'बरसाने की लट्ठमार होली'** है। इसमें महिलाएं पुरुषों को लाठियों से मारती हैं, जिसे रासलीला कहा जाता है। यह उत्सव गोपियों के उत्साह को दिखाने का एक माध्यम है और उन्हें कृष्ण के प्रेम में खोने की अनुभूति कराता है।

जैसे-जैसे फाल्गुन शुक्ल नवमी करीब आने लगती है, बरसाना और नंदगांव के पंडे-पुजारियों के घरों में लट्ठमार होली की तैयारी शुरू हो जाती है। महिलाएं कोई दो मीटर लंबे लट्ठ की तेल मालिश कर धूप में चमकाती हैं। गोस्वामी व पंडे लोग ढालों पर रंग-बिरंगे कागज चिपकाते हैं या कपड़े लपेटते हैं। अष्टमी को बरसाने से ब्रजवासियों का समूह नंदगांव के हुरियारों

(होरी के यार यानी होली खेलने वाले गोप) को बाकायदा न्योता देने जाता है। इस निमंत्रण को स्वीकार करने की सूचना जैसे ही बरसाने में मिलती है, बरसाने स्थित श्रीराधारानी मंदिर में इस खुशी में लड्डुओं की होली खेली जाती हैं। इस अवसर पर क्विंटलों लड्डू लुटा दिए जाते हैं। भक्त इस महाप्रसाद का एक कण पाकर भी निहाल हो उठते हैं। अगले दिन अर्थात् नवमी को नंदगांव के हुरियारे धोती-बगलबंदी पहन, चेहरे पर चंदन से चिते-पुते, माथे पर पगड़ी, कमर में फेंटा बांध ढफ-ढोल, नगाड़ा बजाते बरसाना पहुंचते हैं और होली के रसिया गाकर अपने आने की खबर देते हैं-

'रसिया आयो तेरे द्वार, खबर दीजौ,
यह रसिया पौरी में आयौ,
जाकी बांह पकर भीतर लीजौ।'

बरसाने के पुजारी तिलक लगाकर इनका स्वागत करते हैं। यहां के लाड़ली मंदिर में राधा-कृष्ण के प्रतिनिधियों के दो खेमे बन जाते हैं। उड़ते गुलाल व बरसते रंग के बीच दोनों पक्षों की ओर से रसिया व पदों का गायन चलता रहता है। कई घंटों तक नाच-गान, हंसी-ठिठोली के बाद जब नंदगांव के हुरियारों का समूह रंगीली गली में आता है तो वहां लट्ठ लिए बरसाने की सजी-धजी हुरियारिनें (होरी की यारिनें) प्रतीक्षा में खड़ी मिलती हैं। सभी महिलाएं बरसाने के गोस्वामियों, पुजारी-पंडों की पत्नियां होती है, न कि बहन-बेटियां।

'हाथ लैके लठा सब सखियां चलीं, आज होरी मची रंगीली गली
ब्रजराज ने होरी रची, आज बरसाने धूम मची
पिचकारी चली रंगीली गली, आए मोहन शोर मची
प्यारी राधाजू इतते चली, लेके फूलन छरी रंगीली गली'

हुरियारे गाली गाकर हुरियारिनों को उकसाते हैं, रंग गुलाल डालने पर बदले में वे लाठियां बरसाने लगती हैं। साथ ही गाती जाती हैं-

'इन गलियन काम कहा तेरौ
मैं फारूंगी यार झगा तेरौ'

सबसे ज्यादा उत्साह उन हुरियारिनों में देखने को मिलता है जिन्हें पहली बार यह मौका मिलता है। जब कोई एक हुरियारिन थक जाती है तो कोई दूसरी आगे आकर लट्ठ बजाने लगती है। जमीन पर पंजे व घुटने के बल बैठे हुरियारे मेंढक की तरह फुदक-फुदककर यहां से वहां बचते-फिरते हैं। हालांकि हुरियारिनों के पति भी वहीं मौजूद होते हैं और संकेत देकर किसी हुरियार विशेष पर प्रहार करने व रोकने के लिए कहते हैं।

'लै रहे चोट ग्वाल ढालन पे, केसर कीच मली गालन पे
जिन हरियल बांस मंगाए हैं, चलन लगे चहुं ओर
फाग खेलन बरसाने आए हैं नटवर नंद किशोर'

यूं तो यह छद्मयुद्ध बहुत संभलकर खेला जाता है। लेकिन कभी-कभार किसी के सिर या शरीर के किसी हिस्से में चोट भी लग जाती है। यह देखकर आश्चर्य हो सकता है कि हम चोट या जख्म को धूल से बचाने का प्रयास करते हैं लेकिन यहां खून निकलते ही प्रभावित अंग पर जमीन से मिट्टी उठाकर लगा दी जाती है। ब्रजवासी मानते हैं कि **ब्रजरज (ब्रजभूमि की मिट्टी)** सर्व औषधि के समान है।

सबसे कमाल की बात यह है कि जब लट्ठमार होली संपन्न होती है तो हुरियारे उन्हीं हुरियारिनों के पैर छूते हैं जिनकी अभी लाठियां सह रहे थे, मानो क्षमा मांग रहे हों कि हंसी-ठिठोली में भी जो गाली निकल गई, उन्हें अपने हृदय से निकाल दें। हुरियारिनें भी हुरियारों के सिर पर हल्के-से लाठी छुआकर उन्हें जुग-जुग जीने का आशीष देती हैं। ऐसी स्थिति में दर्शक तो मानो भाव विभोर ही हो जाते हैं।

नंदगांव की होली: फिर अगले दिन, यानी फाल्गुन शुक्ल दशमी को यही दृश्य नंदगांव में उभरता है। अंतर केवल इतना होता है कि वहां हुरियारे बरसाने के होते हैं जो उन हुरियारिनों के पति हैं, जो बरसाने में लट्ठ चला रही थीं और हुरियारिनें होती हैं नंदगांव की, जो उन हुरियारों की पत्नियां होती हैं, जो बरसाने में ढाल से खुद को बचा रहे थे।

यहां हुरियारे श्रीराधा जी की ध्वजा लेकर पहुंचते हैं और उनका लक्ष्य होता है कि उसे सकुशल वापस लेकर जाएं। यहां भी नंदराय मंदिर में प्रेमभरी गालियों और पदों का गायन दोनों ओर से चलता है और फिर हुरियारे नंदराय मंदिर से उतरकर नीचे होली मैदान में आ जाते हैं। यहां हुरियारिनें गीत गाती हैं तो हुरियारे भी रसिया गाते हैं और रंग-गुलाल की बौछार में तड़ातड़ लाठियां बरसने लगती हैं।

'नैनन से मोहे गारी दई, पिचकारी दई, होरी खेली न जाए

काहे लंगर, लंगराई मोतें कीनी, केसर कीच कपोलन दीनी लिए गुलाल वो तो ठाढ़ो मुसकाए, होरी खेली न जाए'

रंगीली होली: अगले दिन रंगभरनी एकादशी को ब्रज के मंदिरों में इतना रंग बरसता है कि मंदिरों के आंगन में कई इंच तक रंग भर जाता है। गुलाल के बादल छा जाते हैं। जगह-जगह से सुनाई देता है

'आज बिरज में होरी रे रसिया, होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया'

वृंदावन के बांके बिहारी जी, राधावल्लभ जी, राधा रमण जी, मथुरा के द्वारिकाधीश जी, श्रीकृष्ण जन्मस्थान सहित समूचे ब्रज में होली की अद्भुत छटा के क्या कहने। वृंदावन में ठाकुरजी की सवारी निकलती है, गुलाल की बोरियां भी साथ होती हैं। कृष्ण, राधा व सखियों का स्वरूप बने बच्चे व पुजारी मुट्ठी या गमछे व रूमाल में गुलाल लेकर श्रद्धालुओं पर फेंकते हैं। सड़कों पर बच्चे परदेसियों (बाहर के दर्शक, श्रद्धालुओं) से खूब धमाचौकड़ी, ऊधम-उत्पात करते हैं। पिचकारियों से रंग डालकर दर्शकों-भक्तों को रंगों से तर कर देते हैं।

विधवाओं की होली: बीते कुछ वर्षों से वृंदावन के गोपीनाथ मंदिर में रंगभरनी एकादशी को एक खास तरह की होली की परंपरा शुरू हुई है, जिसमें विधवाएं होली खेलती हैं। बंगाल, ओडिशा व देश के अन्य इलाकों से सफेद वेशधारी विधवाएं मंदिर प्रांगण में एक- दूसरे पर रंग डालती हैं।

जिनका पूरा जीवन बेरंग हो गया हो, जब उनके कपड़े, चेहरे व बालों में रंग लगता है तो अधिकांशतः वे भावुक हो जाती हैं। इस परंपरा के शुरू होने से ब्रज की होली में एक नया रूप जुड़ गया है।

चौपई के जुलूस: होली के अवसर पर बरसाना, नंदगांव, वृंदावन, मथुरा के बाजारों में चौपई, स्वांग-तमाशों के जुलूस निकलते हैं। चौपई यानी चार पहियों पर खींचा जाने वाला नक्कारा। नक्कारे, ढफ, ढोल, झांझ, मंजीरे बजाते हुए छोटे-बड़े-बूढ़े सब गाते हैं-

'प्रेम रंग बरसो रे आज होरी में, श्याम रंग बरसो रे आज होरी में'

'होरी खेलन आयौ श्याम आज जाये रंग में बोरो री'

'म्हारी चुनरी बसंती रंगा दे रे म्हारा सांवरिया, मैं होरी तेरे संग खेलूंगी'

होलिका दहन: फाल्गुन पूर्णिमा की रात होलिका दहन भी ब्रज में विलक्षण ही है। ब्रज में कोसीकलां के पास दो गांव हैं- फालैन और जटवारी। दोनों गांवों में विशाल जलती होली के बीच से नंगे पांव एक पंडा निकलता है। यह होली में प्रह्लाद के जिंदा बच निकलने की कहानी की याद में होता है। फालैन में प्रह्लााद कुंड के पास जलती होली से निकलने वाला पंडा हफ्तों पहले से व्रत-अनुष्ठान शुरू कर देता है। 15 से 20 फीट व्यास के घेरे की होली जब पूरी तरह से धधकने लगती है और कई-कई फीट की लपटें उठने लगती हैं, तब पंडा माथे और कमर पर केवल एक गमछा पहनकर दौड़ता हुआ उसमें से निकल जाता है। यह इसलिए आश्चर्यजनक है कि, इतनी बड़ी जलती होली में इतना ताप होता है कि शरीर ढंके लोग भी झुलसने के डर से इसके करीब नहीं जाते। पंडा कोई तापरोधी लेप लगाकर होली में प्रवेश नहीं करता है और न ही आज तक इससे गुजरने वाले पंडे के शरीर के किसी अंग के झुलसने की कोई घटना हुई है।

वैसे तो होली संपूर्ण ब्रज के हर उस स्थान पर जलाई जाती है, जहां माघी पूर्णिमा को डांडा गाड़ा गया था। होलाष्टक के दौरान वहां काठ-कवाड़, उपले इकट्ठा किए जाते हैं और दहन के दिन उन्हें फूंक दिया जाता है। सुबह महिलाएं पूजन करती हैं और रात को होलिका दहन के समय गेहूं व चने की बालियों को उसमें भूनकर खाते हैं। ब्रज के तमाम परिवारों के घरों में भी होली जलाने का रिवाज है, वे अपने आसपास या मोहल्ले में जहां बड़ी होली जलती है, वहां से जलती होली से कोई जलता टुकड़ा लेकर आते हैं और उसी से अपने घरों में होली जलाते हैं।

धुल्हेड़ी व फूलडोल: चालीस दिन तक ब्रज में रंग-गुलाल का जो ऊधम-उत्पात रहता है, धुल्हेड़ी के दिन वह अपने चरम पर पहुंच जाता है। ब्रज के मंदिरों में तो इतना रंग-गुलाल उड़ता है कि मानो कीच सी मच जाती है। ब्रजवासी धुल्हेड़ी की शुरुआत होली की राख को अपने माथे पर लगाकर करते हैं। होली पर अपने से बड़ों के पैर छूने की शैली यह है कि चुटकी में गुलाल लेकर बड़े-बुजुर्गों के पैर में लगाया जाता है। कोई भी अपने बड़ों के गाल या माथे पर गुलाल नहीं मलता। हम उम्र एक दूसरे को चेहरे पर गुलाल व रंग लगाते हैं, गले

मिलते हैं। घरों में पति-पत्नी, देवर-भाभी-ननद, जीजा-साली, चाचा-मामा जैसे रिश्तों में उम्र का यदि कम फासला है तो गाढ़ा रंग घोलकर पूरा शरीर तर कर देने वाली होली होती है।

पास-पड़ोस के घर में कोई नई भाभी या जीजा है तो उसकी पूरी शामत आ जाती है क्योंकि उसे सताने के लिए तमाम देवर-ननद व सालियों की फौज जमा हो जाती है। मंदिर हो या सड़क, सारा हुड़दंग दोपहर तक समाप्त हो जाता है। शाम को मंदिरों में राधा-कृष्ण व ठाकुर जी के फूल शृंगार की विशेष झांकी सजाई जाती है, जिसे फूलडोल कहा जाता है।

दाऊजी का हुरंगा: अगले दिन द्वितीया को बलदेव स्थित दाऊजी मंदिर में दोपहर को मंदिर के पंडे-पुजारी का समाज जुटता है। एक ओर महिलाएं एक हाथ में रंग फेंकने की डोलची और दूसरे हाथ में कपड़ों से बने कोड़े लेकर तैयार रहती हैं तो दूसरी ओर उनके पति, देवर व संबंधी पुरुष पिचकारी लिए तैयार दिखते हैं। रसिया, गीत गायन चलता है। महिलाएं डोलची से रंग फेंकती हैं और कोड़े चलाती हैं और पुरुष केवल पिचकारी चलाते हैं। महिलाएं पुरुषों को कोड़ों के प्रहार से कितना भी परेशान करें, पर कोई भी पुरुष महिला के शरीर को छूता तक नहीं है, केवल उनके उपर रंग-गुलाल फेंका जाता है। यह आयोजन इतने वृहद् रूप में होता है कि इसे होली के स्थान पर **'हुरंगा'** कहा जाता है।

जाब-बठैन का हुरंगा: तीन दिन बाद पंचमी को ब्रज के छाता व कोसीकलां के बीच जाब-बठैन नाम के दो गांवों के लोग बठैन गांव के बलभद्र कुंड के पास मैदान में जमा होते हैं, महिलाओं के हाथ में लाठियां होती हैं और पुरुषों के हाथ में बबूल जैसी कंटीली झाड़ियों की डालें होती हैं। बलराम का रूप बनाए एक हुरियार हाथ में झंडा लिए रहता है, बाकी हुरियार उसे चारों ओर से घेरे रहते हैं। होली का रसिया गान होता है, महिलाएं लाठियां चलाकर झंडा छुड़ाने का प्रयास करती हैं और पुरुष बचाने का। अंततः महिलाएं झंडा छुड़ाने में सफल हो जाती हैं।

ऊमरी, मुखरई का चरकुला नृत्य: ब्रज के ऊमरी, मुखरई, रामपुर गांवों की महिलाएं अपने सिर पर 20-25 किलोग्राम वजन का चरकुला रखकर लोकनृत्य करती हैं। चरखे जैसे एक चक्र पर एक मटका, फिर चक्र, फिर मटका बड़े से छोटे क्रम में रखे होते हैं। इन पर दीपक सजे होते हैं। नृत्य करने वाली महिला अपने दोनों हाथों में भी लोटे पर दीपक लेकर नाचती है और कमाल ये है कि न तो कोई दीपक लुढ़कता है और न ही बुझता है। अब देश के अनेक स्थानों पर लोकनृत्य के आयोजनों में चरकुला नृत्य होता है।

ढफ धरि दे यार, गई पर की: इस तरह बसंत पंचमी को शुरू हुई ब्रज की होली करीब 45 दिन बाद चैत्र कृष्ण पंचमी को इन गीतों के साथ संपन्न होती है-

'ढफ धरि दे यार, गई पर की' और 'गयौ मस्त महीना फागुन कौ, अब जीवै सो खेले होरी-फाग' अर्थात् अपनी ढफली और साज रख दो और अगले वर्ष का इंतजार करो। फागुन का मस्त महीना तो अब खत्म हो गया, अब जो जीएगा, वही अगली होली खेलेगा।

ब्रज की होली में विशेष रूप से राधा-कृष्ण के प्रेम का रंग होता है। लोग यहां पर बिना अंगराग के, केवल अद्वितीय भावना के साथ होली मनाते हैं। यहां की होली में लोग गोपी-गोपाल के रूप में अपने आप को भगवान कृष्ण और राधा के साथ जोड़ते हैं और प्रेम का रंग उनके दिलों में भर देते हैं।

ब्रज की होली भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है और इसे पूरे देश और विदेशों में एक विशेष दर्शनीय स्थल के रूप में जाना जाता है। यहां के उत्सव में धर्म, संस्कृति और उत्साह का अद्वितीय संगम होता है, जो इसे विशेषों में भी विशेष बनाता है। ब्रज की होली एक रंगीन और उत्साहजनक महोत्सव है, जो भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। इसे न केवल खेलने का अवसर माना जाता है, बल्कि इसके माध्यम से लोग प्रेम और एकता की भावना को भी महसूस करते हैं। ब्रज की होली का महत्त्व अनूठा है और इसने प्रत्येक भारतीय के दिल में एक अलग जगह बनाई हुई है। ***

नाशिक रंगपंचमी उत्सव (रहाड़)

अभय मिश्रा
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, नाशिक

फाल्गुन कृष्ण पूर्णिमा से शुरू होने वाला होली का त्यौहार फाल्गुन कृष्ण पंचमी को समाप्त होता है। इन दिनों महाराष्ट्र के नाशिक क्षेत्र में रंगों के त्यौहारों का अधिक प्रचलन है। उत्सव के दौरान लोग एक-दूसरे पर रंग फेंककर और रंगीन पानी आदि छिड़ककर जश्न मनाते हैं। रंगपंचमी में सामान्य रंगों की जगह दुलेंडी का प्रयोग किया जाता है।

जैसे ही होली के बाद पांचवें दिन सूरज उगता है, नाशिक शहर किसी अन्य दिन के विपरीत एक शानदार दृश्य के लिए खुद को तैयार करता है। हलचल भरी सड़कों और ऐतिहासिक गलियों के बीच, रंगपंचमी की परंपरा सदियों के इतिहास और संस्कृति को एक साथ रंग और आनंद के ताने-बाने में पिरोती है। शहर को घेरने वाले रंगों के बहुरूप दर्शक में, नाशिक को परिभाषित करने वाली विविधता और सहजता का प्रतिबिंब है, जो रंग पंचमी को किसी अन्य ही तरह का उत्सव बनाता है।

होली के दूसरे दिन यानी धुलवाड़ी पर हर जगह रंग खेला जाता है। लेकिन नाशिक में रंगपंचमी की एक अलग परंपरा है। नाशिक में होली के पांचवें दिन रंग पंचमी खेलने की पेशवा परंपरा है। रंगपंचमी का पूरे नाशिक में उत्कंठा से इंतजार रहता है क्योंकि नाशिक की रंगपंचमी के दौरान नाशिक में पेशवा-युग की रहाड़ियां खुलती हैं। आइए जानते हैं नाशिक की रहाड़ संस्कृति का इतिहास....

पेशवाओं की रंगपंचमी

पेशवा काल में पुणे में रंगपंचमी मनाई जाती थी। इस समय नाशिक में सरदार मंडली पुणे में पेशवाओं के आदेश पर थी, इसलिए नाशिक में भी वही परंपरा शुरू की गई। यह रहाड़ी विकल्प इसलिए बनाया गया ताकि सभी लोग एक साथ रंगपंचमी मना सकें। नाशिक शहर में पेशवा काल की 7 रहाड़ियां हैं।

नाशिक में, रंगपंचमी को पूरे हर्षोल्लास के साथ रहाड़ी (रहाड़ी का अर्थ है पत्थर से निर्मित टैंक) पर खेला जाता है, पारंपरिक नृत्य किया जाता है, लोग एक-दूसरे पर रंग फेंककर और रंगीन पानी छिड़ककर उत्सव मनाते हैं, मिठाई वितरण, होली गीत और ढोल-ताशा रैली उत्सव के प्रमुख आकर्षण होते हैं।

पहले के समय में रहाड़ को पहलवानों के शक्ति प्रदर्शन का स्थान माना जाता था। इससे पहले रहाड़ी में कुश्ती मुकाबले भी हुए। कुश्ती दंगल के आयोजन के कारण ही रहाड़ शब्द प्रचलन में आया होगा और यही रहाड़ शब्द नाशिक के लोगों के मन में बस गया है। इसके अलावा केवल नाशिक में ही रहाड़ संस्कृति बची हुई है।

रहाड़ी क्या है?

रहाड़ी का अर्थ है पत्थर से निर्मित टैंक। यह रहाड़ लगभग बीस-पच्चीस फुट लंबी-चौड़ी, दस-बारह फुट गहरी होती हैं। इन मिट्टी से भरी हुई रहाड़ियों को रंगपंचमी की पूर्व संध्या पर खोदा जाता है। इनकी विधिपूर्वक पूजा की जाती है और इसमें रंग बनाए जाते हैं। रंगपंचमी के दिन ये रहाड़ियां रंगों से लबालब भर जाती हैं। रहाड़ियों में कूदने या किसी को उठाकर फेंकने में मजा आता है। इन रहाड़ियों में रंग को उबालकर डाला जाता हैं। तत्पश्चात इनकी विधिपूर्वक पूजा की जाती है और रंग खेलना शुरू किया जाता है। रंग इतना गहरा होता है कि एक बार आप इसमें पड़ जाएं तो कम से कम दो दिन तक नहीं उतरता। रहाड़ी में स्नान को धप्पा कहा जाता है। किनारे से रहाड़ी में कूदने या छलांक लगाने पर जब पानी किनारे के 20 से 25 लोगों के ऊपर से उड़ जाना, यही इस खेल का मजा है।

प्रत्येक रहाड़ में एक निश्चित रंग बनाया जाता है, यह रंग बनाना विभिन्न संस्थाओं, परिवारों को दिया जाने वाला सम्मान है।

दंडे हनुमान चौक की रहाड़ – रंग पीला

नाशिक के काजीपुरा पुलिस चौक इलाके में तीन सौ साल पहले पेशवा काल के दंडे हनुमान रहाड़ है। पहले यहां रंगपंचमी बैलगाड़ी पर बड़ी-बड़ी टिपों से, पानी की टंकी से मनाई जाती थी। लेकिन समय के साथ-साथ ये परंपरा बंद हो गई। उसके बाद रहाड़ खोदकर रंगपंचमी मनाई जाती है। इस रहाड़ी में पीला रंग बनाया जाता है। 200 किलो से ज्यादा फूलों को मिलाकर रंग बनाए जाते हैं।

शनि चौक की रहाड़ – रंग गुलाबी

पंचवटी क्षेत्र में शनि चौक स्थित रहाड़ पेशवा काल से ही प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में पेशवाओं के सरदार रहते थे। उस समय यह कुश्ती का बड़ा केंद्र था। कहा जाता है कि इस रहाड़ी की देखरेख

रास्ते सरदार करते थे। शनि चौक में शनि चौक मित्र मंडल और सरदार रास्ते अखाड़ा आज तक इस रहाड़ी की देखरेख कर रहे हैं। इस रहाड़ी का रंग गुलाबी है। रंगपंचमी के दिन दीक्षित परिवार के सदस्य रहाड़ी की पूजा करते हैं। रहाड़ी को ढकने के लिए सागौन की लकड़ी का उपयोग किया जाता है।

तांबट लेन की रहाड़ – रंग नारंगी

यह पेशवा काल की पत्थर निर्मित इमारत है। पिछले कई वर्षों से यह रहाड़ उपेक्षित थी। तांबट लेन के युवाओं ने एकजुट होकर इस रहाड़ को खोल दिया है। इस रहाड़ी का रंग नारंगी है। रंगपंचमी के दिन यहां के पांच परिवारों को पूजा का सम्मान दिया जाता हैं। रंग बनाने के लिए पलाश के फूल, तुलसी, चंदन का उपयोग किया जाता है। फूलों को कड़ाही में उबाला जाता है। इसके बाद पानी से भरे हुए रहाड़ में इसे मिलाकर रंग बनता है।

तिवंधा की रहाड़ – रंग पीला

तिवंधा चौक में बुधा हलवाई की दुकान के सामने यह पेशवाकालीन रहाड़ है। इस रहाड़ी का रंग पीला है। यह रंग फूलों से बनाया जाता है। जलगांवकर परिवार को रहाड़ी का सम्मान प्राप्त है। इस रहाड़ी में महिलाओं को अनुमति है। इस रहाड़ का आधा भाग महिलाओं के लिए और आधा भाग पुरुषों के लिए आरक्षित है।

दिल्ली दरवाजा चौक की रहाड़ – रंग नारंगी

गोदावरी नदी के किनारे पर गाडगे महाराज पुल के पास दिल्ली दरवाजा चौक में पेशवाकालीन रहाड़ है। इस रहाड़ी की खास बात पलास के फूलों से बना हुआ रंग है। इस रहाड़ी का रंग नारंगी है। इस रहाड़ी का रखरखाव और सम्मान तुरेवाले पंच मंडल द्वारा किया जाता है। इस रहाड़ी की परंपरा को जारी रखने के लिए आजाद सिद्धेश्वर दिल्ली दरवाजा मंडल की स्थापना की गई।

नाशिक रंगपंचमी की संस्कृति

रहाड़ों का जादू

रंग पंचमी का केंद्र रहाड़ों में स्थित है, जहां फूलों, पत्तियों और पारंपरिक सामग्रियों से तैयार किए गए प्राकृतिक रंग सावधानीपूर्वक तैयार किए जाते हैं। एक समृद्ध रंग बनाने के लिए बड़े पैन में यह फूल, पत्ते उबाले जाते हैं, ये रंग लंबे समय तक चलने का वादा करते हैं और आने वाले कई दिनों तक मौज-मस्ती करने वालों की त्वचा पर चिपके रहते हैं। जैसे ही नाशिकवासी निर्भीक उत्साह के साथ रहाड़ों में गोता लगाते हैं, वे सदियों पुराने अनुष्ठान का हिस्सा बन जाते हैं, जो सामुदायिक भावना के जीवित प्रदर्शन में अपनी विरासत से जुड़ते हैं।

इंद्रियों की एक सिम्फनी

हवा हल्दी और कुंकू की सुगंध से भर जाती है, जो सड़कों पर गूंजने वाली हंसी और संगीत की आवाज के साथ मिश्रित होती है। वैसे ही नाशिक रंगपंचमी के रंगों से जीवित हो उठता है, यह महज उत्सव से आगे बढ़कर एक संवेदी अनुभव बन जाता है जो आत्मा को छू जाता है। पारंपरिक ढोल की लयबद्ध थाप से लेकर रहाड़ों में दबे गन्ने के चिप्स के स्वाद तक, हर पल परंपरा और आनंद के सार से ओत-प्रोत होता है।

अतीत को संरक्षित करना, भविष्य को अपनाना

उल्लास के बीच, परंपरा और विरासत के प्रति गहरी श्रद्धा की भावना है। जैसा कि नाशिकवासी वैज्ञानिक अनुष्ठानों के साथ जल देवता का सम्मान करते हैं और रंगपंचमी के अवशेषों को प्राचीन जहाजों में दफनाते हैं, वे अपने पूर्वजों और अपनी संस्कृति की समृद्ध टेपेस्ट्री को श्रद्धांजलि देते हैं। फिर भी, भले ही वे अतीत को संरक्षित करते हैं, वे भविष्य को अपनाते हैं, आने वाली पीढ़ियों के लिए सदियों पुरानी परंपरा को नई ऊर्जा और जीवन शक्ति से भर देते हैं।

नाशिक की अनोखी फूल के आकार की, फूलों की माला जैसी दिखायी देती 'आभूषण मिठाई'

नाशिक अपने अंगूर, प्याज और वाइन सहित कई चीजों के लिए जाना जाता है, लेकिन एक मिठाई पकवान जो होली समारोह से पहले ध्यान आकर्षित करता है, वह अद्वितीय और रंगीन 'आभूषण मिठाई' या 'फूल मिठाई' है। आभूषण मिठाई एक उत्तम व्यंजन है जो फूलों की माला जैसा दिखता है। इसे फूलों के आकार की क्रिस्टलीकृत सिरप संरचना का उपयोग करके बनाया जाता है और चांदी के तारों से जोड़ा जाता है। यह स्वादिष्ट मिठाई नाशिक के खेड़गांव में तैयार की जाती है, जहां यह 70 वर्षों से अधिक समय से स्थानीय संस्कृति का हिस्सा रही है।

उपसंहार

पेशवा संस्कृति को गहराई से समाहित किए हुए, नाशिक में रंगपंचमी एक परंपरागत उत्सव है। यहां पेशवाओं की विरासत जीवित हो उठती है क्योंकि शहर भर में पुराने युग की याद दिलाने वाले रंग-बिरंगे गड्ढों, रहाड़ों को सावधानीपूर्वक तैयार किया जाता है। तिवंधा चौक से तांबट लेन तक, ये ऐतिहासिक सड़कें एक सम्मानित परंपरा की गवाह हैं जो साल-दर-साल नाशिकवासियों को आकर्षित करती रहती है।

नाशिक में रंगपंचमी सिर्फ एक त्यौहार से कहीं अधिक है। यह सामाजिक एकता और समुदाय का उत्सव है। जैसे ही हजारों नाशिकवासी उत्सव में भाग लेने के लिए एक साथ आते हैं, वैसे ही जाति, पंथ और उम्र की बाधाएं दूर हो जाती हैं और सभी में खुशी और अपनेपन की साझा भावना आ जाती है।

***

उत्तराखंड की पहाड़ी होली

आजाद सिंह चौहान
प्रबंधक
वसूली विभाग, देहारादून क्षेत्र

होली असत्य पर सत्य की, अधर्म पर धर्म की, अन्याय पर न्याय की विजय के प्रतीक के रूप में मनाया जाने वाला त्यौहार है। यह त्यौहार मुख्य रूप से हिंदू समुदाय द्वारा मनाया जाता है, लेकिन वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के कारण इसमें बदलाव देखा जा रहा है और अन्य धर्मों के लोग भी इस त्यौहार का आनंद लेते हैं। यह त्यौहार फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष को मनाया जाता है। चूंकि भारत गांवों का देश है और मुख्य रूप से कृषि ही इसकी पहचान रही है, उस दृष्टि से भी होली का एक अलग महत्त्व है क्योंकि यह बुआई के मौसम की शुरुआत और सर्दियों के समापन का भी प्रतीक है।

उत्तराखंड में होली:

देवभूमि के नाम से प्रसिद्ध उत्तराखंड, हिमालय की तलहटी में एक दिव्य स्थान है। यह भारत के प्राचीन इतिहास और संस्कृति का एक बड़ा खजाना रहा है। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जहां बड़ी संख्या में संतों और महान हस्तियों ने यहां तपस्या की। इसी श्रृंखला में उत्तराखंड देश की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता को आगे बढ़ा रहा है और सभी त्यौहारों को अत्यंत उत्साह और उल्लास के साथ मनाता है। यही बात होली के उत्सव के साथ भी लागू होती है । कठिन पहाड़ी इलाका होने के कारण, यह राज्य प्रशासनिक दृष्टि में दो भागों में विभाजित है : गढ़वाल मंडल और कुमाऊं मंडल।

राज्य के इन दोनों हिस्सों में होली मनाने का तरीका भी काफी अलग है और खासकर कुमाऊं की होली तो देशभर में काफी मशहूर है। यह इस कारण भी हो सकता है कि राज्य के इस हिस्से में मैदानी क्षेत्र होने के कारण देश के शुरुआती चरण में अपेक्षाकृत आसानी से सड़क और रेल जुड़ाव का पहुंचना शामिल है।

कुमाऊंनी होली:

इस क्षेत्र मे बहुत ही अद्भुत तरीके से इस होली पर्व को मनाया जाता है जो कि लगभग एक महीने तक चलता है । इसकी कुछ झलकियां यहां प्रस्तुत हैं:-

बैठकी होली:

यह बसंत पंचमी के दिन से शुरू होती है और फाल्गुन महीने

के अंत तक चलती है। लोग एक जगह पर इकट्ठा होते हैं और बैठकर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और कुमाऊंनी लोक संगीत गाते हैं। इन गीतों के गायन में समय का बहुत महत्त्व है और कुमाऊंनी लोगों द्वारा इसका अनुशासन के साथ पालन किया जाता है। उदाहरण के लिए 'भीमपिलासु', 'पिलु' जैसे राग और गीत दोपहर में गाए जाते हैं जबकि 'यमन' और 'समकल्याण' शाम को गाए जाते हैं।

खड़ी होली:

'नोकदार टोपी', 'चूड़ीदार पायजामा' और 'कुर्ता' जैसी पारंपरिक कुमाऊंनी पोशाक पहने युवा शास्त्रीय संगीत गाते हैं और खड़े होकर कुमाऊंनी लोक नृत्य करते हैं। 'ढोल', 'हुरका' जैसे पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्र वातावरण को उत्साह और उल्लास के सकारात्मक स्पंदनों से भर देते हैं।

महिला होली:

यह बैठकी होली के समान ही है लेकिन यहां सभा में पूरी तरह महिलाएं शामिल होती हैं और स्थानीय फाल्गुन गीत गाते हुए होली मनाती हैं।

चीर बंधन एवं चीर दहन:

चीर बंधन और चीर दहन का कुमाऊं में विशेष महत्त्व है, जिसमें लकड़ी पर कपड़ों को बांधा जाता है एवं इसे होलिका का रूप माना जाता है। जिस दिन खड़ी होली की शुरुआत होती है, उसी दिन इस चीर में प्राण प्रतिष्ठा की जाती है और इसके बाद इसकी रखवाली की जाती है और ऐसा इसलिए किया जाता है, क्योंकि होली में 'चीर हरण' की भी परंपरा है, जिसके अनुसार

यदि कोई व्यक्ति चीर का कोई टुकड़ा निकालकर नदी पार कर लेता है, तो उस गांव की होली बंद हो जाती है। बाद में होलिका दहन के दिन इस होलिका का दहन कर एक तरह से बुराई का नाश कर अच्छाई का राज कायम करने का प्रतीक माना जाता है।

गढ़वाल मंडल में होली:

गढ़वाल क्षेत्र विशिष्ट पहाड़ियों और कठिन भू-भाग वाले इलाकों से बना है, शायद यही कारण है कि यहां कई गांव हैं जो आज भी सड़क, बिजली, पेयजल, स्कूल, अस्पताल आदि जैसी बुनियादी सुविधाओं की प्रतीक्षा कर रहे हैं, इसी तरह इस क्षेत्र द्वारा विभिन्न त्यौहारों को मनाने के तरीकों को भी वह प्रसिद्धि व प्रचार नहीं मिला, जिसके वे हकदार थे और होली का उत्सव उनमें से एक है। मेरा जन्म इसी भू-भाग में हुआ और बचपन के कुछ शुरुआती वर्षों तक मैं यहीं के रीति-रिवाजों में पला-बढ़ा, इसलिए मैंने यहां की होली के उत्सव को मनाने के तरीके को जीवंत करने का प्रयास किया है ।

साझा ग्राउंड में एकत्र होना और टोली द्वारा गांव के प्रत्येक घर का दौरा करना:

सभी ग्रामीण, विशेष रूप से बच्चे, किशोर, युवा और वयस्क, गांव के सामान्य बहुउद्देशीय मैदान में इकट्ठा होते हैं और स्थानीय पारंपरिक और सांस्कृतिक गीतों और 'होली है' के नारों के साथ पारंपरिक लोक नृत्य करते हैं। इस उल्लासपूर्ण आनंद के दौरान सभी लोग एक-दूसरे के प्यार एवं स्नेह से रंगे हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि प्रत्येक गांव के अपने ढोल बाजगी और अन्य पारंपरिक वाद्य यंत्र होते हैं और ये वाद्य यंत्र पूरी होली मनाने की यात्रा के दौरान साथ होते हैं एवं आनंद प्रदान करते हैं।

इसके बाद, यह 'टोली' पहले घर से शुरू होती है और गांव के आखिरी घर तक जाती है, जहां उनका गर्मजोशी से स्वागत किया जाता है और मिठाइयां, गुजिया, विभिन्न दालों से बने पारंपरिक चिप्स, जिन्हें 'सकुई' कहा जाता है, मदिरा और कुछ पैसे दिए जाते हैं जिसे 'चंदा' कहा जाता है। यह चंदा छोटे बच्चों को उनके अदम्य जोश और उल्लास के साथ गाने, वाद्य यंत्रों को बजाने और बड़ों के साथ होली के पर्व को हर्ष एवं उल्लास से मनाने के लिए प्यार से दी जाने वाली भेंट है। यह टोली प्रत्येक घर के परिसर में पारंपरिक लोक नृत्य करती है । इस उत्सव का सबसे सुंदर और आश्चर्यजनक हिस्सा यह है कि भले ही कुछ लोगों के बीच मतभेद हो, लेकिन वे इस दिन सब भूल कर एक-दूसरे के गले लग कर प्यार और स्नेह से दोस्त बन जाते हैं।

प्रसिद्ध 'तांदी' नृत्य:

जब टोली सभी घरों का दौरा पूरा कर लेती है तो वे फिर से उसी मैदान में इकट्ठा होते हैं और क्षेत्र का प्रसिद्ध 'तांदी' लोक नृत्य करते हैं। अंत में सबसे एकत्र किया गया पैसा बच्चों को दिया जाता है और वे अपने लिए मिठाइयां और अन्य खाद्य पदार्थ खरीदते हैं और शाम को इसका आनंद लेते हैं। इस दौरान संपूर्ण वातावरण पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्रों जैसे 'ढोल', 'दमाऊं', 'रणसिंगा' आदि से निकलने वाले स्फूर्तिदायक और उत्साहपूर्ण कंपन से भर जाता है। इस समय आसपास के वातावरण की आभा हमारी संस्कृति और सभ्यता की एक सच्ची और मंत्रमुग्ध कर देने वाली झलक प्रस्तुत करती है।

महिला तांदी नृत्य:

शाम को, स्नान आदि करने और रात का खाना खाने के पश्चात, सभी ग्रामीण, विशेष रूप से महिलाएं, परंपरागत वेश-भूषा और आभूषणों के साथ तैयार होकर एक निश्चित जगह में इकट्ठा होते हैं और पारंपरिक लोकगीत गीत गाते हुए 'तांदी' नृत्य करते हैं।

इस प्रकार इस हिमालयी राज्य 'देवभूमि' में होली का पावन पर्व मनाया जाता है। आज के समय में जब इन पहाड़ी इलाकों में आजीविका की लेख के आरंभ मे उल्लिखित बाधाओं के कारण बड़े पैमाने पर पलायन देखा जा रहा है, लेकिन फिर भी हर कोई यह सुनिश्चित करने की कोशिश करता है कि वह जहां भी रह रहा है, लेकिन होली के इस पावन पर्व को वह अपने गांव में इसी पारंपरिक शैली के साथ मनाएगा और भला ऐसा हो भी क्यूं न यह होली मनाने का अपने आप में अनूठा और अनोखा तरीका है।

***

काशी की मसाने की होली

प्रभात कुमार भारती
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी

काशी, जिसे वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय संस्कृति और धर्म का एक प्रमुख केंद्र है। इस पवित्र शहर में बहुत से त्यौहार धूमधाम से मनाए जाते हैं, जो उसकी समृद्ध और प्राचीन संस्कृति को दर्शाते हैं। सनातन धर्म में होली के पर्व का विशेष महत्व है और पूरे देश में होली का उत्सव काफी उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जाता है। अलग-अलग राज्यों में होली का पर्व विभिन्न अंदाज में मनाया जाता है। इसी भावना के साथ, होली का त्यौहार भी काशी में एक अद्वितीय रूप में मनाया जाता है, जिसे मसाने की होली कहा जाता है।

बनारस की मसान की होली को 'चिता भस्म होली' भी कहा जाता है। यह एक अनोखी और प्राचीन परंपरा है। काशी में यह परंपरा कई वर्षों से चली आ रही है। ऐसा माना जाता है कि मृत्यु पर शोक मनाने के बजाय, मृत्यु को जीवन का एक चक्र मानकर मनाया जाना चाहिए। मसान की होली भगवान शिव को समर्पित है, जो मृत्यु के देवता भी हैं। काशी की मसान की होली एक अद्वितीय और अद्भुत त्यौहार है जो हर साल होली के दिन मनाया जाता है। यह त्यौहार मृत्यु पर विजय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।

वाराणसी में हजारों वर्षों से विश्व प्रसिद्ध चिता की भस्म से अनोखी होली खेली जाती है जो मसाने की होली के नाम से जानी जाती है और पूरे विश्व में केवल काशी में ही खेली जाती है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान शिव ने मसान की होली की शुरुआत की थी। ऐसा माना जाता है कि रंगभरी एकादशी के दिन भगवान शंकर माता पार्वती का गौना कराने के बाद उन्हें काशी लेकर आए थे, तब उन्होंने अपने गणों के साथ रंग-गुलाल से होली खेली थी। इसी परंपरा की कड़ी में रंगभरी एकादशी को श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर परिसर के महंत आवास से गर्भ ग्रह तक रजत प्रतिमा की पालकी निकाली जाती है ढोल, नगाड़ों और संगीत के बीच हर हर महादेव के उद्घोष के साथ उत्सव मनाया जाता है । लेकिन वे श्मशान में बसने वाले भूत, प्रेत, पिशाच, यक्ष गंधर्व, किन्नर जीव-जंतु आदि के साथ होली नहीं खेल पाए थे। इसलिए रंगभरी एकादशी के एक दिन बाद भोले शंकर ने स्वयं ही श्मशान में रहने वाले भूत-पिशाचों के साथ आकर चिता भस्म होली खेली थी। तभी से काशी विश्वनाथ में मसान की होली खेलने की परंपरा चली आ रही है ।

काशी में मसान की होली दो घाटों मणिकर्णिका घाट और हरिश्चंद्र घाट पर खेली जाती है। काशी के मणिकर्णिका घाट पर जलती चिताओं के बीच पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र के शास्त्रीय गायन 'खेले मसाने में होरी दिगंबर, खेले मसाने में होरी' की धुन पर जहां साधु, संन्यासी, तांत्रिक, अघोरी सहित काशीवासी श्मशान में होली खेलते हैं। यह काशी का वह घाट है जहां चिता की आग कभी शांत नहीं होती लेकिन साल में एक ऐसा भी दिन आता है जब काशी के लोग यहां आकर इन चिताओं की राख से होली खेलते हैं। काशीवासी रंग भरी एकादशी के दूसरे दिन यहां आकर बाबा श्मशान नाथ की आरती के बाद चिता की राख से होली शुरू करते हैं। ढोल और डमरू के साथ यह श्मशान हर हर महादेव के उद्घोष से गुंजायमान हो जाता है और श्मशान घाट पर चिता भस्म से होली खेली जाती है। कहा जाता है कि इस होली के खेलने वाले शिवगणों के साथ भगवान शिव स्वयं होली खेलते हैं और इस राख से तारक मंत्र प्रदान करते हैं।

मसान की होली देखने और खेलने वालों भक्तों में 'मसाने की होली' खेलने का एक अलग ही उत्साह देखने को मिलता है। चिताओं की ऊंची-ऊंची लपटों के बीच भक्त चिताओं की राख, भस्म और गुलाल से होली खेलते हुए आनंद लेते हैं। ये नजारें और दृश्य काशी को अलग ही पहचान दिलाते हैं, इसके साथ यह संदेश भी देते हैं कि जिंदगी जब तक हैं उसको जिंदा दिली के साथ जियो। इस होली की प्रसिद्धि का अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि अनेक देशों के पर्यटक भी इस अनूठे त्यौहार का आनंद लेने के लिए काशी आते हैं।

***

हिमाचल प्रदेश में 'टीहरा' की होली

पूनम कुमारी
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, शिमला

बसंत के आगमन के साथ ही फाल्गुन माह में मनाया जाने वाला रंगों का उत्सव होली प्रकृति के साथ-साथ हमारे जीवन में भी एक नई उमंग, उत्साह और तरंग लेकर आता है। चारों ओर अबीर-गुलाल के रंगों और मस्ती से सराबोर करने वाले इस उत्सव का सभी लोगों को बेसब्री से इंतजार रहता है और इस रंग-बिरंगी होली की यह परंपरा दशकों या सदियों से नहीं, बल्कि युगों से चली आ रही है। होली हमारे देश का प्रमुख त्यौहार है जिसे अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग स्वरूपों में मनाया जाता है। **हिमाचल प्रदेश** में भी होली मनाने की बहुत ही प्राचीन परंपरा रही है और यह यहां भी उतने ही जोश और उत्साह के साथ मनाई जाती है जितनी की कहीं और। हिमाचल अपनी बर्फ से ढकी चोटियों, हरी-भरी घाटियों और अपने मंत्रमुग्ध कर देने वाले दृश्यों के लिए जाना जाता है, लेकिन बहुत से लोग यह नहीं जानते कि यह अपनी होली के लिए भी लोकप्रिय है।

सुजानपुर का राष्ट्र स्तरीय होली उत्सव:

होली हमारे देश के प्रमुख त्यौहारों में से एक है जिसका कई राज्यों में अपना अलग ही रूप है। हिमाचल प्रदेश में सुजानपुर टीहरा की होली भी जग प्रसिद्ध है। सुजानपुर टीहरा जिला हमीरपुर का सबसे सुंदर एवं आकर्षक स्थान है। इस नगर की स्थापना का कार्य सन् 1761 ई. में कटोच वंश के राजा घमंड चंद ने शुरू किया था। इसे पूरा करने का श्रेय उनके पोते राजा संसार चंद को जाता है। ब्यास नदी के बाएं तट पर स्थित नगर की सुंदरता को देखते हुए राजा संसार चंद ने इसे राजधानी बनाने का निर्णय लिया था। देश के विख्यात कलाकार, विद्वान और सुयोग्य व्यक्ति यहां लाकर बसाए गए। तभी से सुजान व्यक्तियों की सुंदर बस्ती सुजानपुर कहलाने लगी।

सुजानपुर बस स्टैंड से लगभग तीन किलोमीटर दूर स्थित एक ऊंची पहाड़ी पर 'टीहरा' नामक जगह पर राजा का किला है। इस किले के प्रवेश द्वार पर दोनों ओर बैठे हुए हाथियों की कलाकृतियां बनी हुई हैं और बड़े आकार की दो खिड़कियों से ब्यास नदी को देखने से मन प्रफुल्लित हो जाता है।

राजा संसार चंद ने अपने शासनकाल में सन् 1775 से सन् 1823 ई. के दौरान सुजानपुर टीहरा में अनेक भव्य भवनों एवं मंदिरों का निर्माण करवाया। उनके शासन काल में कांगड़ा की चित्रकला काफी फली-फूली। यहां के सुंदर मंदिरों की दीवारों पर कांगड़ा कलम के मनोहारी चित्र आज भी देखने को मिलते हैं। नर्वदेश्वर मंदिर इस बेहतरीन चित्रकला का साक्षात् गवाह है। मंदिर के चारों कोनों पर सूर्य, गणेश, दुर्गा तथा लक्ष्मी-नारायण के छोटे-छोटे मंदिर बने हुए हैं।

कटोच वंश के राजाओं की सेनाएं सुजानपुर टीहरा के चौगान मैदान में अभ्यास करती थीं। मैदान के एक कोने में राजा संसार चंद ने शिखर शैली में मुरली मनोहर मंदिर बनवाया। होली मेले का मुरली मनोहर मंदिर से बहुत गहरा नाता है। इस मंदिर में राजा एवं रानी स्वयं पूजा किया करते थे और इसके दक्षिण में कटोच वंश की कुलदेवी चामुंडा देवी का मंदिर है। राजा संसार चंद ने होली के पर्व को ब्रज होली की तरह लोक उत्सव का स्वरूप प्रदान किया था।

सुजानपुर के होली मेले का इतिहास लगभग 300 वर्ष पुराना है। राजा संसार चंद ने सुजानपुर के चौगान में सन् 1795 ई. में प्रजा के साथ पहली बार राजमहल में तैयार खास तरह के गुलाल से तिलक होली खेली थी। अब यहीं होली मेला लगता है और होली की शुरूआत मुरली मनोहर मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण और राधारानी को गुलाल लगाकर होती है। मंदिर के अंदर बेहतरीन नक्काशी की गई है। इस मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण ने उलटी दिशा में मुरली पकड़ी है।

कुल्लू की होली:

हिमाचल प्रदेश का कुल्लू जिला जहां अपनी देव संस्कृति के लिए देश दुनिया में प्रसिद्ध है। वहीं यहां होली का त्यौहार भी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। यहां खास बात यह है कि यहां पर होली का उत्सव बाकी जगह के होली उत्सव से एक दिन पहले ही समाप्त होता है।

कुल्लू में होली का आयोजन एक-दो दिन नहीं बल्कि 40 दिन तक चलता है। बसंत पंचमी में भगवान रघुनाथ के ढालपुर आगमन के बाद से ही कुल्लू की होली का आगाज होता है और इसके बाद लगातार भगवान रघुनाथ के दर पर होली गायन होता है। उस दिन से ही इस समुदाय के लोग एक दूसरे के घरों व मंदिरों में जाकर होली मनाते हुए गुलाल उड़ाते हैं और होली

के गीत गाते हैं। उसके बाद जब होली को आठ दिन शेष रहते हैं तो उस दिन से इस समुदाय की होली में होलाष्टक शुरू होते हैं। जिसमें इस समुदाय के लोग रघुनाथ को हर दिन गुलाल लगाते हैं और आठवें दिन होली का उत्सव मनाया जाता है।

कुल्लू में बैरागी समुदाय के लोग एक अनोखी होली परंपरा को संजोए हुए हैं। इस समुदाय के लोग अपने से बड़ों के मुंह और सिर में गुलाल नहीं लगाते, बल्कि वे रिश्तों की मर्यादाओं का सम्मान करते हुए बड़ों के चरणों में गुलाल फेंकते हैं और बड़ी उम्र के लोग अपने से छोटे व्यक्तियों के सिर पर गुलाल फेंक कर उन्हें आशीर्वाद प्रदान करते हैं, जबकि हम-उम्र के लोग एक दूसरे के गालों पर गुलाल लगाते हैं और इस उत्सव को मनाते हैं।

बसंत पंचमी के अवसर पर जब भगवान रघुनाथ की रथ यात्रा रघुनाथपुर से निकलती है तो वहां से हनुमान का वेश धारण किए हुए बैरागी समुदाय का व्यक्ति लोगों पर गुलाल डालना शुरू कर देता है। इसके बाद पैदल रथ यात्रा ढालपुर मैदान पहुंचती है और रथ में विराज कर भगवान रघुनाथ अपने अस्थायी शिविर पहुंचते हैं। इस रथ को लोगों द्वारा रस्सियों से खींचकर अस्थायी शिविर तक लाया जाता है। इस दौरान जिस पर भी यह गुलाल गिरता है, वह शुभ माना जाता है। इसके बाद भगवान रघुनाथ की पूजा अर्चना होने के बाद भगवान रघुनाथ से लोग आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और शाम को रघुनाथ जी वापस रघुनाथपुर चले जाते हैं।

मंडी में माधोराव संग होली:

छोटी काशी के नाम से विख्यात मंडी जिले में होली का त्यौहार बड़े ही उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। मंडी में होली के पर्व में राज देवता माधोराय की भागीदारी रहती है और यहां लोग माधोराय अर्थात् श्रीकृष्ण के साथ होली खेलते हैं। इस अवसर पर माधोराय की जलेब निकाली जाती है जिसमें पूरे मंडी शहर के साथ-साथ आसपास के गांवों के लोग भी शामिल होते हैं। यह आस्था और आनंद का आयोजन दिन भर चलता रहता है। मंडी जिले में होली का मेला होली के एक दिन पहले शुरू हो जाता है और पूरे दो दिन तक चलता है।

मंडी की होली राजा और प्रजा के बीच आपसी सद्भाव और सौहार्द का प्रतीक भी है। मंडी की होली देश में मनाई जाने वाली होली से एक दिन पूर्व मनाई जाती है। मंडी की होली की खासियत यह है कि यहां अजनबियों पर रंग नहीं डाला जाता, बिना जान पहचान के किसी पर रंग नहीं डालते हैं।

पुराने जमाने में मंदिर के प्रांगण में पीतल के बड़े बर्तनों में रंग घोला जाता था और राजा अपने दरबारियों के साथ मंदिर के प्रांगण में होली खेलते थे। साथ ही राजा घोड़े पर सवार होकर प्रजा के बीच भी होली खेलने जाते थे। उस समय स्थानीय स्तर पर प्राकृतिक रंगों की महक से होली की रंगत सराबोर होती थी। होली की यह मस्ती मंडी में माधोराय की जलेब निकलने के पश्चात समाप्त हो जाती है।

सांगला की होली:

होली भारत में सबसे पसंदीदा त्यौहारों में से एक है। देश में प्रत्येक होली उत्साह और जोश के साथ मनाई जाती है। इस त्यौहार को कई राज्य अपने-अपने तरीके से मनाते हैं और दुनिया भर से कई लोग होली मनाने के लिए विभिन्न राज्यों में जाते हैं।

किन्नौर एक ऐसा क्षेत्र है जो अपने अनोखे अंदाज में होली मनाने के लिए मशहूर है। होली उत्सव का सटीक स्थान किन्नौर में सांगला घाटी है। यह बसपा नदी के तट पर स्थित एक खूबसूरत घाटी है और इसलिए इसका दूसरा नाम बसपा घाटी भी है। उच्च हिमालय से घिरी यह घाटी मंदिरों और स्मारकों के लिए जानी जाती है लेकिन इस जगह की होली के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं, इस त्यौहार के दौरान पूरी घाटी रंगों से जगमगा उठती है। अन्य स्थानों के विपरीत, यहां होली फागुली उत्सव के रूप में मनाई जाती है। फागुली उत्सव चार दिनों तक मनाया जाता है। उत्सव के तीसरे दिन होली मनाई जाती है। पहले दिन समारोह सांगला घाटी के मुख्य मंदिर नाग मंदिर में आयोजित किया जाता है।

रंगों के साथ होली मनाने के अतिरिक्त, यहां होली का त्यौहार संगीत, स्थानीय शराब, नुक्कड नाटक और पारंपरिक नृत्य के साथ मनाया जाता है। उत्सव के तीसरे दिन की शुरुआत पुरुषों द्वारा रामायण पर आधारित नाटक प्रस्तुत करने से की जाती है। वे पात्रों की वेशभूषा धारण कर कुछ करतब दृश्यों का अभिनय करते हैं। एक पूरी परेड का आयोजन होता है जिसमें नाटक प्रस्तुत किए जाते हैं और जुलूस के एक भाग के रूप में एक विशेष पारंपरिक मदिरा स्वतंत्र रूप से परोसी जाती है। यहां के निवासी इस दिन एक विशेष भोजन भी तैयार करते हैं जिसमें चिलड़ा नामक स्थानीय रोटी भी शामिल होती है। इस दिन का मुख्य आकर्षण है कि लोग बर्फ और सूखे रंगों से होली खेलते हैं। इस दिन लोग लोक नृत्य करने के साथ लोक गीत भी गाते हैं और पूरी घाटी को रंगों से रंग देते हैं। फागुली के आखिरी दिन, लोग अपने पारंपरिक परिधान पहनते हैं और घाटी के तीन स्थानीय देवताओं के साथ पारंपरिक नृत्य करते हैं।

इस प्रकार हिमाचल की वादियों में होली प्रकृति और मानव के बीच के रिश्तों को सार्थकता प्रदान करते हुए प्रकृति और मानवीय उल्लास के रंगों से सराबोर रहती है।

***

मेधावी विद्यार्थी सम्मान

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत शहर

दिनांक 26 फरवरी, 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय सूरत शहर द्वारा बैंक की बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत वीर नर्मदा दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत में आयोजित 55वें वार्षिक दीक्षांत समारोह में शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के एम.ए (हिंदी) (अंतिम वर्ष) में पुरुष एवं महिला वर्ग में सर्वाधिक अंक अर्जित करने वाले दो विद्यार्थियों क्रमशः श्री मितेशभाई श्रवणभाई राथड और सुश्री प्रियंका कुमारी सुमनभाई गामित को सम्मान राशि एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस समारोह में गुजरात राज्य के राज्यपाल व वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय के चांसलर माननीय आचार्य देवव्रत, माननीय कुलपति डॉ किशोरसिंग एन. चावडा, रजिस्ट्रार डॉ. रमेशदन गढ़वी, मुख्य अतिथि के रूप में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्री ऋषिकेशभाई पटेल एवं शिक्षा राज्य मंत्री श्री प्रफुलभाई पनसेरिया, विभागों के विभागाध्यक्ष, क्षेत्रीय कार्यालय सूरत शहर से मुख्य प्रबंधक श्री विवेक कुमार (आरबीडीएम) एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे

क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे शहर एवं सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना और प्रयोजन मूलक हिंदी एवं सोशल मीडिया विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत एम.ए. हिंदी के अंतिम वर्ष में प्रथम स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में सुश्री ऋषिका सुनिल सिंह एवं श्री ज्ञानेश्वर रामराव पवार को प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग प्रमुख प्रो. विजय कुमार रोड, क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे शहर की उप क्षेत्रीय प्रमुख सुश्री गरिमा सिन्हा एवं सभी विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्हापुर

दिनांक 10 जनवरी, 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्हापुर एवं शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के संयुक्त तत्वावधान में बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह एवं विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। श्री पलनीवेल एस. के., क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा विश्वविद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों को निर्धारित राशि के चेक एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, मेरठ

दिनांक 27 मार्च, 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, मेरठ द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री हरीश कुमार अरोड़ा, क्षेत्रीय प्रमुख, मेरठ क्षेत्र तथा श्री अनुज चित्रांश, उप क्षेत्रीय प्रमुख ने बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के तहत शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए एम. ए (हिंदी) में महिला वर्ग में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली विद्यार्थी सुश्री कुमारी श्वेता, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ को सम्मानित किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, जोरहाट

दिनांक 18 मार्च, 2024 को जोरहाट क्षेत्र के मणिपुर विश्वविद्यालय में ''मेधावी विद्यार्थी सम्मान कार्यक्रम'' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महिला वर्ग में सुश्री लोङ्गजम रेस्तिना देवी एवं पुरुष वर्ग में श्री के. सी. एच. अदाम को सम्मान राशि का चेक तथा प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर एम. ए. के छात्र-छात्राओं हेतु आशुभाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून

दिनांक 12 जनवरी, 2024 को ''बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना'' के अंतर्गत देहरादून क्षेत्र से संबद्ध हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में श्री नेत्र मणि, क्षेत्रीय प्रमुख और श्री मनोहर लाल शर्मा, अध्यक्ष, प्रबंध समिति बी एस एम पी जी कॉलेज व श्री ममतेश शर्मा, उपाध्यक्ष ने विद्यार्थियों को सम्मान राशि के चेक और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

मेधावी विद्यार्थी सम्मान

क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली

दिनांक 15 फरवरी, 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली द्वारा महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली के 49वें स्थापना दिवस समारोह में बैंक की ''बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना'' के अंतर्गत वर्ष 2022-23 हेतु विश्वविद्यालय के दो विद्यार्थियों (महिला-पुरुष) को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि श्री आकाश सक्सेना, विधान सभा सदस्य, उत्तर प्रदेश एवं श्री के.पी. सिंह, कुलपति, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली तथा बरेली शहर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री संदीप कुमार उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 10 जनवरी, 2024 को बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल में क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा ''बड़ौदा मेधावी सम्मान कार्यक्रम'' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के एम.ए. हिंदी (अंतिम वर्ष) में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले दो विद्यार्थियों श्री संजय कुमार श्यामले और सुश्री श्रद्धा तिवारी को क्षेत्रीय प्रमुख, भोपाल क्षेत्र श्री अखिलेश कुमार तथा अध्यक्ष तुलनात्मक साहित्य विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय डॉ अच्छे लाल द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अन्य संकाय सदस्य, अंचल राजभाषा प्रभारी तथा विद्यार्थी उपस्थित थे।

क्षेत्रीय कार्यालय, प्रयागराज - 1

दिनांक 20 मार्च, 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, प्रयागराज में आयोजित 'मेधावी विद्यार्थी सम्मान' कार्यक्रम में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के एम.ए. (हिंदी) के अंतिम वर्ष की परीक्षा में सर्वाधिक अंक अर्जित करने वाले शैक्षणिक वर्ष 2021-22 एवं शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के विद्यार्थियों को बैंक द्वारा चलाई जा रही बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत सम्मानित किया गया। मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रयागराज क्षेत्रीय प्रमुख श्री अरूण कुमार गुप्ता के कर कमलों से प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद - 1

दिनांक 16 जनवरी, 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा गुजरात विश्वविद्यालय के वर्ष 2022-23 के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के मेधावी विद्यार्थी सुश्री शेखसिपाही फ़रहीन फ़रीद भाई एवं श्री प्रजापति अमित कालुभाई को बैंक द्वारा सम्मानित किया गया। उक्त अवसर पर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्ष श्रीमति निशा रामपाल एवं सहायक प्रोफेसर श्री राजेन्द्र परमार सह कुल 90 विद्यार्थी उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री उज्ज्वल गोयल, मुख्य प्रबंधक (एसएमईएलएफ) ने मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, ग्वालियर

दिनांक 22 मार्च, 2024 को गुजराती बाजार शाखा में बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के स्नातकोत्तर (एम.ए.) हिंदी की अंतिम वर्ष की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर्ता विद्यार्थियों को बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान से सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

दिनांक 21 फरवरी, 2024 को, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में बैंक की बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत, विश्वविद्यालय के एम.ए. हिंदी के शैक्षणिक वर्ष 2022-23 (अंतिम वर्ष) में, शीर्ष अंक प्राप्त करने वाली विद्यार्थी सुश्री नगीना को प्रो. सच्चिदानंद शुक्ला, माननीय कुलपति, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, श्री संजीव कुमार मिश्रा, मुख्य प्रबंधक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, रायपुर क्षेत्र और श्री माधव कौशिक, साहित्यकार एवं अध्यक्ष, राष्ट्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के द्वारा सम्मानित किया गया। इस समारोह के आयोजन में उप महाप्रबंधक, नेटवर्क छत्तीसगढ़, भोपाल अंचल, श्री भरकुमार चावड़ा, क्षेत्रीय प्रमुख, श्री अमित बैनर्जी एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख, श्री दीपक मिश्रा ने मार्गदर्शन प्रदान किया।

याओसंग उत्सव - मणिपुर की होली

सुजाता एक्का
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, जोरहाट

होली रंगों और खुशियों का त्यौहार है। देशभर में अलग-अलग तरीकों से होली मनाई जाती है। चाहें मथुरा की लठ्ठमार होली हो या बनारस की चिता की भस्म से खेली जाने वाली मसाने होली हो। उत्तर-पूर्व में मणिपुर भी इस उदाहरण से अछूता नहीं है। मणिपुर भारत का एक ऐसा पूर्वोत्तर राज्य है जो अपनी प्राकृतिक खूबसूरती और पारंपरिक संस्कृति के लिए जाना जाता है। यह राज्य अपनी प्राकृतिक खूबसूरती, पारंपरिक संस्कृति और ऐतिहासिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। वनस्पतियों और जीवों की विविधताओं से भरपूर मणिपुर का अधिकतर हिस्सा पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहां विविध धर्मों के लोग रहते हैं जिनमें मुख्यता हिंदुओं की आबादी मिलती है। मणिपुर की होली को याओसंग कहा जाता है। अत: **''याओसंग''** शब्द का मतलब छोटी सी झोपड़ी होता है। **''याओसंग''** का त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। इस त्यौहार को लोग रंगों से खेलते हैं, एक-दूसरे को गले लगाते हैं और मिठाइयाँ बांटते हैं।

याओसंग का इतिहास कई सदियों पुराना है। मणिपुर का 5 दिवसीय होली त्यौहार, रंगों, संगीत और नृत्य का उत्सव है। इस त्यौहार में मणिपुरी संस्कृति और परंपराओं का जश्न मनाया जाता है। यह मणिपुर राज्य का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण उत्सव है, जिसे बसंत ऋतु में मनाया जाता है।

याओसंग कैसे मनाया जाता है?

याओसंग उत्सव होली के साथ ही मनाया जाता है। हालांकि, याओसंग उत्सव के दौरान, रंग खेलने के अलावा, उत्सव में पांच दिनों तक कई सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियां भी आयोजित की जाती हैं। इस दौरान मणिपुर में कई अनोखे रीति-रिवाज देखने को मिलते हैं, जिनमें झोपड़ी जलाने का रिवाज भी शामिल है। हर गांव में सूर्यास्त के बाद **याओसंग मेई थाबा** अर्थात् झोपड़ी जलाने के साथ याओसंग की शुरुआत होती है। अगली सुबह घर-घर जाकर बच्चों द्वारा चंदा वसूला जाता है जिसे **नकाथेंग** कहा जाता है। दूसरे एवं तीसरे दिन लड़कियां अपने नकाथेंग के लिए रिश्तेदारों के पास जाती हैं। चंदा इकट्ठा करने के लिए रस्सियों से सड़कों को अवरुद्ध भी किया जाता है। चंदे से जुटाई गई वस्तुओं और रुपये का उपयोग सामूहिक भोज में किया जाता है। यह नजारा पूरी मणिपुर घाटी में देखा जा सकता है।

अगले दिन लोग राधा-गोविंद मंदिर जाकर फगुवा गाते हैं एवं आपस में मिलते जुलते हैं। सभी आपस में होली खेलते हैं और एक-दूसरे पर रंग डालते हैं या छिड़कते हैं। रस्साकशी और सॉकर जैसे खेल भी आयोजित किए जाते हैं। विभिन्न प्रकार के स्थानीय व्यंजनों को पड़ोसियों के साथ साझा किया जाता है।

याओसंग के विभिन्न रिवाज :

याओसंग के दौरान झोपड़ी जलाने का रिवाज अर्थात् **याओसंग मेई थाबा** बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। ये रिवाज बिल्कुल उत्तर भारत के होलिका दहन से मिलता जुलता है। इसकी खास बात यह है कि इस झोपड़ी को बनाने के लिए जिन चीजों का इस्तेमाल किया जाता है उन्हें लगभग 14 वर्ष के बच्चे लोगों के घरों से चुरा कर लाते हैं। जलाने के लिए जो झोपड़ी होती है उसको बुराई का प्रतीक माना जाता है और इसे जलाकर लोग बुराई को दूर करते हैं।

याओसंग की एक विशेषता **थबल चोंगबा** अर्थात् चांदनी

में नृत्य है। थबल का अर्थ है चांदनी और चोंगबा का अर्थ है नृत्य। यह नृत्य हर मुहल्ले में पांचों दिन किया जाता है। विभिन्न स्थानों से पुरुष उत्सव स्थल पर आते हैं एवं महिलाओं का हाथ पकड़कर घेरे में नृत्य करते हैं।

वैश्विक स्तर पर खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व करने और खेल जगत में पदक दिलाने में मणिपुर राज्य के खिलाड़ियों की भूमिका हमेशा से उल्लेखनीय रही है। मणिपुर में प्राचीन काल से ही खेलों को लेकर सक्रियता रही है यही रीति मणिपुर की होली अर्थात् याओसंग के दौरान भी देखी जाती है । पांच दिवसीय होली के दौरान सभी मोहल्लों एवं गावों में विभिन्न प्रकार के खेलों का आयोजन किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इस दिन युवाओं द्वारा विभिन्न प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया जाता है। याओसंग के दौरान कुश्ती, बॉक्सिंग, तीरंदाजी, घुड़सवारी, तैराकी, फुटबॉल, मैराथन, रग्बी, साइकलिंग जैसे खेलों का आयोजन किया जाता है। इन खेलों में छोटे-छोटे बच्चे भी हिस्सा लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। याओसंग खेल उत्सव के

एक भाग में कुश्ती के पारंपरिक रूप जिसे मुकना भी कहा जाता है, में अपना कौशल दिखाते हैं ।

त्यौहार के आखिरी दिन, भक्त राज्य की राजधानी इम्फाल के मुख्य कृष्ण मंदिर की ओर जुलूस निकालते हैं। यहां भी विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियां होती हैं एवं जश्न मनाया जाता है। मणिपुर में होली अर्थात् याओसंग का अनूठा उत्सव देखने को मिलता है। भक्त पारंपरिक सफेद और पीले रंग के कपड़े पहनते हैं और कृष्ण मंदिरों में भक्ति गीत गाते हैं। मंदिर के सामने एक दूसरे के साथ गुलाल खेलते हैं और पूरी तरह से त्यौहार के आनंद में डूब जाते हैं। मणिपुर के लोग होली की तरह ही याओसंग उत्सव मनाते हैं। आज भी यह उत्सव यहां पूरी परंपरा, उल्लास एवं आध्यात्मिकता के साथ मनाया जाता है। मणिपुर के लोग सदियों से यह उत्सव मनाते आ रहे हैं एवं याओसंग उत्सव में अब भी यहां की परम्पराएं जीवंत हैं। होली का आध्यात्मिक मतलब क्या होता है, यहां आकार महसूस किया जा सकता है । ***

मेधावी विद्यार्थी सम्मान

क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद

दिनांक 17 फरवरी, 2024 को सरदार पटेल विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के तत्वावधान में क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद द्वारा सरदार पटेल विश्वविद्यालय में बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के तहत सम्मान समारोह का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय में एम.ए. (हिंदी) की अंतिम वर्ष की परीक्षा में प्रथम और द्वितीय स्थान अर्जित करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को सरदार पटेल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. निरंजन पी पटेल और वल्लभ विद्यानगर शाखा के मुख्य प्रबंधक श्री गगरिन जसवंतलाल बनर्जी द्वारा सम्मान राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर

दिनांक 15 फरवरी, 2024 को ''बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी'' सम्मान योजना के अंतर्गत देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के मेधावी विधार्थियों को सम्मानित किया गया। उक्त योजना के अंतर्गत इंदौर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री मुकेश आनंद मेहरा ने देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर की मेधावी छात्रा सुश्री दीपिका बगोरा को बैंक की ओर से स्मृति-चिह्न तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। उक्त अवसर पर इंदौर क्षेत्र के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री आशीष सोनी एवं क्षेत्र के आर.बी.डी.एम. श्री संजय पांडेय उपस्थित रहे।

आंध्र प्रदेश की मेदुरू होली

एस विवेकानंद राव
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

होली भारत के सुप्रसिद्ध त्यौहारों में से एक है। जिसका नाम सुनते ही हम सभी में एक उमंग की भावना जागृत हो जाती है। यह दिवाली के बाद देश में सबसे ज्यादा मनाए जाने वाले त्यौहारों में से एक है। हिंदू पौराणिक कथाओं में कहा गया है कि यह त्यौहार सतयुग से मनाया जाता रहा है। होली का अर्थ है अग्नि या अग्नि से पवित्र होना। होली को 'होलिका पूर्णिमा' के नाम से भी जाना जाता है। हर साल फाल्गुन माह की पूर्णिमा के दिन आने वाले इस त्यौहार को होली, कामुनि पुन्नामी आदि के नाम से जाना जाता है।

कहा जाता है कि राक्षस राजा हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु की भक्ति करता है। हिरण्यकश्यप को यह बात पसंद नहीं थी इसलिए उसने प्रह्लाद को मारने का निश्चय कर लिया था। वह अपनी बहन होलिका से कहता है कि प्रह्लाद को अपनी शक्ति से आग मे दहन कर दो। होलिका प्रह्लाद को अपनी गोद में बिठाकर अग्नि में कूद जाती है, परंतु प्रह्लाद विष्णु का भक्त होने के कारण उनके आशीर्वाद से बच जाता है भगवान और राक्षसी होलिका आग में जलकर भस्म हो जाती है। माना जाता है कि जिस दिन होलिका का दहन हुआ था उसी दिन को 'होली' कहा जाता है।

आंध्र प्रदेश में इस त्यौहार को मेदुरू होली के रूप में मनाया जाता है। सभी पारंपरिक संगीत और नृत्य करते हुए भगवान कृष्ण के भजन गाते हुए जुलूस निकालते हैं और आपस में एक दूसरे पर गुलाल डालने की विशिष्ट परंपरा को निभाते हैं। तेलुगु में होली को कामुनि पुन्नमि/ काम पूर्णिमा/ जाजीरी के नाम से भी जाना जाता है। होली त्यौहार को तेलुगु राज्यों में 10 दिन तक मनाया जाता है। इस त्यौहार में बच्चे जाजीरी लोक गीत गाकर, कोलाटम नामक नृत्य करते हुए लोगों से पैसे, चावल और लकड़ी आदि को इकट्ठा करते हैं। पवित्र पूर्व संध्या पर (यानी 9वें दिन) सभी लकड़ियों को एक साथ रखा जाता है और काम दहनम का प्रतिनिधित्व करते हुए आग लगा दी जाती है। अगली सुबह यानी 10वें दिन को होली के रूप में मनाया जाता है, जिसमें पारंपरिक रूप से मोदुगा/ गोगू फूलों से रंग निकाले जाते हैं। युवा सूखे रंगों से होली खेलते हैं और बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं।

आंध्र प्रदेश के कुछ प्रांतों में मेदुरू होली मनाई जाती है, जो बुराई पर अच्छाई की जीत और बसंत के आगमन का प्रतीक एवं जीवंत उत्सव है। सड़कों पर संगीत और नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है, जिसमें प्रतिभागी एक-दूसरे पर रंग फेंकते हैं। भगवान कृष्ण को समर्पित भक्ति गीत उत्सव में एक आध्यात्मिक आयाम जोड़ता है। बंजारा जनजाति क्षेत्र की समृद्ध संस्कृति का प्रदर्शन करते हुए, अपने अनूठे और सुंदर नृत्यों से उत्सव को और समृद्ध बनाते हैं। तेलंगाना के निजामाबाद जिले में होली के दिन गांव के लोग दो समूहों में बंट जाते हैं और एक दूसरे को मुक्के मारते हुए होली मनाते हैं। यह रिवाज लगभग 451 सालों से चला आ रहा है।

संक्षेप में कहें तो आंध्र प्रदेश में भी होली प्रेम और भाईचारे की सद्भावना से मनाई जाती है। होली बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। यह रंग-बिरंगा त्यौहार लोगों को एकजुट करता है और जीवन से सभी प्रकार की नकारात्मकता को दूर करता है।

***

केरल का मंजल कुळी

माया एस.
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, हुबली

होली शब्द सुनते ही रंग-बिरंगे चेहरे और रंगीले पानी से सराबोर लोगों का चित्र हमारी आंखों के सामने आ जाता है। वसंत ऋतु के आगमन पर मनाया जाने वाला होली का पर्व नयनों को इंद्रधनुषी रंगों का चित्र दिखाता है साथ ही मन में भी रंगों की उमंग जागृत कर देता है। वैसे उत्तर भारत में होली पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। उसको मनाने का तरीका भी अपने आप में अलग है। फिर भी सुदूर दक्षिण केरल में भी होली का त्यौहार कुछ क्षेत्रों में अपने तरीके से धूमधाम से ही मनाया जाता है। इसे यहां मंजल कुळी या उक्कुळी के नाम से मनाया जाता है।

गौड़ सारस्वत ब्राह्मण समुदाय (कोंकणी समुदाय) केरल में आकर सदियों से बस रहे हैं। कहा जाता है पहले ये लोग सरस्वती नदी के किनारे रहा करते थे और सरस्वती नदी के भूमि में अंतरलीन हो जाने पर गोवा और कर्नाटक के तटीय प्रदेशों में रहने लगे। यहां के कुछ लोग बाद में केरल में आए। यहां उन्होंने अपने मंदिर भी बनाए और अपने धार्मिक आचरणों का पालन करते हुए रहने लगे। इनका एक प्रसिद्ध मंदिर कोच्ची के पास मट्टांचेरी में कोचिन तिरुमला देवस्वम मंदिर है। यहां पर वेंकटाचलपति - विष्णु भगवान की पूजा अर्चना होती है।

कोच्चि के गौड़ सारस्वत ब्राह्मण पश्चिम कोच्चि के चेरलाई क्षेत्र में होली मनाते हैं। इसे स्थानीय रूप से कोंकणी में उक्कुली या मलयालम में मंजल (हल्दी) कुली कहा जाता है। शिवरात्रि के अगले दिन से अर्थात् माघ महीने की अमावस्या से फाल्गुन मास की पूर्णिमा तक, बच्चे होली की प्रत्याशा में शाम को एक साथ इकट्ठा होते हैं, खेलते हैं और नृत्य करते हैं। माघ अमावस्या के दिन, शिवरात्रि के बाद, कपड़े और घास से बना एक कृत्रिम पुतला (फोधो) समुदाय के कुछ कलाकारों की मदद से बनाया जाता है और मंदिर के पश्चिमी किनारे पर एक पीपल के पेड़ का तना छोड़ दिया जाता है, जब तक कि इसे उक्कुली के दिन हटा नहीं दिया जाता और जला नहीं दिया जाता है। फाल्गुन महीने की पूर्णिमा से ठीक पहले त्रयोदशी के पूर्वाह्न में, समुदाय के सदस्यों द्वारा दान किए गए दो सुपारी के पेड़ (एक पुरुष और एक महिला) लाए जाते हैं और मंदिर के पश्चिमी किनारे पर अस्थायी रूप से लगाए जाते हैं। मंदिर के अधिकारी ढोल पीटकर समुदाय को सुपारी के पेड़ों के आने की सूचना देते हैं और त्रयोदशी की मध्यरात्रि/ चतुर्दशी की सुबह को इसे जलाया जाता है, उसी को जलाते समय, समुदाय के सदस्यों को घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होती। इसे ही होलिका दहन कहा जाता है। चतुर्दशी सभी परिवारों के लिए एक उत्सव का दिन होता है। हर घर में एक दावत होती है, उसमें विशेष व्यंजन एवं पकवान बनाए जाते हैं। त्यौहार के तीसरे दिन अर्थात् पूर्णिमा के दिन, उक्कुली के दिन सुबह-सुबह, समुदाय के कई पुरुष और बच्चे उस स्थान पर इकट्ठा होते हैं जहां पुतला लटकाया गया है, इसे नीचे लाते हैं और फिर इसे उन जगहों में एक जुलूस में ले जाते हैं जहां समुदाय के सदस्य रहते हैं। इधर-उधर ले जाते समय पुतले को लकड़ी के डंडे से पीटा जाता है और एक दूसरे पर होली का रंग लगाते हैं। इस जुलूस के दौरान, मंदिर के परिचारक प्रत्येक घर से थोड़ी मात्रा में चावल और हल्दी एकत्र करते हैं, ताकि उस रात में भूतबली के लिए इसका उपयोग किया जा सके। जुलूस अंततः दोपहर के बाद मंदिर के उत्तर-पश्चिमी दिशा में समाप्त हो जाता है और पुतले को जलाया जाता है। इसके बाद, सभी सदस्य मंदिर परिसर के बाहर इकट्ठा होते हैं, तीर्थ प्राप्त करते हैं, जिसे प्रोक्षम कहा जाता है और हल्दी का पेस्ट, जिसे मोली कहा जाता है, मंदिर के पुजारी से प्राप्त करते हैं। फिर, समुदाय के सदस्य मंदिर की एक परिक्रमा करते हैं। समुदाय के सदस्यों के घर के बाहर बड़े बर्तनों में रखे हल्दी या अन्य रंगों से मिश्रित पानी एक-दूसरे पर फेंकते हैं। परिक्रमा के अंत में, ये सदस्य मंदिर के तालाब में स्नान करते हैं। इस स्नान के बाद घरों में लोग चावल के आटे से तैयार विशेष रोटी खाते है। उसी दिन, रात को मंदिर में विभिन्न घरों से प्राप्त चावल और हल्दी से 'बलि भोजन' तैयार किया जाता है। मंदिर के परिचारक इस बलि भोजन को आधी रात को मंदिर के चारों कोनों पर रखते हैं। माना जाता है कि जिन आत्माओं को मोक्ष नहीं मिला है उन्हें शांत करने के लिए यह रखा जाता है। यह भी माना जाता है कि वे इस बलि भोजन से संतुष्ट होंगी और समुदाय के सदस्यों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगी। समुदाय के सदस्यों को पहले से सूचित किया जाता है कि उन्हें रात में बलि को पार नहीं करना चाहिए। होली का उत्सव इस गतिविधि के साथ समाप्त हो जाता है।

जैसाकि हम जानते हैं आज दुनिया सिमट रही है। लोग अपनी नौकरी, पढ़ाई आदि के लिए अन्य राज्यों / देशों में बसने लगे हैं। अपने साथ-साथ वे अपनी संस्कृति को भी लेकर जाते हैं। केरल में भी उत्तर भारत के लोग धूमधाम से होली मनाते हैं। यही नहीं कॉलेजों, बैंकों और अन्य कार्यालयों में लोग होली के रंग में रंग जाते हैं।

इस प्रकार त्यौहारों को मनाने पर हम एक दूसरे की संस्कृति को, उनके तौर तरीकों आदि से परिचित हो जाते हैं। त्यौहारों में लोगों के मन में उत्साह भरने, आनंद लाने की क्षमता है। अब होली केवल उत्तर भारत तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह पूरे भारत में रंगों का इंद्रधनुष रचती है।

***

वार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक 2024

बैंक द्वारा दिनांक 01-02 मार्च, 2024 को वाराणसी, उत्तर प्रदेश में अखिल भारतीय राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री अजय के. खुराना, प्रमुख - राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह, क्षेत्रीय प्रमुख वाराणसी श्री कल्लोल बिस्वास एवं क्षेत्रीय प्रमुख वाराणसी-II श्री ब्रह्मानंद द्विवेदी उपस्थित रहे। डॉ. उदय प्रताप सिंह, प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं पूर्व अध्यक्ष-हिंदुस्तानी अकादमी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश मुख्य अतिथि के रूप में, श्री अभय कुमार ठाकुर (आई आर एस), वित्तीय अधिकारी, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी और श्री छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यपालक निदेशक श्री अजय के. खुराना द्वारा द्विभाषी एचआर कनेक्ट का शुभारंभ और हिंदी तिमाही पत्रिका 'अक्षय्यम्' के नवीनतम अंक का विमोचन किया गया। कार्यपालक निदेशक ने राजभाषा अधिकारियों को संबोधित किया तथा वर्ष के दौरान सर्वश्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने वाले अंचलों/क्षेत्रों के राजभाषा प्रभारियों को सम्मानित किया। बैंक में हिंदी प्रयोग के संबंध में प्रतिस्पर्धात्मक माहौल को तैयार करने हेतु बैंक स्तर पर प्रतिमाह सर्वश्रेष्ठ राजभाषा अधिकारी के निर्धारण की पहल की शुरुआत की गई है। इस पहल के अंतर्गत समग्र बैंक में वर्ष की सर्वश्रेष्ठ राजभाषा अधिकारी सुश्री मोनिका सिंह, मुख्य प्रबंधक, चंडीगढ़ अंचल, 'क' भाषायी क्षेत्र में वर्ष का श्रेष्ठ राजभाषा अधिकारी श्री नीरज कुमार सिंह, प्रबंधक, अयोध्या क्षेत्र और 'ग' भाषायी क्षेत्र में वर्ष की श्रेष्ठ राजभाषा अधिकारी सुश्री पी. राजेश्वरी, वरिष्ठ प्रबंधक, त्रिशूर क्षेत्र को कार्यपालक निदेशक श्री अजय के. खुराना द्वारा सम्मानित किया गया।

वार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक – 2024

दिनांक 01 से 02 मार्च, 2024 को वाराणसी में आयोजित वार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक – 2024 में प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा चलाए गए विभिन्न अभियानों और प्रतियोगिताओं के विजेता अंचलों को कार्यपालक निदेशक श्री अजय के. खुराना द्वारा सम्मानित किया गया।

लखनऊ अंचल

पुणे अंचल

एर्णाकुलम अंचल

जयपुर अंचल

चंडीगढ़ अंचल

कोलकाता अंचल

भोपाल अंचल

बड़ौदा अंचल

हैदराबाद अंचल

पटना अंचल

मुंबई अंचल

मेंगलूरु अंचल

बरेली अंचल

अहमदाबाद अंचल

चेन्नै अंचल

राजकोट अंचल

बेंगलूरु अंचल

विशिष्ट परंपरा

पंजाब में 'होला-मोहल्ला' की उमंग

अंकेश कुमारी
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

भारत की संस्कृति बड़ी ही रंग बिरंगी है। रंगों की बात करते ही रंगों के त्यौहार होली का ख्याल आता है। होली का पावन पर्व फागुन मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। विविधता में एकता के प्रतीक वाले हमारे देश में सभी पर्वों को अलग-अलग तरह से मनाने की रीत रही है। ब्रज, मथुरा, बरसाना, नंदगांव या फिर बनारस में अलग अंदाज में मनायी जाने वाली होली के साथ ही भारत के अलग-अलग समुदाय भी कई तरह से होली मनाते हैं। अगर आप पंजाब का रुख करते हैं तो पाएंगे कि सिखों द्वारा बहुत ही निराले अंदाज में होली मनाई जाती है। वैसे तो होली मुख्यतः भक्त प्रह्लाद और होलिका की कहानी के स्वरूप में मनाई जाती है किन्तु पंजाब की होली गुरु गोबिंद सिंह जी से जुड़ी हुई है। सिखों के 10वें गुरु गोविंद सिंह जी से कौन परिचित नहीं है? उन्होंने अपने ढंग से होली मनाने की परंपरा की शुरुआत की थी जिसे 'होला मोहल्ला' के नाम से जाना जाता है। होला मोहल्ला सिखों की शौर्यगाथा से जुड़ा हुआ है। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा होला मोहल्ला शुरू किए जाने से पहले बाकी गुरु साहिबान के समय एक-दूसरे पर फूल तथा गुलाल डाल कर होली मनाने की परम्परा चलती रही है, परंतु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने होली को 'होला मोहल्ला' में बदल दिया। होला शब्द होली की सकारात्मकता का प्रतीक था और महल्ला का अर्थ उसे प्राप्त करने का पराक्रम।

होला मोहल्ला : यह पर्व खालसा के राष्ट्रीय पर्व का प्रतीक माना जाता है। कहा जाता है कि होली के दिन से ही होला मोहल्ला की शुरुआत होती है। होला मोहल्ला को 6 दिनों तक मनाए जाने का प्रचलन है। तीन दिनों तक यह त्यौहार कीरतपुर साहिब में और तीन दिनों तक इसे आनंदपुर साहिब में मनाया जाता है। इस उत्सव को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग आनंदपुर साहिब में एकत्रित होते हैं। 6 साल के बच्चे से लेकर 60 साल तक के वृद्ध होला मोहल्ला में शामिल होते हैं। इस दौरान लंगर का आयोजन भी किया जाता है।

कमजोर वर्ग में साहस और वीरता बढ़ाने के लिए होला मोहल्ला की शुरुआत की गई थी। इस समय आनंदपुर साहिब में गुरुवाणी का पाठ तो किया ही जाता है, साथ ही कई तरह के पुराने शस्त्रों को भी प्रदर्शित किया जाता है। इस उत्सव में छद्म युद्ध आयोजित किया जाता है, जिसमें सिखों को दो दलों में बांट दिया जाता है। इसमें किसी को शारीरिक क्षति पहुंचाए बिना युद्ध के जौहर दिखाए जाते हैं। कहते हैं कि इसके लिए श्री गुरु गोबिंद सिंह साहब ने आनंदपुर साहिब में एक किला बनवाया था। किले में बैठकर वे स्वयं सिख दलों के युद्ध को देखते थे। योद्धाओं को उचित पुरस्कार दिए जाते थे। अंत में कड़ा प्रसाद वितरित होता था। इस तरह होली का यह पुरातन त्यौहार स्वस्थ प्रेरणाओं का उत्सव बन गया था। निहंग इस त्यौहार के मुख्य आकर्षण होते हैं। पर्यटकों को भी निहंग सिखों के नए और पुराने दोनों तरह के शस्त्र देखने को मिलते हैं। जिस होला मोहल्ला की शुरुआत करके श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने समाज के कमजोर वर्ग में साहस और वीरता का रस घोलने का काम किया था, उसमें आज भी इस पावन पर्व पर वीरता से जुड़ी कविताओं का पाठ होता है। आप निहंगों को नए और पुराने दोनों शस्त्रों के साथ देख सकते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंह की लाडली सेना कहे जाने वाले निहंग जब अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं तो लोग दांतों तले अपनी अंगुलियां दबा लेते हैं।

होला मोहल्ला में गुरु ग्रंथ साहिब को दूध और पानी से स्नान कराया जाता है जिसके बाद कीर्तन और धार्मिक व्याख्यान आयोजित होते हैं। इस अनुष्ठान के बाद, कड़ा प्रसाद वितरित किया जाता है। गेहूं का आटा, चावल, सब्जियां, दूध और

चीनी जैसी कच्ची सामग्री को स्थानीय ग्रामीणों द्वारा प्रदान किया जाता है। महिला स्वयंसेवक प्रसाद एवं खाना बनाने और बर्तनों की सफाई करने में भाग लेती हैं। तीर्थयात्रियों को पारंपरिक व्यंजन परोसा जाता है।

होला मोहल्ला का इतिहास

होला मोहल्ला मनाने की परंपरा पहली बार 1 मार्च 1757 को चेत वाडी के आनंदपुर में शुरू हुई थी। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ने खालसा की संरचना करने के बाद वर्ष 1757 में चैत्र बदी वाले दिन होली से अगले दिन होला-मोहल्ला नामक त्यौहार मनाना शुरू किया। यह परंपरा गुरु गोबिंद सिंह (1666-1708) के समय हुई थी, जिन्होंने चेत वाडी पर आनंदपुर में पहला जुलूस आयोजित किया था। 1700 में निनोहग्रा की लड़ाई के बाद शाही शक्ति के खिलाफ एक गंभीर संघर्ष को रोकने के लिए यह किया गया था। गुरु साहिब ने अपने सिखों को सत्य की रक्षा करने के लिए अकाल पुरख की फौज (सर्वशक्तिमान की सेना) के रूप में अपनी जिम्मेदारी और कर्त्तव्य के लिए जागृत किया था। तब से, होला मोहल्ला विशेष रूप से होलगढ़ किले के पास एक खुले मैदान में आयोजित एक पूर्ण घटना बन गया। वर्ष 1757 में गुरु जी ने सिंहों की दो पार्टियां बनाकर एक पार्टी के सदस्यों को सफेद वस्त्र पहना दिए तथा दूसरे को केसरी। फिर गुरु जी ने होलगढ़ पर एक गुट को काबिज करके दूसरे गुट को उन पर हमला करके यह जगह पहली पार्टी के कब्जे से मुक्त करवाने के लिए कहा। इस समय तीर या बंदूक आदि हथियार बरतने की मनाही की गई क्योंकि दोनों तरफ गुरु जी की फौजें ही थीं। आखिर केसरी वस्त्रों वाली सेना होलगढ़ पर कब्जा करने में सफल हो गई। गुरु जी सिखों का यह कृत्रिम हमला देखकर बहुत खुश हुए तथा बड़े स्तर पर हलवे का प्रसाद बनाकर सभी को खिलाया गया तथा खुशियां मनाई गईं। उस दिन के बाद से आज तक श्री आनंदपुर साहिब का होला मोहल्ला दुनिया भर में अपनी अलग पहचान रखता है।

पंजाबी समाज को होली का बेसब्री से इंतजार रहता है। बड़े हों या बच्चे सभी होली का आनंद उठाते हैं। होली में रंगों की मस्ती के साथ-साथ रीति-रिवाज और सभ्यता पूरी तरह झलकती है। पंजाबियों की होली मस्ती-उल्लास की डोर से बंधी है। होला मोहल्ला के अलावा पंजाब के लोग होलिका दहन और रंगोत्सव भी मनाते हैं। पंजाब में होली को नौ दिनों की अवधि में होलाष्टक के रूप में मनाया जाता है। होलाष्टक का अर्थ है होली से आठ दिन पहले यानी होलाष्टक। यह त्यौहार होली के दिन रंग और गुलाल के साथ समाप्त होता है। होलाष्टक होली के आगमन की घोषणा करता है। इसके अलावा इसी दिन से होली को आगे बढ़ाते हुए होलिका दहन की तैयारियां भी शुरू हो जाती हैं।

पंजाब में होलिका दहन वाली जगह को करीब 8 दिन पहले साफ पानी से धोया जाता है और लकड़ी की 2 छड़ें रख दी जाती हैं। इनमें से एक छड़ भक्त प्रह्लाद के लिए और दूसरी होलिका के लिए होती है। इनके अलावा सूखे गोबर, सूखी लकड़ी और घास जैसी चीजें भी छड़ों के आसपास रखी जाती हैं। आसपास रहने वाले भी अपने-अपने घरों से गोबर से बने बुरकले और लकड़ियाँ लाकर होलिका को सजाते रहते हैं। जब होलिका दहन का दिन आता है, तब तक वहां लकड़ियों का बड़ा सा ढेर बन जाता है। होलिका दहन के बाद उसकी राख पर लोग आटे या बेसन की मीठी रोटी बनाते हैं, उसे **डोढा** कहते हैं। साथ ही होली से पहली रात को करेले, आलू व नमकीन रोटियां बनाकर रखी जाती हैं, इसे ठंडा खाना कहते हैं। पंजाबियों की होली ढोल और भांगड़ा के बिना अधूरी मानी जाती है। होली के गीत गाए जाते हैं। लोग एक दूसरे के घरों पर होली मिलने जाते हैं। कहा जाता है कि होली के दिन पश्चिमी पंजाब और पूर्वी पंजाब में ऊंचाई पर लटकी हुए मटकी को तोड़ने का प्रचलन है। पंजाबी समाज के लोगों की होली में सबसे विशेष बात यह है कि उन्होंने मस्ती और उल्लास के बीच परंपराओं की डोर को भी मजबूती से थाम रखा है। पंजाब के लोग मुख्य रूप से मालपुआ, लड्डू, गुझिया और मीठी पूड़ी आदि कई पारंपरिक व्यंजन घरों में बनाते हैं।

होली का यह पर्व, लोगों के बीच प्यार और एकता का त्यौहार भी है। इस दिन लोग अपने मतभेदों को भुलाकर, एक साथ मौज-मस्ती का आनंद लेते हैं।

***

अपने ज्ञान को परखिए उत्तर (पृष्ठ सं. 48)

1.	ख	11.	ग
2.	ख	12.	घ
3.	ग	13.	ग
4.	क	14.	ख
5.	ख	15.	ग
6.	क	16.	घ
7.	घ	17.	ख
8.	क	18.	क
9.	क	19.	घ
10.	ख	20.	घ

तमिलनाडु में कामन पांडिगई

रीता गोविंदन
वरिष्ठ प्रबंधक
चेन्नै ग्रामीण क्षेत्र

होली को रंगों का त्यौहार कहा जाता है। यह भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है। होली हर साल मार्च के महीने में हिंदूओं द्वारा उत्साह और उमंग के साथ मनाई जाती है। जो लोग इस त्यौहार को मनाते हैं, वे हर साल रंगों से खेलने और स्वादिष्ट व्यंजनों का बेसब्री से इंतजार करते हैं।

चेन्नई में वैसे तो होली नहीं खेली जाती है। लेकिन इस त्यौहार की उमंग और उल्लास के कारण तमिलनाडु के आम लोग भी बड़े उत्साह से इस खेल का आनंद लेते हैं और रंगों से सराबोर होकर होली खेलते हैं। कहा जाता है कि तमिलनाडु के लोग कामदेव की कथा के संदर्भ में होली मनाते हैं। इस दिन गीत गाए जाते हैं जो रति की दयनीय कहानी और उसके विलाप को व्यक्त करते हैं। यहां होली को तीन अलग-अलग नामों से जाना जाता है, कामाविलास, कामन पांडिगई और कामा-दहनम्।

तमिलनाडु में होली के त्यौहार को कामन पांडिगई के नाम से जाना जाता है। यह प्रेम भावना से मनाया जाता है, इस दिन विशेष रूप से प्रेम के देवता कामदेव का स्मरण किया जाता है। कथा के अनुसार, अपनी पत्नी सती के निधन के बाद भगवान शिव विरक्त हो जाते हैं। इससे पार्वती एवं अन्य देवता बहुत चिंतित होते हैं। वे सभी शिव जी की विरक्ति दूर करने के लिए कामदेव की सहायता लेते हैं। कामदेव भगवान शिव की साधना में विघ्न डालते हैं। इससे रुष्ट होकर शिव जी अपने तीसरे नेत्र से कामदेव को भस्म कर देते हैं। इस पौराणिक आख्यान के संदर्भ में ही होली मनाई जाती है।

वैसे तमिलनाडु में होली आम त्यौहारों जैसी नहीं मनाई जाती है। इसके बजाय, पूर्णिमा के दिन, तमिल लोग मासी मगम मनाते हैं, यह मानते हुए कि यह पवित्र है। इसलिए क्योंकि आकाशीय प्राणी और पूर्वज जल निकायों में डुबकी लगाने के लिए आते हैं, ऐसा माना जाता है।

तमिलनाडु में पंगुणि उत्तिरम के साथ भी होली को जोड़ा जाता है। पंगुनी उत्तिरम एक तमिल हिंदू त्यौहार है। यह पंगुनी महीने की पूर्णिमा (14 मार्च से 13 अप्रैल) को मनाया जाता है। शिव और पार्वती, राम और सीता, मुरुगन और देवसेना, रंगनाथ और अंडाल अय्यप्पन के विवाह का स्मरणोत्सव इसकी विशेषता है। इस अवसर पर मंदिरों में कार उत्सव एवं कावडि भी खेला जाता है।

तमिल कैलेंडर में पंगुनी अंतिम महीना है और उत्तिरम उस नक्षत्र या तारे को संदर्भित करता है जो शासन कर रहा है। यह उस दिन पड़ता है जब चंद्रमा तमिल कैलेंडर यानी पंगुनी के बारहवें महीने में उत्तरा-फाल्गुनी या उत्तिरम के नक्षत्र या नक्षत्र में दिखाई देता है। हिंदू रीति-रिवाज के अनुसार पंगुनी माह को तमिल कैलेंडर का आखिरी महीना माना जाता है। यह उत्तरा फाल्गुनी माह में पंगुनी माह में पड़ता है। पंगुनी महीने का मुख्य महत्त्व यह है कि पूर्णिमा का दिन 12वें महीने फाल्गुन में उत्तरा फाल्गुनी के दिन के साथ मेल खाता है।

पंगुनी उत्तिरम के दिन, भक्त सुबह जल्दी उठते हैं और स्नान करने के बाद साफ और अच्छे कपड़े पहनते हैं। फिर वे भगवान शिव और देवी पार्वती की पूजा करते हैं, भगवान शिव और माता पार्वती के विग्रहों को सुंदर वस्त्रों, आभूषणों और फूलों से सजाया जाता है। भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह कराया जाता है। पंगुनी उत्तिरम वैवाहिक जीवन को आनंद से समृद्ध करने के लिए मनाया जाता है। पंगुनी उत्तिरम उत्सव के दौरान किए गए विवाह दिव्य और पवित्र होते हैं। ऐसा माना जाता है कि पंगुनी उत्तिरम पर शिव और विष्णु मंदिरों में, भगवान मुरुगा भक्तों को तब दर्शन देते हैं जब उनका विवाह हुआ था।

पंगुनी उत्तिरम शिव और पार्वती, राम और सीता, मुरुगन (कार्तिकेय) और देवसेना और रंगनाथ (विष्णु) और अंडाल के विवाह के स्मरणोत्सव का प्रतीक है। इसे अय्यप्पन की अभिव्यक्ति का प्रतीक भी माना जाता है। अरुल्मिगु दंडायुदपाणि स्वामी मंदिर का सबसे प्रमुख समारोह पंगुनी उत्तिरम है, जो मार्च और अप्रैल के महीनों में होता है, जिस दिन उत्तिरम का तारा उदय होता है। पंगुनी उत्तिरम उत्सव दस दिनों तक चलता है और मंदिर में पांच लाख से अधिक तीर्थयात्रियों द्वारा इसे एक साथ मनाया जाता है। तमिलनाडु में होली के त्यौहार को इस पंगुनी उत्तिरम के रूप में मनाया जाता है।

इसके अलावा होली के रूप में एक और खेल तमिलनाडु में खेला जाता है, जिसे हल्दी के पानी से खेला जाता है। यह वास्तव में एक खेल है जिसमें लड़का लड़की पर और लड़की लड़के पर हल्दी का पानी फेंकते हुए खेलते हैं। इसे मंजल नीरु विलेयाट्टु कहा जाता है। यह खासकर गांवों में ही खेला जाता है। यह पारंपारिक खेल है जिसे अरसों से गांव वाले खेलते आ रहे हैं। इस खेल में लड़का जब किसी लड़की पर हल्दी का पानी फेंकता है तो उसका मतलब वह उस पर अपना होने का हक जता रहा होता है। जिससे वह आगे चलकर विवाह रचाना चाहता है।

हल्दी पानी के खेल में लड़कियां लड़कों पर हल्दी पानी डाल सकती हैं। लेकिन पुरुष महिलाओं पर छींटाकशी नहीं करते। पुरुष दूसरे पुरुषों पर छींटाकशी कर सकते हैं। महिलाएं दूसरी महिलाओं पर छींटाकशी नहीं करतीं। इस उत्सव के दौरान वाद्य यंत्र बजाने वालों पर भी हल्दी पानी डाला जाता है तथा सभी आदमियों पर हल्दी पानी डाला जाता है। लड़कियों पर हल्दी पानी डालने से विवाह का संबंध स्थापित होने के कारण इसे लड़कियों पर मजाक के रूप में भी नहीं डाला जाता है।

अधिकांशत: महिलाएं अपने भाई-बहनों पर इसे नहीं फेंकती। इस हल्दी पानी को मामा या मामा के बेटे या बेटी या बुआ के बेटे या बेटी पर ही फेंका जाता है। पुरुष इस हल्दी पानी को दोस्तों और रिश्तेदारों पर डालकर खेलते हैं। इस मिश्रण में हल्दी, पानी और नीम शामिल है। अब अन्य रंगों को मिलाने का भी चलन है। कुछ स्थानों पर अन्य रंगों का मिश्रण वर्जित है।

यद्यपि हल्दी पानी का खेल अलग-अलग स्थानों पर लोगों द्वारा अलग-अलग दिनों में खेला जाता है लेकिन इसे केवल मंदिर उत्सवों के दौरान ही अधिक महत्त्व मिलता है। यह उरथिरु उत्सव के बाद आयोजित किया जाता है। कुछ गांवों में, थाई महीने के तीसरे दिन, पोंगल मनाया जाता है और कुछ स्थानों पर अम्मन त्यौहारों के दौरान इस त्यौहार को हल्दी के पानी के घोल से मनाया जाता है। इरोड जिले और उसके आसपास, मारियम्मन मंदिर में उत्सव के दौरान रस्म के साथ उत्सव मनाया जाता है। अन्य स्थानीय त्यौहार भी हल्दी पानी के साथ होते हैं। यह त्यौहार कोई अलग त्यौहार नहीं है बल्कि देवता की छवि या देवता की मूर्ति के जुलूस के दौरान मनाया जाता है।

अब इस त्यौहार में सिर्फ हल्दी ही नहीं बल्कि अन्य रंगों के पाउडरों को भी पानी में मिलाकर डाला जाता है। उत्तरी राज्यों में मनाये जाने वाला होली का त्यौहार भी इसी तरह मनाया जाता है।

***

विश्व हिंदी दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी

दिनांक 24 जनवरी, 2024 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी द्वारा हिमालयन बुद्धिस्ट कल्चर स्कूल में निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में बढ़ चढ़कर भाग लिया। विजेता विद्यार्थियों को प्राध्यापक की उपस्थिति में पुरस्कृत किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, सोलापुर

दिनांक 10 जनवरी, 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, सोलापुर द्वारा विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में व्याख्यान/सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम मुख्य अतिथि - प्राध्यापक डॉ गंगाधर डी. बिराजदार, दयानंद महाविद्यालय, सोलापुर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में सोलापुर क्षेत्र की शाखा के स्टाफ सदस्य भी उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, छत्रपति संभाजीनगर

दिनांक 10 जनवरी, 2024 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, छत्रपति संभाजीनगर के स्टाफ सदस्यों के लिए हिंदी स्मरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कोंकण होली

कोंकण का शिमगोत्सव

राजेंद्र श्रीधर चव्हाण
वरिष्ठ प्रबंधक
आर. ए. पी. सी., वलसाड

भारतवर्ष में होली का त्यौहार बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। होली का त्यौहार महाराष्ट्र के कोंकण प्रांत में 'शिमगा' के नाम से जाना जाता है। यह शिमगोत्सव 10 से 15 दिन तक मनाया जाता है। महाराष्ट्र के पश्चिम किनारे बसा हुआ यह कोंकण एक तरफ अरब सागर से तो दूसरी तरफ पहाड़ से घिरा है। यही कोंकण की भौगोलिक विशेषता है। माना जाता है कि भगवान परशुराम ने अपने कमान से निकले तीर से समुंद्र को पीछे हटाकर कोंकण भूमि का सृजन किया था।

फाल्गुन पूर्णिमा के दिन होलिका दहन होता है। इस दिन लगभग शाम 5 बजे, गांव से थोड़ी दूर जंगल में बसे ग्राम देवता के मंदिर में 'पालखी' को फूलों से, विद्युत रोशनी से सजाया जाता है। इस पालखी में ग्राम देवताओं की 'मूर्तियां' (प्रतिमाएं) रखी जाती हैं। विधिवत् पूजा अर्चना 'मानकरी' करने के बाद पालखी गांव की 'सहाण', (यह गांव के बीचों-बीच बसी हुई वो जगह है जो मंदिर की तरह है, पर यहां सिर्फ पालखी रखी जाती है) के लिए प्रस्थान करती है। पालखी को कंधे पर, सिर पर उठाकर ढोल ताशे के साथ धूम-धाम से श्रद्धापूर्वक नचाते हुए 'सहाण' पर लाया जाता है। वहां पर पालखी विराजमान होती है। गांव की सभी महिलाएं यहां पालखी की आरती, पूजा अर्चना करके 'पुरणपोळी' का भोग चढ़ाती हैं।

रात के बारह बजे 'माड' अर्थात् एक वृक्ष को पूरे गांव में नचाया जाता है। लगभग सौ के आसपास लोग इस माड को हाथ पर, कंधे पर उठाकर नचाते हैं और गांव की एकता का एहसास 'हो हैय्या' के जुलूस से दिलाते हैं। रात को 3 बजे माड को सहाण पर लाया जाता है, वहां उसकी पूजा अर्चना करने के बाद आरती की जाती है। कुछ पल के विश्राम के बाद, होलिका दहन (प्रचलित बोली में 'होम' कहते हैं) के स्थल पर माड रवाना होता है और 70 से 80 फुट लंबे माड को सीधा खड़ा करके उसके ऊपर के हिस्से में ध्वज को बांधा जाता है। यह दृश्य बहुत ही रोमांचक होता है।

होलिका दहन के दिन इस जगह पर हलवाई की दुकानों, खिलौनों की दुकानों, नाश्ता और चाय पानी की दुकानों का मेला लगा होता है और लोग उसका आनंद लेते रहते हैं। फिर पालखी, सहाण से इस स्थल पर लायी जाती है। सबेरे 5 बजे के होम के तीन प्रदक्षिणा लेने के बाद होलिका दहन होता है। जिनकी नई शादी हुई है वे नवयुगल होलिका दहन में नारियल अर्पण करके अपने वैवाहिक जीवन में शांति और सफलता के लिए प्रार्थना करते हैं। कुछ गांव में सुबह होलिका दहन होता है और कुछ गांव में दिन में होलिका दहन होता है। पालखी को फिर से कंधे पर, सर पर उठाकर ढोल ताशा और पिपाणी के संगीत के साथ बड़े धूमधाम से नचाया जाता है। यह नजारा देखने लायक होता है। इसके बाद पालखी सहाण पर विराजमान होती है।

इस शिमगोत्सव पर एक राक्षस कुल का राजा गांव में हर घर के सामने जाता है और 'खेळे' (एक पारंपरिक लोक कला) का प्रदर्शन करता है। इस राक्षस के हाथ में रखी छोटी रस्सी के गांठ से मार खाना एक आशीर्वाद माना जाता है। पूरा काला वेश, सिर पर शंकू की तरफ मुखौटा, सिर पर-हाथ पर भस्म के सफेद रंग के पट्टे, लंबी सफेद दाढ़ी और उसमें से लटकी हुई लाल जीभ, कमर में बड़े-बड़े घुंघरू, इस राक्षस का नाम हैं 'शंखासुर'।

'शंखासुर' एक असुर है जिसने ब्रह्म देव के वेद चुराए थे और यह ज्ञान का भंडार सामान्यजन के लिए प्रदान किया। फिर भगवान विष्णु ने मस्त्यावतार धारण करके समुद्रतल में शंख में छुपे हयग्रीव दानव का वध किया। इस संदर्भ में ऐसी एक पौराणिक कथा है कि यह राक्षस शंख में छुपा था इसलिए इसे 'शंखासुर' कहते हैं। किंतु कोंकण में शंखासुर खलनायक नही, शिमगोत्सव के हीरो हैं।

तृतीय दिवस पालखी सजा-धजा कर हर घर में लाई जाती है और दिवाली के त्यौहार की तरह हर घर में उल्लास का माहौल होता है। पालखी के स्वागत के लिए हर घर में सफाई के बाद रंगोली, विद्युत रोशनी लगाई जाती हैं। घर में मिष्ठान, भोग आदि तैयार होता है।

पालखी घर पर आने के बाद पूजा अर्चना करके आरती की जाती है। घर की महिलाएं ग्राम देवताओं की ओटी भरते हैं और फिर ग्राम देवताओं को भोग चढ़ाया जाता है। घर के प्रत्येक सदस्य की खुशहाली एवं सफलता के लिए प्रार्थना की जाती है। भोजन के कार्यक्रम के बाद पालखी दूसरे घर में जाने के लिए प्रस्थान करती है।

पांचवे दिन रंगपंचमी पर होली खेली जाती है इसी दिन गांव में सत्य नारायण पूजा, 'गोंधळ' होता है। नमन -खेळे, यह पारंपरिक लोक कला भी संपन्न होती है। शिमगोत्सव का समापन 'शिंपणे' कार्यक्रम से होता है और पालखी ग्रामदेवता के मंदिर में जाती है।

आप सभी लोग - शिमगोत्सव, होम, रूपं, पालखी, मानकरी, हो हैय्या, पुरणपोळी, माड, सहाण, नमन, खेळे, शंखासूर, गोंधळ और शिंपणे, यहाँ कोंकण में प्रचलित शब्दों से परिचित हुए होंगे, पर इस पारंपरिक संस्कृति का अनुभव एवं आनंद लेने के लिए एक बार कोंकण के शिमगोत्सव में अवश्य पधारें।

***

कर्नाटक में कामना हब्बा

पुष्पलता बी. एन.
मुख्य प्रबंधक
अंचल कार्यालय, मेंगलूरु

भारत में होली एक ऐसा त्यौहार है जिसे अत्यंत उत्साह के साथ मनाया जाता है। कर्नाटक में होली चार दिनों तक बड़ी धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाई जाती है। गुलाल, रंगों के पानी के गुब्बारे, पिचकारी, संगीत और विभिन्न पकवान इस पर्व के अभिन्न अंग हैं। रंगों के त्यौहार को पूरे देश में लोग जश्न की तैयारी के साथ मनाते हैं। होली के उत्साह को बढ़ाने के लिए लोगों ने अब भीड़-भाड़ वाली होली पार्टियों और समारोहों के बजाय उत्सव का अनुभव करने के लिए नई जगहों की यात्रा करना शुरू कर दिया है। भारत के उत्तरी क्षेत्र में होली उत्सव काफी लोकप्रिय है। वैसे दक्षिणी राज्य कर्नाटक आश्चर्यजनक रूप से एक ऐसा राज्य है जो होली को अपने अनोखे तरीकों से मनाता है। कर्नाटक में होली को कामना हब्बा या कामदहन के रूप में मनाया जाता है। राक्षसी ताकतों को जलाने की याद में मनाया जाने वाला यह त्यौहार धार्मिक महत्त्व रखता है। रात्रि में लोग होलिका दहन के लिए इकट्ठा होते हैं और बुरी आत्माओं को दूर रखने के लिए अनुष्ठान करते हैं। अगले दिन, जिसे रंगपंचमी के नाम से जाना जाता है, रंगीन पाउडर और पानी के साथ उत्सव मनाते हैं। होलीगे (मीठी भरवां ब्रेड) और ओबट्टू जैसे पारंपरिक व्यंजन तैयार किए जाते हैं और दोस्तों और परिवार के बीच बांटे जाते हैं।

बागलकोट

बागलकोट कर्नाटक की एक मशहूर जगह है और वहां की होली का जश्न कुछ अलग ही अंदाज का होता है। होली बागलकोट का सबसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक त्यौहार है। यहां होली मनाने का एक मानक तरीका है जो अलाव से शुरू होता है जिसमें बुराई को जलाना होता है और बाद में रंग, नृत्य और संगीत के साथ खेला जाता है। वहां आप सड़कों और पार्कों में लोगों को एक-दूसरे पर रंग फेंकते हुए देख सकते हैं।

मैसूर

मैसूर में होली के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। कार्यक्रम में रेन डांस, पूल पार्टी और बहुत कुछ शामिल होता है। सबसे अच्छी बात यह है कि इनमें से कई आयोजन पर्यावरण-अनुकूल हैं। मैसूर की होली सबसे रंगीन होली में से एक मानी जाती है।

हम्पी

हम्पी में होली बहुत उत्साह के साथ मनाई जाती है। चूंकि हम्पी में कई मंदिर हैं इसलिए यहां होली एक धार्मिक अनुष्ठान का दिन है। होली विभिन्न रीति-रिवाजों के साथ मनाई जाती है। यहां रस्में खत्म होने के बाद सभी लोग एक-दूसरे पर रंग डालते हैं और उसके बाद रंग उतारने के लिए नदी में नहाने जाते हैं।

उडुपी

कुडुबी की होली - कुनिथा के 5 दिन - यह ऐतिहासिक सुरालु पैलेस में कुडुबी जाती का एक विशेष होली उत्सव है। होली मौज-मस्ती और रंगों का त्यौहार है जो पूरे भारत में मनाया जाता है लेकिन उडुपी की इस जनजाति में होली मनाने का एक अनोखा तरीका है। कुडुबी होली इस भूमि के लोगों को उनकी पिछली पीढ़ियों द्वारा सौंपे गए प्राचीन रीति-रिवाजों की सीमाओं के भीतर मनाई जाती है।

कुडुबी, मूल रूप से गोवा के निवासी हैं, जो दक्षिण कन्नड़, उडुपी और उत्तर कन्नड़ जिलों के तटीय क्षेत्रों के आदिवासी निवासी हैं। वे छोटे संगठित समूहों में रहते हैं जिन्हें 'कूडुकट्टू' या 'कुडालाइक' के नाम से जाना जाता है, जिसका नेतृत्व 'गुरकर' या 'गांवकर' करते हैं। वे बहुत परंपरावादी हैं और अपने रीति-रिवाजों का बहुत नियम से पालन करते हैं। भले ही उनके गांव में संरचनात्मक या सांस्कृतिक रूप से बहुत कुछ बदल गया है फिर भी इस आदिवासी समुदाय ने अपने रीति-रिवाजों का पालन करने में कभी समझौता नहीं किया है।

कुडुबी जनजाति का कुमटे नृत्य हर साल उडुपी के कोक्करने के प्रसिद्ध सुरालू पैलेस में धूमधाम से आयोजित किया जाता है। सैकड़ों कुडुबी कलाकारों द्वारा पारंपरिक वेशभूषा में सुरालू के प्रांगण में नृत्य कौशल का प्रदर्शन किया जाता है।

प्राचीन काल में महल के राजाओं ने कुडुबी लोगों को आश्रय और रोजगार दिया था जो पुर्तगालियों का सामना नहीं कर पाने के कारण गोवा से भाग गए थे और आज भी महल के लाभ के लिए नृत्य प्रदर्शन किए जाते हैं। लोक कला और लोक को बचाने तथा संवारने के लिए राजमहल के मौजूदा सदस्य भी इस जातीय समूह के समर्थन में खड़े रहते हैं। होली का त्यौहार मनाने के लिए यह समुदाय प्राचीन परंपराओं का निर्वहन करते हैं। इनके लिए होली एक ऐसा त्यौहार है जो प्राचीन काल से मनाया जाता रहा है। होली का त्यौहार वसंत ऋतु का स्वागत करने के तरीके के रूप में मनाया जाता है और इसे एक नई शुरुआत के रूप में भी देखा जाता है जहां लोग अपने सभी अवरोधों को दूर कर नई शुरुआत करते हैं।

***

नराकास की बैठकें

नराकास, जालंधर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), जालंधर की 24 वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक दिनांक 23 जनवरी, 2024 को भौतिक / ऑनलाइन माध्यम से अध्यक्ष श्री देवराज बंसवाल की अध्यक्षता एवं श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के विशेष आतिथ्य में संपन्न हुई। समिति की छमाही पत्रिका नव-प्रयास के 16 वें अंक एवं नराकास (बैंक),जालंधर के मासिक न्यूज़ लेटर दोआबा-वार्ता का ई-विमोचन मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया। बैठक में श्री विमल कुमार नेगी, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख तथा श्री पुनीत कुमार मिश्र, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति), प्रधान कार्यालय का मार्गदर्शन भी ऑनलाइन माध्यम से प्राप्त हुआ।

नराकास, जयपुर

दिनांक 30 जनवरी, 2024 को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की 77वीं छ: माही बैठक का आयोजन अंचल कार्यालय, जयपुर में किया गया। इस बैठक में सदस्य बैंकों एवं बीमा कंपनियों में राजभाषा कार्यान्वयन की विस्तृत चर्चा व समीक्षा की गई। बैठक में श्री हर्षद्कुमार सोलंकी, महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, श्री नरेन्द्र मेहरा, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग,गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली सहित सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुख व राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे। इस बैठक में श्री संजय सिंह, प्रमुख - राजभाषा एवं संसदीय समिति, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा ने भी वर्चुअल रूप से जुड़कर मार्गदर्शन प्रदान किया ।

नराकास, बरेली

बरेली अंचल के संयोजन में गठित बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा कंपनी), बरेली की 20वीं बैठक का आयोजन महाप्रबंधक एवं समिति के अध्यक्ष श्री एम अनिल की अध्यक्षता में दिनांक 30 जनवरी, 2024 को संपन्न हुई। इस बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तर-2) के उप निदेशक डॉ. छबिल कुमार मेहेर तथा नेटवर्क उप महाप्रबंधक श्री अभय कुमार अग्रवाल विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर एक कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

नराकास, अयोध्या

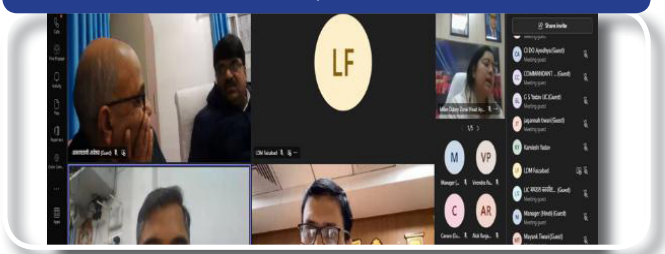

क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या के संयोजन में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या की 18 वीं अर्द्ध-वार्षिक समीक्षा बैठक एवं विश्व हिंदी दिवस, 2024 का आयोजन दिनांक 19 जनवरी, 2024 को माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से ऑनलाइन किया गया। डॉ. छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, क्षे.का. का.(उत्तर -2) के मुख्य आतिथ्य में तथा श्री अनिल कुमार झा, अध्यक्ष, नराकास, अयोध्या की अध्यक्षता में कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

नराकास, गरियाबंद

दिनांक 29 जनवरी, 2024 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गरियाबंद की 12वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन मोहम्मद मोफ़िज़ की अध्यक्षता में किया गया। अध्यक्ष महोदय ने सदस्य कार्यालयों के लिए हिंदी में काम-काज को बढ़ाने के विभिन्न उपाय बताते हुए सभी से हिंदी के प्रचार-प्रसार में बढ़ चढ़कर योगदान करने के लिए अनुरोध किया।

नराकास, बालोद

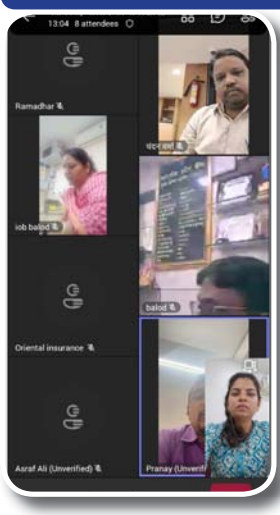

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बालोद की समीक्षा बैठक का आयोजन दिनांक 16 मार्च, 2024 को नराकास अध्यक्ष श्री प्रणय दुबे की अध्यक्षता में किया गया । अध्यक्ष महोदय ने हिंदी में किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए प्रगति की इस यात्रा को जारी रखने का अनुरोध किया।

विशेष

बिहार के फागोत्सव के विभिन्न रंग

अनुराग आनंद
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

भारत त्यौहारों का देश है और ऐसे में होली एक ऐसा त्यौहार है जिसे हर वर्ग के लोग हर्षोल्लास और उमंग से मनाते हैं। देश के कई शहरों में होली बहुत ही धूम-धाम से मनाई जाती है। यूं तो हर जगह की होली की अपनी अलग ही पहचान है लेकिन अगर हम बिहार की बात करें तो इसकी एक अलग ही ख्याति है। यहां के समस्तीपुर जिला के अंतर्गत आने वाले रोसड़ा प्रांत से 5 कि.मी. दूरी पर स्थित भिरहा नामक गांव में होली की धूम तीन दिनों तक रहती है। होलिका दहन के दौरान गांव में सबसे ऊंची ध्वजारोहण की जाती है और फिर वृंदावन की तर्ज पर होली खेलते हैं। गांव में आयोजित किए जाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हर व्यक्ति में अपने को श्रेष्ठ साबित करने की होड़ लगी रहती है। राष्ट्रकवि दिनकर ने भिरहा गांव की होली से अभिभूत होकर कहा था कि जो लोग वृंदावन तक नहीं पहुंच पाते हैं वे लोग भिरहा में वृंदावन की झलक देख सकते हैं।

वहीं उत्तर प्रदेश के ब्रज के तर्ज पर बिहार के सहरसा में बनगांव नामक गांव में होली खेली जाती है। यहां की घुमौर होली ब्रज की होली जैसी ही मनायी जाती है। घुमौर होली की विशिष्ट बात यह है कि यह होली एक दिन पूर्व ही मनाई जाती है। इस विशिष्ट होली में लोग एक दूसरे के कंधे पर सवार होकर उठा-पटक कर के रंग खेलते हैं और होली मनाते हैं। बनगांव के विभिन्न टोलों से होली खेलने वालों की टोली सुबह से ही मां भगवती के मंदिर में जमा होने लगती हैं। घुमौर होली में हजारों की संख्या में कई गांवों के लोग एक जगह जमा होकर रंगों में डुबकियां लगाते हैं। संत लक्ष्मी नाथ गोसाई द्वारा शुरू की गयी बनगांव की होली ब्रज की लट्ठमार होली की ही तरह है।

बिहार के पूर्णियां जिले के सिकलीगढ़ में आज भी वह स्थान है, जहां होलिका, भगवान विष्णु के परम भक्त प्रह्लाद को अपनी गोद में लेकर जलती चिता में बैठी थी। यह स्थान धरहरा गांव के नाम से जाना जाता है। इसी जगह पर माणिक्य स्तंभ नामक स्तंभ से नरसिंह भगवान अवतरित हुए थे। ऐसी किवदंती है कि इस स्तंभ को कई बार तोड़ने की कोशिश की गई है लेकिन हमेशा असफलता हाथ लगी है। यह खंभा 65 डिग्री झुका हुआ है। यह जमीन से 10 फीट ऊंचा और 12 फीट मोटा बेलनाकार है। यहां राख और मिट्टी से होली खेलने की प्रथा है जिसे देखने के लिए 40 से 50 हजार श्रद्धालु उपस्थित होते हैं। वहीं फागोत्सव में मिथिलांचल में होली का स्वरूप खान-पान से भी प्रदर्शित होता है। मिथिला की धरती जो कि भगवान श्रीराम का ससुराल भी है। यहां के लोक गायन में माता सीता, प्रभु राम, पार्वती और महादेव के नाम से होली गीत **'शास्ते मिथिला में राम खेले होली मिथिला में, बाना हरिहर नाथ सोनपुर में रंग बरसे'** गाकर कोक बोग झूमते नाचते हैं। मिथिला में होली के भी अनेक रूप देखने को मिलते हैं। यहां मिथिला में होली रासायनिक रंगों के बजाय प्राकृतिक रंगो से खेली जाती है।

गीत-संगीत में यहां लोग ढोल, मंजीरा, फाग, धमार, चैती और ठुमरी गाकर होली को एक अलग ही स्वरूप देते हैं। बिहार में मिथिला, अंग, भोजपुर और मगध में होली खेलने की अपनी एक विशिष्ट पहचान है। यहां इतनी विविधता है कि एक कहावत बिहार के लिए प्रचलित है 'कोस कोस पर वाणी बदले और चार कोस पर पानी' की तर्ज पर यहां अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग प्रकार से होली खेली जाती है एवं यहां का खान-पान भी विविधताओं से भरा हुआ है। मगध में बुढ़वा होली, समस्तीपुर में छाता पटोरी होली, पटना का कुर्ता फाड़ होली, तो अंग में धुड़खेल होली खेली जाती है।

बिहार में होली हो और इस अवसर पर खान-पान की बात न करें तो त्यौहार फिका पड़ जाता है। बिहार में होली खेलने का जितना उत्साह देखा जाता है, उतना ही यहां होली के अवसर पर विशिष्ट स्वादिष्ट व्यंजन भी बनाए जाते हैं और आगंतुकों को उतने ही प्रेम से खिलाया भी जाता है। बिहार में होली की शाम को घर-घर जाकर अपने बड़ों के पैर पर अबीर डालकर उनसे आशीर्वाद लेने का प्रचलन है, संगी-साथियों और अपने से छोटों को चेहरे पर अबीर लगाया जाता है।

अगर हम विशिष्ट व्यंजनों की बात करें तो होली के अवसर पर मालपुआ, दही वड़ा, लौंगलता, गुजिया, सब्जी और पूड़ी जैसे स्वादिष्ट व्यंजन बनते हैं जिसे खाने के लिए सभी वर्षभर इसकी प्रतीक्षा उत्साह के साथ करते हैं। कहीं-कही तो भांग मिली हुई ठंडई और जलेबी भी खाने को मिलती है।

होली हमारे जीवन में सकारात्मक ऊर्जा और नई उमंग लेकर आती है। बुराई पर अच्छाई की जीत के उल्लास को अनेक रूप और रंगों में देखा जाता है। इस त्यौहार से हमें यही सीख मिलती है कि बुराइयों को छोड़ते हुए अच्छाई की राह पर चलना और अहंकार को दूर करते हुए आपस में सौहार्द बनाकर चलने से जीवन की राह सुगम हो जाती है।

होली संबंधों को जोड़ने, भोजन और मिठाइयों एवं खुशियों के आदान प्रदान का माध्यम है। लोग एक-दूसरे के घर जाकर रंग और अबीर लगाकर साथ ही बुरा न मानो, होली है बोल कर होली की शुभकामनाएं देते हैं। ***

महिला स्वतंत्रता

गीतांजली पाटिल
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, नाशिक

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर

8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस न जाने कितने मंचों पर आयोजित किया जाता है जिसके अंतर्गत संवाद, परिसंवाद, गोष्ठियां, चिंतन और विमर्श कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन चर्चाओं में नारी-स्वतंत्रता की दशा और दिशा पर प्रमुखता से विचार किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का मिशन लैंगिक समानता और महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देना है। यह दिन महिलाओं की उपलब्धियों को उजागर करने, मौजूदा चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और बदलाव के लिए समर्थन जुटाने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

वर्ष 2024 के महिला दिवस का केंद्रीय उद्देश्य कार्यस्थल पर असमानताओं से लेकर हिंसा और प्रजनन अधिकारों तक महिलाओं को प्रभावित करने वाले मौजूदा मुद्दों को शामिल करना है। महिलाओं से संबंधित सभी कार्यक्रम और उत्सव समावेशिता को बढ़ावा देते हैं और महिलाओं को सशक्त बनाने वाली नीतियों पर जोर देते हैं। साथ ही, यह एक ऐसी दुनिया बनाने की प्रतिबद्धता को भी मजबूत करता है जहां महिलाओं को समान अवसर और स्वतंत्रता का आनंद मिले।

नारी से जुड़ा एक सच इतना तीखा और मर्मांतक है कि संवेदना की कोमल त्वचा पर सूई की नोंक सा चुभता है। कहीं कहीं उनके प्रति अवहेलना का भाव भी देखा जाता है। वैसे नारी से जुड़े प्रश्नों को उठाने की कोशिश करनी ही नहीं चाहिए। जहां नारियां स्वतंत्रता के सभी आयामों को छू रही हैं वहीं उनकी इस आजादी में कहीं-कहीं असुरक्षा का स्याह अंधेरा भी गहराता हुआ दिखाई देता है। कभी-कभी समाज के असामाजिक तत्व नारियों के प्रति इतने क्रूर हो जाते हैं कि समुचित कानून व्यवस्था अपने को ठगा सा महसूस करती है। फिर भी देश दुनिया के तमाम कानून और न्याय व्यवस्था नारियों के प्रति संवेदनशील हैं और उन्हें बराबरी का अधिकार दिलाने का भरसक प्रयास करते हैं।

मैं यह नहीं कहती कि नारी उपलब्धियां नगण्य हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि इनके समक्ष नारी अत्याचार की रेखा समाज ने इतनी लंबी खींच दी है कि उपलब्धि की रेखा छोटी प्रतीत होती है। अब भी समय ठहर कर सोचने का, समझने और महसूस करने का है कि ऐसे क्यों है? क्योंकि सामाजिक व्यवस्था की बुनियाद उसी नारी पर आधारित है और जब कोई व्यवस्था अपनी चरम दुरावस्था में पहुंचती है तो उसके विनाश की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। नारी के सृजक स्वरूप को संरक्षित और सुरक्षित रखना भी समाज का ही दायित्व है। बेहतर होगा कि महाविनाश की पृष्ठभूमि तैयार करने के बजाय सुगठित-समन्वित और सुस्थिर समाज के नवनिर्माण का सम्मिलित संकल्प करें। प्रश्न और प्रश्नों की भयावहता में उलझी नारी ने यदि विषमताओं से निकलकर उत्तर खोजना छोड़ दिया तो हालात फिर कभी सुधारे नहीं जा सकेंगे। महिलाओं को मिलने वाले अवसर और उसमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का उनका अद्भुत कौशल ही उन्हें अद्वितीय बनाता है।

सामने से नेतृत्व करने वाली महिलाएं

महिलाएं भारत की जनसंख्या का करीब आधा हिस्सा हैं, लेकिन उन्हें अपेक्षाकृत देश की आर्थिक संपन्नता का कम लाभ मिला है। अधिकांश महिलाओं के अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत होने के कारण उन पर महामारी का प्रभाव ज्यादा देखने को मिला। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी है। देश भर से ऐसी कई मजबूत औरतों की कहानियां सामने आईं, जिन्होंने अपने घरों से बाहर निकालकर साहस और हिम्मत दिखाते हुए अपने समुदाय की सहायता की। उन्होंने अपनी लगन से महामारी के अनुभव को एक सकारात्मक अनुभव में परिवर्तित करते हुए, बदलती हुई दुनिया के अनुसार अपने कौशल क्षमता में विस्तार किया। ये कहानियां दूसरों को आगे बढ़ने के लिए उम्मीद और प्रोत्साहन देती हैं ।

सामुदायिक कार्यकर्ता

झारखंड जैसे निम्न आय वाले एक भारतीय राज्य के गिरिध जिले में एक आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के रूप में काम करने वाली अनीता देवी उन लाखों महिलाओं में से एक हैं, जिन्होंने कोरोना महामारी के खिलाफ एकजुट होकर मुकाबला किया। आमतौर पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता कुपोषण जैसी बीमारी को दूर करने

के लिए जमीनी स्तर पर काम करती हैं, लेकिन महामारी के दौरान इन महिलाओं ने अन्य ग्रामीण महिला स्वास्थ्य कर्मियों के साथ घर-घर जाकर लोगों की यतनाओं का विवरण लिया, उनके भीतर बीमारी के लक्षणों की जांच की और जरूरत पड़ने पर, उन्होंने संक्रमित व्यक्तियों के संपर्क में आए लोगों का पता लगाने में सहायता की।

उन्होंने एक ऐसे कार्यदल की तरह काम किया, जो परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालने में सक्षम होने के साथ-साथ नेतृत्वकर्ता के रूप में काम के लिए आगे आईं। ये पूछे जाने पर कि क्या महामारी के दौरान वह खुद को असुरक्षित महसूस कर रही थीं, इसके जवाब में अनीता देवी का कहना था, जब डॉक्टर और नर्स अपने परिवारों को छोड़कर दिन-रात काम कर सकते हैं, तो उसी तरह से हम क्यों अपने स्तर पर छोटा सा योगदान नहीं दे सकते?

दूसरी ओर औरतों के स्वयं-सहायता समूह (एसएचजी) ने भी इस दौरान अपने लक्ष्यों को पुनर्निर्देशित किया। ग्रामीण भारत में कमजोर आर्थिक वर्ग की महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए काम करने वाले स्वयं सहायता समूह वर्तमान में निम्न वर्गीय लोगों के लिए सबसे बड़े सांस्थानिक मंचों में एक है, जो छोटी बचतों को प्रोत्साहित करते हुए ऋण की सुविधा प्रदान करता है। पूरे भारत में 7 करोड़ से भी ज्यादा महिलाएं 69 लाख से भी ज्यादा स्वयं सहायता समूहों की सदस्य हैं।

स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने फेसमास्क बनाए, सामुदायिक रसोई चलाई, लोगों तक आवश्यक खाद्य सामग्रियां पहुंचाईं और आम जनता के बीच स्वास्थ्य और साफ-सफाई के मुद्दे पर जागरूकता अभियान चलाया और गलत सूचनाओं के प्रसार को रोकने का काम किया।

महिला उद्यमी

मुस्कानबेन वोहरा गुजरात के आणंद जिले में महिला बुनकरों के एक समूह का हिस्सा हैं, जिन्हें स्वरोजगार महिला संघ (सेल्फ एंप्लॉयड वूमेंस एसोसिएशन) द्वारा इंटरनेट आधारित कौशल में प्रशिक्षित किया गया है। महामारी के दौरान, इन महिलाओं ने अपने नए डिजिटल कौशल की सहायता से अपने उत्पादों की तस्वीरें ऑनलाइन अपलोड करने, ग्राहकों के व्हाट्सऐप समूह बनाने और खरीदारी के लिए डिजिटल भुगतान के विकल्प तैयार करने जैसे आधुनिक व्यापारिक मॉडल को अपनाने में महारत हासिल की। इनमें से कई औरतें लोगों से सीधा भुगतान लेने और संक्रमण का खतरा उठाने की बजाय पेटीएम, भीम ऐप और गूगल पे जैसे प्लेटफॉर्मों के जरिए भुगतान लेने में सक्षम रहीं।

मुस्कानबेन गर्व से कहती हैं, महामारी के दौरान हम बिना बाधाओं के काम करने में सक्षम रहे और हम घरेलू सजावट का अपना सारा माल बेचने में भी सफल रहे।

अनौपचारिक सेवा क्षेत्र में काम कर रहीं औरतों, जिसमें दर्जी, कारीगर, विक्रेता और छोटे और सीमांत किसान शामिल हैं, की सहायता करता है।

वह जो बाधाओं को तोड़कर आगे बढ़ीं

बत्तीस वर्षीय कौसर तीन बच्चों की मां हैं, जो परिवार के नौ और सदस्यों के साथ पूर्वी हैदराबाद में रहती हैं। कौसर महज 17 साल की थी, जब उनकी शादी हुई और उसके कारण उनकी पढ़ाई छूट गई। भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे नई मंजिल कार्यक्रम ने उन्हें अपनी पढ़ाई पूरी करने और रोजगार के अनुकूल नए कौशल सीखने का मौका दिया।

महामारी के दौरान, नई मंजिल कार्यक्रम से मिले प्रशिक्षण के बल पर कौसर एक सरकारी अस्पताल में बेड साइड सहायक की नौकरी हासिल करने में सफल रहीं, जहां उन्हें मरीजों की देखभाल का काम करना था।

महिलाओं का एक और समूह बैंक सखी विशेष रूप से महामारी के दौरान काफी सक्रिय रहा है। विश्व बैंक द्वारा समर्थित इस समूह की स्थापना 2016-17 के दौरान राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के तहत की गई थी। महामारी की मुश्किल परिस्थितियों में इन महिलाओं ने अपनी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जहां उन्होंने सरकार द्वारा लोगों के बैंक खाते में डाले गए पैसे को निकालने में आम लोगों की सहायता की ताकि वे कोरोना संकट से जूझने में उनकी मदद कर सकें।

विश्व बैंक ने ऐसे कई कार्यक्रमों का समर्थन किया है, जिसके द्वारा औरतों ने घरों से बाहर निकल कर ऐसे क्षेत्रों में नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाई है, जिसे परंपरागत रूप से पुरुषों का कार्यक्षेत्र माना जाता रहा है। उदाहरण के लिए, केरल में सिंचाई विभाग की महिला इंजीनियर बांधों के प्रबंधन, नहरों के निर्माण और उनके रखरखाव की जिम्मेदारियां संभालती हैं। यह भारत का एक ऐसा राज्य है जिसकी साक्षरता दर देश भर में सबसे ज्यादा है, जहां सरकारी कॉलेजों के सिविल इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों में दाखिला लेने के लिए लड़कियां भी समान रूप से लड़कों की तरह कठिन प्रवेश परीक्षा में हिस्सा लेती हैं।

महिलाएं समाज की आधी आबादी हैं और समाज के निर्माण में सशक्त भूमिका निभाती हैं, फिर भी उन्हें वो दर्जा नहीं मिल पाता जिसकी वो हकदार हैं। महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव को दूर करके समाज में उन्हें बराबरी का हक दिलाने के उद्देश्य से हर साल 8 मार्च को महिला दिवस मनाया जाता है। इसके अलावा महिला दिवस का मकसद महिलाओं को उनके हक के प्रति जागरुक करना भी है।

महिलाओं के अधिकार:-

समान वेतन पाने के अधिकार

एक समय था जब भारत में महिलाओं की भूमिका सिर्फ घर तक ही सीमित थी, लेकिन आज के समय में महिलाएं कामकाजी हैं और हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। समान पारिश्रमिक अधिनियम के अनुसार महिलाओं को पुरुषों के समान ही वेतन पाने का अधिकार दिया गया है। वेतन या मजदूरी के आधार पर महिलाओं के साथ किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जा सकता।

पुश्तैनी संपत्ति पर अधिकार

पहले केवल बेटों को ही पुश्तैनी संपत्ति पर प्रॉपर्टी में अधिकार मिलता था। ऐसा माना जाता था कि शादी के बाद महिला अपने पति की संपत्ति से जुड़ जाती है और पिता की संपत्ति पर उसका अधिकार समाप्त हो जाता है। लेकिन अब ऐसा नहीं है। हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत नए नियमों के आधार पर अब पुश्तैनी संपत्ति पर महिला और पुरुष दोनों को बराबर का हक दिया जाता है।

मातृत्व संबंधी अधिकार

आज के समय में ज्यादातर महिलाएं कामकाजी हैं, ऐसे में कामकाजी महिलाओं को मातृत्व संबंधी कुछ अधिकार दिए गए हैं। मातृत्व लाभ अधिनियम के तहत एक नई मां के प्रसव के बाद 6 महीने तक महिला के वेतन में कोई कटौती नहीं की जाती और वो फिर से काम शुरू कर सकती हैं।

अर्जित संपत्ति का अधिकार

महिला ने अगर खुद कोई संपत्ति अर्जित की है तो कानूनन उसे ये अधिकार है कि वो जब चाहे अपनी संपत्ति को बेच सकती है या अगर किसी के नाम करना चाहे तो कर सकती है। उसके फैसलों में दखल देने का अधिकार किसी को भी नहीं है। महिला चाहे तो उस संपत्ति से बच्चों को बेदखल भी कर सकती है।

घरेलू हिंसा से सुरक्षा का अधिकार

घर में रह रही कोई भी महिला जैसे मां या बहन आदि को घरेलू हिंसा से बचाने के लिए ये कानून बनाया गया है। अगर किसी महिला के साथ उसका पति, लिव इन पार्टनर या कोई रिश्तेदार घरेलू हिंसा करता है तो महिला या उसकी ओर से कोई भी शिकायत दर्ज करा सकता है। इसके अलावा कामकाजी महिलाओं को कार्यस्थल (वर्कप्लेस) पर हुए यौन उत्पीड़न को लेकर शिकायत दर्ज कराने का हक है। उत्पीड़न की शिकार हुई किसी भी महिला को मुफ्त कानूनी मदद पाने का पूरा अधिकार दिया गया है।

आज नारी की स्थिति का वर्णन अलग-अलग वर्गों में किया जा सकता है। कहीं पर वह सशक्त है, समर्थ है तो कहीं दोनों ही नहीं परंतु सुखी है। शेष नारियां अधीन हैं। हां, पुरुषों के अधीन। वह स्वयं कोई निर्णय नहीं ले सकती या उसे इस योग्य माना ही नहीं जाता। कुछ नारियां उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिसे सशक्त नारी का दर्जा दिया जा सकता है। वह अपने हित, अपनी हैसियत, अपना लक्ष्य स्वयं तय करती है, यानी वह समर्थ है। वह इरादों की पक्की है। आज नारी में काफी बदलाव आ गया है। अब नारी महज रसोई तक सिमटी नहीं है, न ही वह भोग्या है। अब वह पुरुष से कहीं आगे निकल चुकी है।

***

नराकास की बैठकें

नराकास, धमतरी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धमतरी की समीक्षा बैठक का आयोजन दिनांक 14 मार्च, 2024 को नराकास अध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश की अध्यक्षता में किया गया। समिति सदस्यों द्वारा किए जा रहे कार्यों को रेखांकित करते हुए अध्यक्ष महोदय ने राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने हेतु समिति द्वारा विभिन्न नवाचारों को अपनाने, पत्राचार में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने आदि के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान किया।

नराकास, राजनांदगांव

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजनांदगांव की समीक्षा बैठक का आयोजन दिनांक 15 मार्च, 2024 को नराकास अध्यक्ष श्री सर्वेन्द्र मलिक की अध्यक्षता में किया गया। इस बैठक में अध्यक्ष महोदय ने समिति द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा के साथ-साथ आगामी समय में प्रस्तावित कार्यों की रूपरेखा पर चर्चा की। साथ ही सदस्य कार्यालयों द्वारा हिंदी पत्राचार बढ़ाने की दिशा में प्रयास करने का अनुरोध किया।

कासा एवं कारोबार विकास

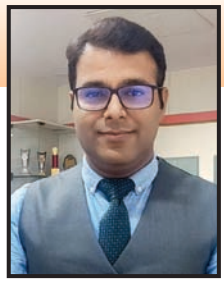

डॉ. सत्येंद्र कुमार
शाखा प्रमुख
प्रतापगढ़ शाखा, उदयपुर क्षेत्र

ग्राहक-केंद्रित प्रतिविक्रय (क्रॉस-सेलिंग) व बैंकिंग उत्पादों के माध्यम से बेहतर ग्राहक अनुभव

किसी भी बैंक के वित्तीय स्वास्थ्य का आकलन करने के लिए कासा अनुपात एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण मैट्रिक्स है। कासा, चालू खाता और बचत खाता का संक्षिप्त रूप है, जो कि बैंक के देयता पोर्टफोलियो का एक आवश्यक घटक है। चालू खाते जमाकर्ताओं को तत्काल तरलता प्रदान करते हैं, जबकि बचत खाते मामूली ब्याज दर प्रदान करते हैं। बैंकिंग में उचित मात्रा में कासा की हिस्सेदारी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जिसके महत्त्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। ये खाते न केवल बैंकों को धन का एक स्थिर स्रोत प्रदान करते हैं बल्कि उनकी ऋण गतिविधियों के लिए उत्प्रेरक के रूप में भी काम करते हैं।

उच्च कासा जमा से बैंक की धनराशि की लागत कम हो जाती है और परिणामस्वरूप लाभप्रदता में वृद्धि होती है। उच्च कासा अनुपात यह दर्शाता है कि एक बैंक अपने परिचालन के वित्तपोषण के लिए कम लागत वाली जमाओं पर अधिक निर्भर करता है। संक्षेप में, कासा खाते सावधि जमा या आवर्ती जमा की तुलना में बैंकों के लिए धन का एक सस्ता स्रोत है। यह लागत लाभ बैंक के शुद्ध ब्याज मार्जिन और लाभप्रदता पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालता है।

कासा संवर्धन एवं कारोबार विकास में प्रतिविक्रय (क्रॉस-सेलिंग) की भूमिका :-

प्रतिविक्रय मौजूदा ग्राहकों को अतिरिक्त वित्तीय उत्पादों या सेवाओं को बढ़ावा देने और बेचने के लिए बैंकों द्वारा नियोजित एक रणनीतिक दृष्टिकोण है। यह रणनीति ग्राहकों के साथ पहले से स्थापित विश्वास और संबंधों का लाभ उठाकर उन्हें सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करती है। बैंकों के लिए अपना राजस्व और लाभप्रदता बढ़ाने के लिए प्रतिविक्रय एक बहुत ही प्रभावी तरीका है। मैकिन्से एंड कंपनी के एक अध्ययन के अनुसार, प्रतिविक्रय से एक वर्ष के भीतर कासा जमा में 15-25% की वृद्धि हो सकती है। एक्सेंचर के एक अध्ययन में पाया गया कि बैंकों के लिए ग्राहक लाभप्रदता बढ़ाने के लिए प्रतिविक्रय सबसे प्रभावी तरीका है। वहीं डेलॉइट के एक अध्ययन में पाया गया कि मजबूत प्रतिविक्रय क्षमताओं वाले बैंकों में ग्राहक संतुष्टि और बैंक के प्रति निष्ठा अधिक होती है। यह आंकड़ा कासा वृद्धि पर प्रतिविक्रय के पर्याप्त प्रभाव को दर्शाता है।

1. कासा जमा में वृद्धि :-

प्रतिविक्रय ग्राहकों को बैंक के साथ कासा (चालू खाता एवं बचत खाता) खोलने और बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बैंक किसी ग्राहक को म्यूचुअल फंड खाता, क्रेडिट कार्ड या निवेश उत्पाद प्रतिविक्रय करता है, तो ग्राहक क्रेडिट कार्ड पर भुगतान करने के लिए या म्यूचुअल फंड निवेश करने व इसकी आय के लिए अपने कासा खाते का उपयोग करने की अधिक संभावना रखता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ग्राहक के लिए किसी अन्य खाते की तुलना में अपने कासा खाते से भुगतान करना या निवेश करना अधिक सुविधाजनक होता है। उसी प्रकार बैंक जब कोई बंधक ऋण (मॉर्गेज लोन) प्रदान करता है, तो वह उसी ग्राहक को बचत खाता या सावधि जमा खाता प्रतिविक्रय कर सकता है। बैंक के साथ ग्राहक के संबंधों के भीतर उत्पादों के इस विविधीकरण से कासा जमा में वृद्धि होती है। यह बैंकों के लिए एक बहुत ही अच्छी रणनीति है। ग्राहकों के पास अपने धन का प्रबंधन करने के लिए एक सुविधाजनक स्थान है, जबकि बैंकों को कासा खातों से जुड़ी स्थिर, कम लागत वाली जमा राशि से लाभ होता है।

2. कासा पोर्टफोलियो का विविधीकरण :-

प्रतिविक्रय बैंकों को अपने कासा पोर्टफोलियो में विविधता लाने में सक्षम बनाती है। विभिन्न उत्पाद, जैसे वेतन खाते, विद्यार्थी खाते और बुनियादी बचत खाते, विभिन्न ग्राहक वर्गों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। इन विशिष्ट उत्पादों को प्रतिविक्रय करके, बैंक एक विविध कासा आधार बनाते हैं जो अधिक स्थिर होता है और अक्सर होने वाले आर्थिक उतार-चढ़ाव के प्रति कम संवेदनशील होता है।

3. ग्राहक संतुष्टि में वृद्धि व बेहतर ग्राहक प्रतिधारण :-

प्रतिविक्रय से बैंकों को उनकी सभी वित्तीय जरूरतों के लिए

वन-स्टॉप शॉप की पेशकश करके ग्राहकों की संतुष्टि में सुधार करने में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, जब कोई बैंक किसी ग्राहक को म्यूचुअल फंड खाता, बचत खाता और क्रेडिट कार्ड प्रदान करता है, तो ग्राहक को अपनी वित्तीय जरूरतों के लिए किसी और बैंक जाने की आवश्यकता नहीं होती है। संतुष्ट ग्राहकों द्वारा अपने बैंक के साथ बैंकिंग संबंध लंबे समय तक जारी रखने की संभावना अधिक होती है। प्रतिविक्रय मजबूत ग्राहक संबंध और बैंक के प्रति निष्ठा को बढ़ाने में मदद करता है। बैंक द्वारा समूहीकृत उत्पादों की पेशकश करके, ग्राहकों को बैंक के साथ अपने रिश्ते को बनाए रखने के महत्त्व व फ़ायदों का एहसास होता है, जिससे उनके कासा खातों की लंबी अवधि और उनके जमा में निरंतर वृद्धि सुनिश्चित होती है। हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू अध्ययन में पाया गया कि ग्राहक प्रतिधारण में केवल 5% सुधार से मुनाफा 25-95% तक बढ़ सकता है। यह ग्राहकों की संतुष्टि और प्रतिधारण पर प्रतिविक्रय के वित्तीय प्रभाव पर प्रकाश डालता है। प्रतिविक्रय ग्राहकों की संतुष्टि और निष्ठा में सुधार करने का भी एक अच्छा तरीका है।

4. नए ग्राहकों को आकर्षित करना व बेहतर ग्राहक अनुभव :-

प्रतिविक्रय से बैंकों को ग्राहकों को उत्पादों और सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला की पेशकश करके अपने व्यवसाय की वृद्धि करने में मदद मिलती है। इससे बैंकों को नए ग्राहकों को आकर्षित करने और मौजूदा ग्राहकों को बनाए रखने में मदद मिलती है। यह विभिन्न चैनलों के माध्यम से किया जा सकता है, जैसे प्रत्यक्ष विपणन, शाखा कर्मचारी या डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म। प्रतिविक्रय बैंकों को ग्राहकों को उन उत्पादों और सेवाओं की पेशकश करके ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने में मदद कर सकती है जिनकी उन्हें आवश्यकता है और वे चाहते हैं। जब कोई ग्राहक अपने बैंक से प्राप्त उत्पादों और सेवाओं से खुश होता है, तो वह अपने दोस्तों और परिवार को बैंक की सिफारिश करने की अधिक संभावना रखता है।

5. शुल्क आय में वृद्धि :-

उत्पादों और सेवाओं के प्रतिविक्रय से उत्पन्न शुल्क से बैंक महत्त्वपूर्ण मात्रा में राजस्व अर्जित करते हैं। प्रतिविक्रय से बैंकों को अपनी शुल्क आय बढ़ाने में मदद मिल सकती है। उदाहरण के लिए, जब कोई बैंक किसी ग्राहक को क्रेडिट कार्ड बेचता है, तो उसे क्रेडिट कार्ड कंपनी से शुल्क मिलता है।

6. प्रतिस्पर्धात्मक लाभ :-

प्रभावी प्रतिविक्रय रणनीतियों को अपनाने वाले बैंक अपने ग्राहकों को वित्तीय समाधानों का एक व्यापक गुलदस्ता प्रदान करके प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त हासिल करते हैं। यह नए व्यवसाय को आकर्षित करता है और मौजूदा ग्राहकों को बनाए रखता है। इसके अलावा, जो बैंक सफलतापूर्वक प्रतिविक्रय करते हैं, वे बाज़ार में अपनी अलग पहचान बनाते हैं और वन-स्टॉप वित्तीय सेवा प्रदाता के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं।

7. जीवंत उदाहरण :-

प्रतिविक्रय के मामले में एचडीएफसी, आईसीआईसीआई व एसबीआई बैंक भारत के सबसे बड़े व सफल बैंकों में से एक है एवं सिटीग्रुप व जेपी मॉर्गन चेज़ दुनिया के सबसे बड़े बैंकों में से एक है। इन बैंकों का अपने मौजूदा ग्राहकों को अपने उत्पादों के प्रतिविक्रय पर विशेष ध्यान है। ये बैंक व्यक्तिगत बैंकिंग, कॉर्पोरेट बैंकिंग, निवेश बैंकिंग और बीमा सहित उत्पादों और सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करते हैं। इन सभी बैंकों का अपने ग्राहक संबंध प्रबंधन (सीआरएम) व डिजिटल बैंकिंग पर विशेष ध्यान रहा है, इनके पास प्रतिविक्रय विशेषज्ञों की एक समर्पित टीम है, जोकि डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर ग्राहकों की जरूरतों को पहचानने और सही उत्पादों और सेवाओं की सिफारिश करने के लिए उनके साथ मिलकर काम करती है।

वित्तीय वर्ष 2022-23 में एचडीएफसी बैंक की कासा जमा 15.5% बढ़कर रु. 14.6 लाख करोड़ हो गई एवं प्रतिविक्रय अनुपात 3.5 था, जिसका अर्थ है कि प्रत्येक ग्राहक ने औसतन बैंक से 3.5 उत्पाद खरीदे। इससे बैंक को अपना कासा अनुपात 52.2% तक बढ़ाने में मदद मिली। एसबीआई की कासा जमा 10.6% बढ़कर रु. 33.6 लाख करोड़ हो गई एवं प्रतिविक्रय अनुपात 2.8 था, जिससे बैंक को अपना कासा अनुपात 45.6% तक बढ़ाने में मदद मिली, वहीं आईसीआईसीआई बैंक की कासा जमा 17.6% बढ़कर रु. 10.8 लाख करोड़ हो गई एवं प्रतिविक्रय अनुपात 3.2 था, इससे बैंक को अपना कासा अनुपात 50.1% तक बढ़ाने में मदद मिली, जो बैंकिंग उद्योग में सबसे अधिक में से एक है। ।

वहीं दूसरी ओर वैश्विक बैंक जैसे जेपी मॉर्गन चेज, सिटीग्रुप दुनिया के सबसे बड़े बैंकों में से एक हैं, जिनका भी अपने ग्राहक संबंध प्रबंधन (सीआरएम) एवं उत्पादों और सेवाओं की प्रतिविक्रय पर विशेष ध्यान रहा है। 2022 में, जेपी मॉर्गन चेज़ की कासा जमा राशि 12% बढ़कर 3 ट्रिलियन हो गई एवं प्रतिविक्रय अनुपात 3.4 था, जिससे बैंक को अपना कासा अनुपात 51.2% तक बढ़ाने में मदद मिली, जबकि सिटीग्रुप की कासा जमा राशि 13% बढ़कर 2 ट्रिलियन हो गई एवं प्रतिविक्रय

अनुपात 3.2 था, इससे बैंक को अपना कासा अनुपात 49.5% तक बढ़ाने में मदद मिली। तीनों भारतीय बड़े बैंकों व दोनों वैश्विक बैंकों मे यह वृद्धि बैंक के म्यूचुअल फंड, बीमा और क्रेडिट कार्ड जैसे उत्पादों के प्रतिविक्रय पर ध्यान केंद्रित करने से प्रेरित रही है।

प्रभावी प्रतिविक्रय के लिए कार्यनीतियां :–

ऐसी कई सर्वोत्तम तरीके हैं जिनको अपनाकर बैंक अपने ग्राहकों को उत्पादों और सेवाओं की प्रतिविक्रय कर सकते हैं।

1. सही ग्राहकों को लक्षित करें :– बैंकों को अपने प्रतिविक्रय प्रयासों को उन ग्राहकों पर लक्षित करना चाहिए जिनकी उनके द्वारा पेश किए जा रहे उत्पादों और सेवाओं में रुचि होने की सबसे अधिक संभावना है।

2. ग्राहकों के लिए खरीदारी करना आसान बनाएं:– बैंकों को ग्राहकों के लिए उन उत्पादों और सेवाओं को खरीदना आसान बनाना चाहिए जिनकी वे प्रतिविक्रय कर रहे हैं। यह ऑनलाइन और मोबाइल बैंकिंग विकल्प प्रदान करके किया जा सकता है।

3. ग्राहक वर्गीकरण और विश्लेषण :– अपने ग्राहक आधार के वर्गीकरण और उनकी प्राथमिकताओं को समझने के लिए बैंक उन्नत विश्लेषण और डेटा माइनिंग तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं, जिससे ग्राहकों की ज़रूरतों और व्यवहारों की पहचान करके, प्रतिविक्रय प्रयासों को और अधिक प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किया जा सके।

4. वैयक्तिकृत पेशकशें :– बैंकों को प्रत्येक ग्राहक के लिए अपने प्रतिविक्रय ऑफर को वैयक्तिकृत करना चाहिए। इससे ऑफर ग्राहक के लिए अधिक प्रासंगिक और आकर्षक हो जाएंगे। व्यक्तिगत ग्राहकों के लिए ऑफ़र और सुझावों को तैयार करने से सफल प्रतिविक्रय की संभावना बढ़ जाती है। ग्राहक के वित्तीय व्यवहार, प्राथमिकताओं और जीवनचक्र की घटनाओं को समझने के लिए बैंक डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर सकते हैं। यह उन्हें ग्राहकों की जरूरतों के अनुरूप लक्षित ऑफर पेश करने में सक्षम बनाता है। एक्सेंचर के एक सर्वेक्षण में बताया गया है कि 75% ग्राहक ऐसे बैंक से खरीदारी करने की अधिक संभावना रखते हैं जो उन्हें नाम से पहचानता है, उनकी खरीदारी का इतिहास जानता है और उनकी प्राथमिकताओं के आधार पर सुझाव प्रदान करता है। यह प्रतिविक्रय में वैयक्तिकृत पेशकशों के महत्त्व को रेखांकित करता है।

5. प्रौद्योगिकी और स्वचालन :– ग्राहकों की जरूरतों और प्राथमिकताओं की पहचान करने के लिए बैंकों को डेटा और एनालिटिक्स का उपयोग करना चाहिए। इससे उन्हें अपने प्रतिविक्रय प्रयासों को अधिक प्रभावी ढंग से लक्षित करने में मदद मिलेगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग जैसी प्रौद्योगिकी में प्रगति, प्रतिविक्रय रणनीतियों को बदल रही है। बैंक ग्राहक डेटा और व्यवहार का विश्लेषण करने के लिए इन प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर रहे हैं, जिससे अधिक लक्षित और प्रभावी प्रतिविक्रय प्रयासों को सक्षम किया जा सके।

6. व्यवहारिक अर्थशास्त्र और न्यूरोमार्केटिंग :– व्यवहारिक अर्थशास्त्र और न्यूरोमार्केटिंग के लेंस के माध्यम से उपभोक्ता व्यवहार को समझना प्रतिविक्रय रणनीतियों को परिष्कृत करने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का लाभ उठाकर, बैंक ऐसे ऑफ़र डिज़ाइन कर सकते हैं जो अवचेतन स्तर पर ग्राहकों की आवश्यकताओं से साथ मेल खाते हैं, जिससे प्रतिविक्रय पहल की सफलता बढ़ जाती है।

चुनौतियां और नैतिक विचार :–

प्रतिविक्रय अत्याधिक फायदेमंद है, परंतु आक्रामक या भ्रामक रणनीति से संबंधित नैतिक चुनौतियां भी हैं। बैंकों को अपने बिक्री लक्ष्य हासिल करने और यह सुनिश्चित करने के बीच संतुलन बनाने की जरूरत है कि वे अपने ग्राहकों के सर्वोत्तम हित में काम कर रहे हैं। ग्राहकों की गोपनीयता और डेटा सुरक्षा की रक्षा के लिए प्रतिविक्रय को विभिन्न नियमों और दिशानिर्देशों का पालन करना होता है। प्रभावी प्रतिविक्रय और विनियामक अनुपालन के बीच सही संतुलन बनाना बैंकों के लिए एक सतत चुनौती है।

प्रतिविक्रय बैंकों की एक मौलिक रणनीति है जो कासा संतुलन को बढ़ाने और बैंकिंग उद्योग में समग्र व्यवसाय विकास को चलाने की अपार संभावनाएं रखती है। ग्राहकों की जरूरतों के साथ उत्पादों को संरेखित करके, डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि का लाभ उठाकर और नैतिक प्रथाओं को नियोजित करके, बैंक ग्राहकों और संस्थान दोनों के लिए उपयोगी परिदृश्य बनाने के लिए प्रतिविक्रय को अनुकूलित कर सकते हैं। केस स्टडी और उदाहरण प्रतिविक्रय के ठोस लाभों को प्रदर्शित करते हैं, बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के भविष्य में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका पर जोर देते हैं। बैंकों के लिए अपने कासा अनुपात, व्यवसाय वृद्धि और ग्राहक अनुभव को बढ़ाने के लिए प्रतिविक्रय एक प्रभावी रणनीति है। बैंक विभिन्न चैनलों, जैसे प्रत्यक्ष विपणन, शाखा कर्मचारी या डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से प्रतिविक्रय रणनीतियों को लागू कर सकते हैं।

***

विश्व हिंदी दिवस

अंचल कार्यालय, पुणे

दिनांक 10 जनवरी, 2024 को अंचल कार्यालय, पुणे एवं फर्ग्युसन कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी के अवसर पर फर्ग्युसन कॉलेज में हिंदी मेरे झरोखे से...विश्व स्तरीय कविताओं का एक अनोखा संगम.. कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में हिंदी विभाग के प्रमुख श्री संतोष धोतरे एवं मराठी विभाग के प्रमुख के साथ विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुति दी गई।

अंचल कार्यालय, कोलकाता

दिनांक 11 जनवरी, 2024 को अंचल कार्यालय कोलकाता द्वारा विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर लेडी ब्रेबोर्न महाविद्यालय में प्राध्यापिका डॉ. श्रीमती शिउली सरकार की अध्यक्षता में हिंदी की व्यापकता और तकनीक के विविध आयाम परिपूर्ण संचार माध्यम के लिए कारगर है विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में निर्णायकों के रूप में श्री सत्येंद्र शर्मा, मुख्य प्रबंधक, यूको बैंक तथा श्रीमती शिवानी तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक, केनरा बैंक को आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 35 विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभागिता की गई तथा श्रेष्ठ पांच वक्ताओं को बैंक की ओर से प्रमाणपत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए गए।

क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर

दिनांक 10 जनवरी, 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री सय्यद एजाज अली ने की। इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के लिए ऑनलाइन माध्यम से हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा

क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा में 10 जनवरी, 2024 को विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख श्री योगेश यादव व उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री एस.पी. शारदा व सभी कार्यपालक एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, फतेहपुर

दिनांक 10 जनवरी, 2024 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, फतेहपुर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे श्री शिवशरण बंधु हथगामी का स्वागत श्री डी. के. श्रीवास्तव, क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा पुस्तक एवं शॉल से किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 10 जनवरी, 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर द्वारा क्षेत्रीय प्रमुख, श्री सुबोध दि इनामदार की अध्यक्षता में विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान स्टाफ सदस्यों हेतु बूझो तो जाने प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो

दिनांक 10 जनवरी, 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो क्षेत्र द्वारा कोलकाता विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कोलकाता विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में हिंदी विभाग, कोलकाता विश्वविद्यालय के विभाग प्रमुख, श्री राम प्रवेश रजक एवं प्रेसीडेंसी कॉलेज, हिंदी विभाग के प्रोफेसर, श्री ऋषि भूषण चौबे और सेंट पॉल कॉलेज, हिंदी विभाग के प्रोफेसर, श्री कमलेश पांडे उपस्थित थे। कोलकाता विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने बारी-बारी से अपनी प्रस्तुति दी ।

विश्व हिंदी दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय, मेरठ

दिनांक 10 जनवरी, 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, मेरठ द्वारा विश्व हिंदी दिवस के अवसर विश्व पटल पर हिंदी भाषा का प्रसार विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी श्री हरीश कुमार अरोड़ा, क्षेत्रीय प्रमुख, मेरठ की अध्यक्षता में संपन्न हुई। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में साहित्यकार श्री डॉ. रामगोपाल भारतीय, सह आचार्य, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ डॉ. विवेक सिंह तथा डॉ. गौरव चौहान ने अपने विचार व्यक्त किए। उक्त कार्यक्रम में श्री अनुज चित्रांश, उप क्षेत्रीय प्रमुख व अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

दिनांक 10 जनवरी, 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर स्टाफ सदस्यों के लिए ''हिंदी मेरी शान'' प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, गया

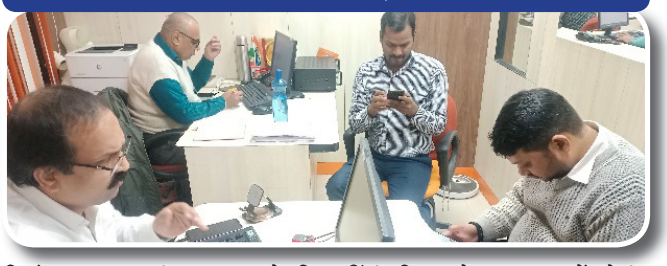

दिनांक 11 जनवरी, 2024 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में क्षेत्रीय कार्यालय, गया के स्टाफ सदस्यों के लिए हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ।

क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट

दिनांक 10 जनवरी, 2024 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट द्वारा स्टाफ सदस्यों के लिए हिंदी ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। श्री अंजनी कुमार सिंगल, क्षेत्रीय प्रमुख, राजकोट क्षेत्र द्वारा विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी

दिनांक 03 फरवरी, 2024 को पणजी क्षेत्र द्वारा विश्व हिंदी दिवस मनाया गया एवं इस अवसर पर विश्व में हिंदी का प्रभाव विषय पर चर्चा –परिचर्चा का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय एवं शाखाओं के स्टाफ सदस्यों द्वारा सहभागिता की गयी।

क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल के स्टाफ सदस्यों हेतु हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विजेता स्टाफ सदस्यों को क्षेत्रीय प्रमुख श्री बलजीत सिंह तथा उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री नीरज पांडे द्वारा दिनांक 24 जनवरी, 2024 को शील्ड देकर सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

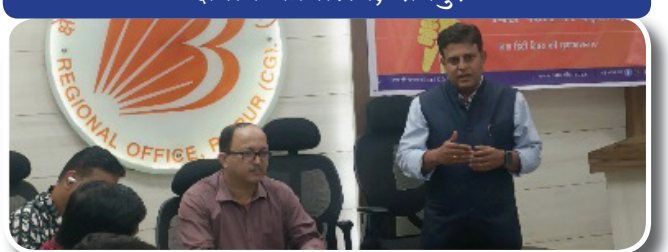

दिनांक 10 जनवरी, 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर द्वारा विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्यों ने प्रतिभागिता की। इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री दीपक मिश्रा और क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

साहित्यिक नगरी वाराणसी

आनंद सिंह
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, सुल्तानपुर

क्या कहूं इस शहर को? बाबा विश्वनाथ की नगरी या एक साहित्यिक धरोहर या फिर एक प्रमुख पर्यटन केंद्र या फिर देश की सांस्कृतिक राजधानी। इस शहर को 'भगवान शिव की नगरी', 'दीपों का शहर', 'ज्ञान नगरी' आदि भी कहा जाता है। उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में गंगा नदी के किनारे बसा यह शहर अपने आप में एक धरोहर है। यह शहर काशी और बनारस के नाम से भी जाना जाता है। यह एक ऐतिहासिक नगरी है जिसका वर्तमान तेजी से विकसित हो रहा है। यह शहर हिंदुओं के सात पवित्र शहरों में से एक है।

संक्षिप्त इतिहास: यह दुनिया के सबसे पुराने बसे हुए शहरों में से एक है। इसका प्रारंभिक इतिहास मध्य गंगा घाटी में पहली आर्य बस्ती का है। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत तक, वाराणसी आर्य धर्म और दर्शन का केंद्र था और एक वाणिज्यिक और औद्योगिक केंद्र था जो अपने मलमल और रेशम के कपड़े, इत्र, हाथीदांत के काम और मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध था। यह धार्मिक, शैक्षिक और कलात्मक गतिविधियों का केंद्र बना रहा, जैसा कि प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन-सांग ने प्रमाणित किया है। ब्रिटिश शासन के तहत यह एक वाणिज्यिक और धार्मिक केंद्र बना रहा और 1910 में अंग्रेजों ने वाराणसी को एक नया भारतीय राज्य बना दिया (1949 तक)। वाराणसी में भारत के सबसे धार्मिक नदी तट हैं, जिसमें स्नान के लिए मीलों लंबे घाट हैं; तीर्थस्थलों, मंदिरों और महलों की एक शृंखला तट से ऊपर की ओर बढ़ती है। बहुत से लोग वहां बुढ़ापे में मरने की आशा करते हैं। यह सदियों से हिंदू शिक्षा का केंद्र रहा है, इसमें बहुत सारे स्कूल और अनगिनत ब्राह्मण पंडित हैं। यहां तीन विश्वविद्यालय हैं जिनमें बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (1915) विश्व विख्यात है। कला, शिल्प, संगीत और नृत्य का केंद्र, यह सोने और चांदी, रेशम, लकड़ी के खिलौने, कांच सेस बनी चूड़ियों और पीतल के बर्तनों के लिए भी प्रसिद्ध है।

आध्यात्मिक नगरी: काशी को आध्यात्मिक नगरी भी कहा जाता है। हर तरफ घाटों से घिरे, इस विराट शहर में कई घाट हैं जैसे दशाश्वमेध घाट, अस्सी घाट, मान मंदिर घाट, मणिकर्णिका घाट और ललिता घाट। जिस घाट पर सबसे अधिक पर्यटक आते हैं वह अस्सी घाट है जो इस पवित्र शहर के दक्षिणी भाग में है। वाराणसी के सारनाथ नामक स्थान पर भगवान बुद्ध ने सर्वप्रथम अपना उपदेश दिया था। यहां भगवान बुद्ध के कई मठ (बौद्ध मंदिर) स्थित हैं जहां प्रत्येक वर्ष दस लाख से अधिक तीर्थयात्री आते हैं।

वाराणसी का साहित्यिक इतिहास: वाराणसी का साहित्यिक इतिहास अत्यंत सुदृढ़ है। इस नगर ने इतने साहित्यिक रत्न दिए हैं जैसे कि मानो यह देश की साहित्यिक राजधानी हो। वाराणसी के कुछ प्रमुख रचनाकर निम्नलिखित हैं:

तुलसीदास: तुलसीदास का जन्म सन् 1511 में माना जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म स्थान विवादित है। अधिकांश इतिहासकार इनका जन्म स्थान कासगंज या चित्रकूट के आस पास मानते हैं। तुलसीदास भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। अपने जीवन के अंतिम कुछ साल उन्होंने काशी में बिताया तथा 3 अगस्त 1623 को इनकी मृत्यु काशी में हुई। गोस्वामी तुलसीदास ने हिन्दू धर्म का परम-पूज्य ग्रंथ रामचरितमानस यहीं काशी में लिखा था।

प्रमुख रचनाएं: रामचरितमानस, गीतावली, कृष्ण-गीतावली, पार्वती-मंगल, विनय-पत्रिका, जानकी-मंगल, रामललानहछू, दोहावली, वैराग्यसंदीपनी, रामाज्ञा-प्रश्न, सतसई, बरवै रामायण, कवितावली, हनुमानबाहुक आदि।

कबीर: कबीर दास का जन्म सन् 1398 में वाराणसी में हुआ था। कबीर दास भक्ति काल के स्तंभ हैं। कबीर के दोहे इतने लोकप्रिय हैं कि आज भी इनके दोहे जीवन मूल्यों और सिद्धांतों के लिए सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। वे एक सर्वोच्च ईश्वर में विश्वास रखते थे। उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों, कर्मकांड, अंधविश्वास की निंदा की और सामाजिक बुराइयों की कड़ी आलोचना की। उनके जीवनकाल के दौरान हिन्दू और मुसलमान दोनों ने उनका अनुसरण किया। कबीर का एक दोहा:

साईं इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाए।
मैं भी भूखा न रहूं, साधू न भूखा जाए ।।

प्रमुख रचनाएं: बीजक, कबीर रचनावली, कबीर साखी, कबीर शब्दावली, कबीर दोहवाली, कबीर ग्रंथावली, कबीर सागर आदि।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र: भारतेन्दु का जन्म 9 सितंबर, 1850 को वाराणसी में हुआ था। भारतेन्दु ने 15 वर्ष की आयु से ही लिखना आरंभ कर दिया था। इन्हें आधुनिक हिन्दी साहित्य का जनक कहा जाता है। हिन्दी साहित्य के विद्वानों ने इन्हें भारतीय नवजागरण का अग्रदूत कहा है। भारतेन्दु ने अपनी कलम से अंग्रेजी शासन की खूब खिंचाई की। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में भारतेन्दु का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उनकी एक पंक्ति:

भारत के भुज बल जग रच्छित, भारत विद्या लहि जग सिच्छित।
भारत तेज जगत विस्तारा, भारत भय कंपिथ संसारा।

प्रमुख रचनाएं: भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी, सत्य हरिश्चन्द्र, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, हिंदी भाषा, कश्मीर कुसुम, काशी, मणिकर्णिका, बसंत, ग्रीष्म ऋतु, वर्षा काल, बद्रीनाथ की यात्रा।

प्रेमचंद: प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी के लमही नमक गांव में हुआ था। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव है। हिंदी कहानी और उपन्यास के लिए प्रेमचंद का योगदान अतुल्य है और यही कारण है कि आपको हिंदी कहानी और उपन्यास का सम्राट कहा जाता है। आपकी कहानियों और उपन्यासों ने विश्व स्तर पर ख्याति प्राप्त की है तथा आपकी अनेक रचनाओं का कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया है। सन् 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान प्रेमचंद महात्मा गांधी के साथ खड़े थे।

प्रमुख रचनाएं: गोदान, गबन, प्रेमाश्रम, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, निर्मला, प्रतिज्ञा, पूस की रात, दो बैलों की आत्मकथा, ईदगाह, नमक का दारोगा, ठाकुर का कुंआ, पंच परमेश्वर, कफन आदि। प्रेमचंद की कहानियां मानसरोवर में संकलित हैं।

जयशंकर प्रसाद: जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी, 1889 को काशी में हुआ था। प्रसाद जी छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। प्रसाद जी ने हिंदी की सभी विधाओं में रचना की है। वे एक प्रमुख कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार तथा निबंध-लेखक थे। साहित्यकार प्रसाद जी को महाकवि मानते हैं। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत-अध्यापक महामहोपाध्याय पं. देवीप्रसाद शुक्ल कवि-चक्रवर्ती को प्रसाद जी का काव्यगुरु माना जाता है।

प्रमुख रचनाएं: कामायनी, आंसू, प्रेम पथिक, कल्याणी-परिणय, विशाख, जनमेजय का नागयज्ञ, कामना, प्रायश्चित्त, स्कंदगुप्त, अजात-शत्रु, एक-घूंट, ध्रुवस्वामिनी, झरना, चित्राधार, करूणालय, महाराणा का महत्त्व, कानन-कुसुम, प्रेम-पथिक, लहर, और प्रसाद-संगीत, कंकाल, इरावती, प्रतिध्वनि, छाया, आकाशदीप, आंधी और इंद्रजीत।

सुदामा पाण्डेय 'धूमिल': धूमिल का जन्म वाराणसी के स्थित खेवली गांव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम सुदामा पांडेय था। धूमिल नाम से वे कवितायें लिखते थे। धूमिल जी हिंदी समकालीन कविता के श्रेष्ठ कवियों में एक है। इन्होंने भारतीय राजतंत्र और व्यवस्था पर तीखा प्रहार किया है।

प्रमुख रचनाएं: मोचीराम, बीस साल बाद, पटकथा, रोटी और संसद, लोहे का स्वाद आदि।

सांस्कृतिक राजधानी: भारत में हिन्दू धर्म एवं सभ्यता के केंद्र के रूप में काशी अर्थात् वाराणसी का विशेष महत्त्व है। बनारस की कई विशेषताएं हैं एवं इसके कई नाम हैं जो इसे भारत की सांस्कृतिक राजधानी बनाता है। पुरातत्व, पौराणिक कथाओं, भूगोल, संस्कृति आध्यात्म, कला, वाराणसी का इतिहास, उत्तरवाहिनी गंगा पर अपनी अनूठी स्थिति, भारत के इतिहास के माध्यम से इसकी यात्रा, भगवान शंकर के त्रिशूल पर बसी इस नगरी की आदि विशेषताएं इसे सबसे पुराना जीवित शहर होने का महत्त्व प्रदान करती हैं। प्राचीन शिल्प के साथ, बनारस आधुनिक उद्योगों में भी पीछे नहीं रहा है। यह संगीत, कला, नाटक और मनोरंजन का शहर है। बनारस अपनी संगीत परंपरा गायन एवं वादन दोनों के लिए और ख्यातिलब्ध संगीतकारों के लिए मशहूर रहा है। बनारस घराने की अपनी खुद की नृत्य एवं गीत परंपरा है। यहां लोक संगीत और नाटक (विशेष रामलीला) की बहुत पुरानी परंपरा मिलती है। यह संगीत समारोहों, मेलों और त्यौहारों तथा अखाड़ों एवं खेल की भी समृद्ध परंपरा से परिपूर्ण है।

पर्यटन केंद्र: वाराणसी भारत के सबसे प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। यह शहर लाखों घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करता है। शहर भर के मंदिर तीर्थयात्रियों को आकर्षित करते हैं। सारनाथ के घाट और बौद्ध स्थल देश विदेश से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। वाराणसी दुनिया के सबसे पुराने शहरों में से एक है, जो इसे सांस्कृतिक विरासत से समृद्ध बनाता है। यह शहर घाटों, मंदिरों, संग्रहालयों और कई पौराणिक स्थानों को समाहित किए हुए जीवंत शहर है।

****

इकिगाई

रवि दिव्य
व्यवसाय सहायक
खासपुर शाखा, पटना क्षेत्र

'इकिगाई' मूल रूप से स्पेनिश भाषा में लिखी गई पुस्तक है। अब तक इस इस किताब का 57 भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है। इकिगाई किताब के लेखक हैं हेक्टर गार्सिया। उनका जन्म स्पेन में हुआ था और उनके पास स्पेन तथा जापान दोनों देशों की नागरिकताएं थीं। उन्हें जापानी संस्कृति का विशेष लेखक कहा जाता है। इकिगाई दुनिया की सबसे ज्यादा भाषाओं में अनूदित की जाने वाली पुस्तक है, अगर आप दीर्घायु होने और खुशहाल जीवन जीने का जापानी रहस्य जानना चाहते हैं तो यह किताब आपके लिए है।

''ऐसा कोई भी काम जिसे करने से आपको आनंद या खुशी का एहसास हो, जिससे आप लोगों की मदद कर सकें, जो काम आपको नई पहचान दिला सके और जिस काम को आप अपना व्यवसाय बनाकर पैसा कमा सकें। असल में वही काम आपका इकिगाई है।''

इकिगाई की पहचान कैसे करें?

208 पन्नों की इस किताब का हर अंश अपने आप में जीवंत है। हम जैसे बैंककर्मी भी इस किताब से अपना इकिगाई पहचान सकते हैं और अपने जीवन की नीरसता, अगर कहीं है तो, उसे दूर कर सकते हैं।

अब सवाल ये उठता है कि हम अपने इकिगाई की पहचान कैसे करें?

अगर आपको अपना इकिगाई मालूम नहीं है तो आप कुछ तरीकों से इसका पता लगा सकते हैं। हर इंसान का इकिगाई अलग-अलग हो सकता है लेकिन इकिगाई की पहचान करने का तरीका हर इंसान के लिए समान होता है।

आप इन 4 तरीकों को अपनाकर अपने जीवन के उद्देश्य अर्थात् अपने इकिगाई की तलाश कर सकते हैं।

1. जुनून: क्या कोई ऐसा काम है जिसे करना आपको बेहद पसंद हो, जिसे करने में आपको मजा आता हो। जिसे आप बहुत अच्छी तरह से करते हों, जिसे करते समय आपको थकान भी महसूस ना हो, जिसको करने के लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं। वास्तव में ऐसे काम को ही हम जुनून कहते हैं। अब ये आपको देखना है कि आपका जुनून क्या है? अपने जुनून को जानना ही अपने इकिगाई को तलाश करने की दिशा में पहला कदम है।

2. पेशा: बारी आती है दूसरे कदम की। इस कदम में आपको देखना होगा कि जो काम आपका है, क्या उस काम के लिए लोग आपको पैसे दे सकते हैं या उस काम को करने से आपको पैसे मिल सकते हैं? अगर आपका जवाब हां है तो आप अपने जुनून को अपना बना सकते हैं। ऐसा करने से आपकी जिंदगी बहुत ही आसान हो जाएगी। कहने का अर्थ मात्र इतना है कि आपको अपने जुनून को अपना पेशा बनाना है, यह अपने इकिगाई को ढूंढ़ने का दूसरा कदम है।

3. व्यवसाय: कोई भी ऐसा काम जिसे करने से आपको पैसे मिलते हैं और जिस काम को करने से आप लोगों की मदद कर पाते हैं या लोगों की जरूरत को पूरा करते हैं वो काम ही आपका व्यवसाय है।

4. उद्देश्य: कोई भी ऐसा काम जिसे करना आपको पसंद है और जिस काम की लोगों को जरूरत है, उस काम को आप अपना उद्देश्य बना सकते हैं।

इन चारों में एक समान बिंदु बनता है और वह है आपका इकिगाई। जापान के लोगों के खुशहाल और लंबी आयु तक जीने की असली वजह उनका इकिगाई ही है। इकिगाई बढ़ती उम्र में भी युवा रहने की कला है।

आपके अस्तित्व की वजह क्या है: जापान के लोगों का मानना है कि हर इंसान के जीवन का एक इकिगाई होता है। इकिगाई हर इंसान के अंदर छिपा है, कुछ लोगों को उनका इकिगाई मिल जाता है और कुछ उसकी खोज में लगे रहते हैं। जापान के ओकीनावा शहर के लोगों की सुबह उठने की वजह उनका इकिगाई ही होता है। वास्तव में आपके अस्तित्व की असली वजह आपका इकिगाई है।

कभी भी रिटायर ना हों: जापान के लोग रिटायर होने के बाद भी किसी ना किसी काम में व्यस्त रहते हैं और अपने आपको हमेशा सक्रिय रखते हैं। जब तक उनका शरीर उनका साथ देता है, तब तक वह अपना पसंदीदा काम करते रहते हैं। वास्तव में आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जापान की भाषा में रिटायरमेंट जैसा कोई शब्द ही नहीं है।

80% का रहस्य: जापान के ओकिनावा शहर में अक्सर लोग खाना खाने से पहले हारा हारा बू का इस्तेमाल करते हैं। इसका मतलब होता है कि सिर्फ उतना ही खाना खाए जिससे आपका पेट 80% भर जाए। इसका मतलब ये हुआ कि खाना

खाने के बाद भी आपको अपना पेट 20% खाली रखना चाहिए। कम खाना खाने की वजह से, खाना पचाने में हमारी कम ऊर्जा खर्च होती है और यह तीव्र कोशिकीय ऑक्सीडेशन की प्रक्रिया को भी कम करता है। साथ ही हमें आलस्य भी कम आता है।

मोआई – जीवन से जुड़ना: ओकिनावा के लोग दोस्ताना व्यवहार करते हैं। यह उनकी संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। मोआई का अर्थ है: एक ही उद्देश्य से इकट्ठा हुए लोगों का समूह। मोआई के सभी सदस्य मासिक चंदा इकट्ठा करते हैं और यदि इस समूह के किसी भी व्यक्ति को किसी भी तरह की सहायता की जरूरत होती है, तो वह एक दूसरे की मदद करते हैं। इस तरह से वहां के लोगों की भावनात्मक और आर्थिक दोनों जरूरतें पूरी हो जाती है।

कार्यक्षमता और युवा शरीर: एक पुरानी कहावत है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन निवास करता है। शरीर और मन दोनों ही हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है। इन दोनों का स्वास्थ्य एक दूसरे पर निर्भर करता है। यदि आप हमेशा जवान रहना चाहते हैं, तो मन का कार्यक्षमता और खुला होना बहुत जरूरी है। जोश से भरा हुआ मन आपको जवान रहने में मदद करता है। जिस तरह शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हम व्यायाम करते हैं, उसी तरह मन को स्वस्थ रखने के लिए भी हमें मानसिक व्यायाम करना जरुरी है खासकर बुजुर्ग लोगों को हमेशा वही करना अच्छा लगता है, जो वो आज तक करते आए हैं। समस्या यह है कि दिमाग के काम करने का तरीका ऐसा है कि वह नया सोचने के बजाय उसी चीज को दोहराना पसंद करता है, जो वह हमेशा से करता आया है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि हमेशा एक ही प्रकार का काम करने की वजह से वह काम अच्छा भी लगता है और आसानी से भी हो जाता है। इसके कई सारे फायदे भी हैं. इसलिए लोग अपनी दिनचर्या से चिपके रहते हैं, अगर यह शृंखला तोड़नी हो तो दिमाग को नई-नई जानकारियां देना जरूरी होता है।

दीर्घायु का सबसे बड़ा शत्रु तनाव है: कुछ लोग अपनी उम्र से ज्यादा बूढ़े लगते हैं। एक अध्ययन के मुताबिक इसके पीछे की असली वजह तनाव है। आजकल की इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में इंसान बहुत सारी जिम्मेदारियों के तले दबा हुआ है और किसी ना किसी वजह से तनाव में रहता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि लगातार तनाव में रहना शरीर के लिए कितना हानिकारक होता है। तनाव मस्तिष्क की स्मृति से संबंधित कोशिकाओं पर भी नकारात्मक असर डालता है। तनाव की वजह से ही निराशा पैदा होती है। तनाव के कारण है चिड़चिड़ापन, नींद न आना, चिंता और रक्तचाप जैसी समस्याएं होने लगती हैं। अगर आप समय से पहले बूढ़ा नहीं होना चाहते हैं, तो आपको अपनी दिनचर्या में कुछ बदलाव करने होंगे और अपने जीवन को तनाव मुक्त करने की कला सीखनी होगी। तनाव कम करने के लिए हमेशा सजग रहें। क्योंकि हमें सताने वाले डर और चिंताएं चाहे असली हों या नकली लेकिन उससे पैदा होने वाले तनाव का परिणाम असली ही होता है। किताब में तनाव को दूर करने का एक उपाय बताया गया है और वह है ध्यान अर्थात् मैडिटेशन। इसकी मदद से हम अपने तनाव पर काबू पा सकते हैं।

लगातार ज्यादा बैठे रहने से भी बुढ़ापा आता है: लगातार एक ही जगह बैठकर काम करने वाले लोगों में उच्च रक्तचाप, बदहजमी, हृदय रोग, हड्डियों का कमजोर होना और मोटापा जैसी बीमारियों के होने का खतरा बढ़ जाता है और ऐसे लोग अपनी वास्तविक उम्र से पहले ही बूढ़े लगने लगते हैं। इन सभी समस्याओं को आप अपनी दिनचर्या में थोड़ा सा बदलाव करके जड़ से खत्म कर सकते हैं। छोटे-छोटे बदलाव आपको इन बडी-बड़ी बीमारियों से बचाने में मदद कर सकते हैं। यहां कुछ उपाय बताए गए हैं, जिन्हें आपको अपनी दिनचर्या में जोड़ना चाहिए। जैसे हम बैंककर्मियों को दिनभर बैठना पड़ता है, तो इसके उपाय हेतु कुछ देर के लिए टहलना चाहिए।

प्रत्येक दिन में कम से कम 20 मिनट पैदल चलें।

टीवी या मोबाइल पर व्यर्थ बैठने से अच्छा है आप सामाजिक कार्यों में सम्मिलित हों।

जंक फूड की बजाए फल और पौष्टिक सब्जियां एवं अन्य चीजें खाने की शुरुआत करें।

अच्छी नींद लें। सामान्यत: 7 से 9 घंटे की नींद काफी होती है।

शरीर को हानि पहुंचाने वाली आदत्तों को छोड़ें और अच्छी आदतों को अपनाएं।

कोई ऐसा खेल या काम जरूर करें जिससे आपका शरीर क्रियाशील रहे।

इस पुस्तक में लेखक ने इकिगाई के 10 महत्त्वपूर्ण नियम दिए हैं जो निम्नानुसार हैं:-

1. हमेशा कार्यरत रहें और कभी भी रिटायर न हों।
2. जल्दबाजी ना करें।
3. पेट भर कर न खाएं।
4. अच्छे दोस्तों से घिरे रहें।
5. मुस्कुराएं या खुश मिजाज रहें।
6. अपने अगले जन्मदिन पर ज्यादा तंदुरुस्त बनने का प्रयास करें।
7. ईश्वर से जुड़ें।
8. धन्यवाद दें।
9. वर्तमान में जिएं।
10. अपना जीवन अपने इकिगाई के मुताबिक जिएं।

***

स्थाई स्तंभ

अपने ज्ञान को परखिए

1. वित्त वर्ष 2024 में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को 15,000 करोड़ रुपये से अधिक का लाभांश देने की उम्मीद है। लाभांश घोषित करने के लिए, एक वाणिज्यिक बैंक के पास न्यूनतम कुल पूंजी पर्याप्तता कितनी प्रतिशत होनी चाहिए?
   (क) 10.5% (ख) 11.5%
   (ग) 12.5% (घ) 13.5%
2. प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली के भारत मंडपम में स्टार्टअप महाकुंभ का शुभारंभ किया। 1.25 लाख फर्मों के साथ भारत में सबसे बड़ा स्टार्ट-अप वातावरण है।
   (क) 2 (ख) 3 (ग) 4 (घ) 5
3. हाल ही में, जारी Human Development Index 2022 में भारत को 193 देशों में कौन सा स्थान मिला है?
   (क) 127वां (ख) 131वां (ग) 134वां (घ) 141वां
4. हाल ही में, किन दो व्यक्तियों को नए चुनाव आयुक्त के रूप में नियुक्त किया गया है?
   (क) सुखबीर संधू एवं ज्ञानेश कुमार
   (ख) अमिताभ राणा एवं सुखबीर संधू
   (ग) ज्ञानेश कुमार एवं सुखबीर संधू
   (घ) गजेंद्र सिन्हा एवं अशोक थापा
5. हाल ही में, किस भारतीय शहर में दुनिया की पहली ''वैदिक घड़ी'' स्थापित की गयी है?
   (क) मथुरा (उत्तरप्रदेश) (ख) उज्जैन (मध्यप्रदेश)
   (ग) जयपुर (राजस्थान) (घ) रायपुर (छत्तीसगढ़)
6. प्रतिवर्ष पूरे भारत में ''रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया (RBI)'' का स्थापना दिवस किस तारीख को मनाया जाता है?
   (क) 01 अप्रैल को (ख) 03 अप्रैल को
   (ग) 31 मार्च को (घ) 28 मार्च को
7. हाल ही में, कौन प्रतिष्ठित 'भारत रत्न' सम्मान पाने वाले 50वें शख्स बने हैं?
   (क) अजित डोभाल (ख) अमिताभ बच्चन
   (ग) स्वामी रामदेव (घ) लालकृष्ण आडवाणी
8. हाल ही में, फ्रांस के ''मिशेल टैलाग्रैंड'' को वर्ष 2024 का एबेल पुरस्कार मिला है, यह किस क्षेत्र में दिया जाता है?
   (क) गणित (ख) संगीत
   (ग) अभिनय (घ) चित्रकला
9. भारत सरकार ने किसे 16वें वित्त आयोग के चेयरमैन के रूप में किसे नियुक्त किया है? राजेश हरितवाल
   (क) अरविंद पनगढ़िया (ख) अनुज सिसोदिया
   (ग) मुकेश पूनिया (घ) एन के सिंह
10. निम्नलिखित में से कौन-से संशोधन के पश्चात बोडो और डोगरी भाषाएं आठवीं अनुसूची में शामिल की गई थी?
    (क) 91वां संशोधन (ख) 92वां संशोधन
    (ग) 81वां संशोधन (घ) 85वां संशोधन
11. भारत के पड़ोसी देश नेपाल ने किस शहर को अपनी पर्यटन राजधानी बनाने की घोषणा की है?
    (क) बीरगंज (ख) भरतपुर
    (ग) पोखरा (घ) ललितपुर
12. भुगतान संतुलन में निहित होता है?
    (क) दृश्य व्यापार (ख) अदृश्य व्यापार
    (ग) ऋण (घ) उपरोक्त सभी
13. आम्र वर्षा है?
    (क) आमों की बोछार (ख) आम का टपकना
    (ग) केरल एवं कर्नाटक में मार्च एवं अप्रैल में होने वाली वर्षा
    (घ) आम की फसल
14. प्रतिवर्ष पूरे भारत में ''राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस (National Vaccination Day)'' कब मनाया जाता है?
    (क) 12 मार्च को (ख) 16 मार्च को
    (ग) 18 मार्च को (घ) 19 मार्च को
15. हाल ही में, कौन अमेरिकी प्रभाव वाले ग्रुप NATO का 32वां सदस्य देश बना है?
    (क) युक्रेन (ख) सायप्रस (ग) स्वीडन (घ) आयरलैंड
16. भारत के किस प्रसिद्ध स्टेडियम का नाम बदलकर ''निरंजन शाह स्टेडियम'' रखा गया है?
    (क) ईडन गार्डन्स स्टेडियम
    (ख) डीवाई पाटिल स्टेडियम
    (ग) एम. चिनास्वामी स्टेडियम
    (घ) सौराष्ट्र क्रिकेट स्टेडियम
17. किस दक्षिण भारतीय राज्य में होली को ''कमन पांडिगई'' के रूप में मनाया जाता है, जहां लोग कामदेव की पूजा करते हैं?
    (क) केरल (ख) तमिलनाडु
    (ग) कर्नाटक (घ) आंध्र प्रदेश
18. भारत का कौन सा पूर्वोत्तर राज्य होली को हिंदू और स्वदेशी परंपराओं के संयोजन ''याओसंग'' के रूप में मनाता है?
    (क) मणिपुर (ख) असम
    (ग) मेघालय (घ) अरुणाचल प्रदेश
19. भारत के किस शहर में सिख समुदाय द्वारा मार्शल आर्ट प्रदर्शन और संगीत के साथ ''होला मोहल्ला'' त्यौहार मनाया जाता है?
    (क) अमृतसर (ख) लुधियाना
    (ग) पटना (घ) आनंदपुर साहिब
20. कौन-सी बॉलीवुड फिल्म अपने प्रतिष्ठित होली गीत ''रंग बरसे....'' के लिए प्रसिद्ध है?
    (क) शोले (ख) दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे
    (ग) कभी खुशी कभी गम (घ) सिलसिला

(उत्तर के लिए पेज नं. 29 देखें)

स्थाई स्तंभ

बैंकिंग शब्द मंजूषा

Agricultural finance कृषि–वित्त

कृषि–क्षेत्र के क्रियाकलापों के संचालन और विस्तार या विकास के लिए उधार अथवा वित्तपोषण। कृषि की अपनी ऐसी कुछ विशेषताएं हैं जो इसकी ऋण की आवश्यकताओं को अन्य क्षेत्रों की ऋण संबंधी आवश्यकता से अलग करती है। कृषि–संसाधनों पर आधारित गौण कार्यकलाप के लिए दिया जानेवाला ऋण भी कृषि–वित्त कहलाता है, जैसे, मछलीपालन, डेरी–व्यवसाय, सूअरपालन, भेडपालन, मुर्गीपालन आदि के लिए दिया जाने वाला ऋण।

Case in need विदेशी प्रतिभू (जमानतदार)

कभी–कभी विनिमय–पत्र में किसी अन्य व्यक्ति का नाम ऐसे व्यक्ति के रूप में उल्लिखित होता है जो मूल आदेशिती द्वारा बिल स्वीकार न किए जाने की स्थिति में बिल को स्वीकार करेगा। ऐसा व्यक्ति विदेशी प्रतिभू (जमानतदार) अथवा आवश्यकता की दशा में आदेशिती कहलाता है।

Formal sector credit औपचारिक ऋण–क्षेत्र

औपचारिक क्षेत्र से मिलनेवाला ऋण संस्थागत ऋणों का ही पर्याय है। सरकारी मशीनरी जहां कार्यरत हो और उपभोक्ताओं को प्रचलित नियमों एवं शर्तों पर सहज ही ऋण उपलब्ध हो सके, ऐसी सभी संस्थाएं औपचारिक ऋण–क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है।

Growth funds वृद्धिशील फंड

ये ऐसे म्यूच्युअल फंड होते हैं, जो किसी भी कंपनी या फर्म में निवेश करने से पहले उसके विकास की संभावना की अच्छी तरह से जांच पड़ताल कर लेते हैं। जिन कंपनियों के निकट भविष्य में तेजी से आगे बढ़ने की संभावना होती है, ये म्यूच्युअल फंड अन्य प्रतिस्पर्धी कंपनियों के मुकाबले उन्हीं में निवेश करने को तरजीह देते हैं। इस तरह इनका निवेश–पोर्टफोलियो हमेशा लाभदायक अवस्था में ही रहता है और ये आम निवेशक की पहली पसंद बन जाते हैं।

Mortgage bonds बंधक बॉन्ड

एक सामान्य स्वरूप का सुरक्षित कॉर्पोरेट बांड। बंधक बांड को जारी करनेवाले द्वारा निष्पादित किए जानेवाले दस्तावेजों के अनुसार इस बांड के निवेशकर्ता को ट्रस्टी के माध्यम से कंपनी/निकाय की स्थायी संपत्ति पर मालिकाना हक प्राप्त होता है। उदाहरण के तौर पर यदि बांड से मिलनेवाली आय को कंपनी के विनिर्माण अथवा संयंत्र लगाने के लिए उपयोग में लाया जाता है और वह आस्ति–समर्थित बंधक बांड है तो संबंधित आस्ति में बांडधारक भी हिस्सेदार बन जाता है।

Over collateralization अति संपार्श्विकीकरण

एक प्रकार की ऋण–संवृद्धि, जिसे आस्ति तथा कुछ निजी बंधक सहित जमानतों में उपयोग किया जाता है। किसी एक जमानत के लिए प्राथमिक रूप से गिरवी रखी गई मूल राशि जमानत की मूल धनराशि से अधिक होती है।

Revolving Credit परिक्रामी ऋण

बैंक अथवा किसी अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठान द्वारा खोला गया ऐसा उधार- खाता (क्रेडिट एकाउंट), जिसके अंतर्गत कर्जदार अथवा ग्राहक अपनी पुरानी देयता की मद में किए गए भुगतान के बराबर फिर उधार ले सकता है। अर्थात् जितना वह जमा करे, उतना फिर उधार ले सकता है।

Self-financing स्व–वित्तपोषी

यह उधार लेकर अपने पूँजीगत व्यय को वित्तपोषित करने के बजाय अवितरित लाभों में से ऐसा करने की क्षमता रखने वाली कंपनी को निर्दिष्ट करता है।

Tradable instrument विक्री योग्य लिखत

बैंक ड्राफ्ट या प्रॉमिसरी नोट की तरह कोई औपचारिक दस्तावेज़, जिसे एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को हस्तांतरित किया जा सके। इसकी सहज खरीद- बिक्री की जा सकती है। कंपनियाँ पूंजी उगाहने के लिए विक्री- योग्य लिखत जारी कर सकती है।

Traveller's cheque यात्री चेक

प्रभार के रूप में कुछ रकम लेने के बाद बैंक द्वारा जारी किया गया ऐसा ड्राफ्ट, जो प्रस्तुत करने पर उसकी किसी भी शाखा में सममूल्य पर देय हो। यात्री–चेक का धारक एक बार चेक जारी होने के समय बैंक- प्राधिकारियों के समक्ष हस्ताक्षर करता है और दुबारा भुगतान प्राप्ति के समय हस्ताक्षर करता है। सुरक्षा की दृष्टि से यात्रियों के लिए नकदी की तुलना में यह अधिक निरापद है।

भारतीय रिज़र्व बैंक के बैंकिंग पारिभाषिक कोश से साभार...

चित्र बोलता है।

1

ईश्वर के हाथों की, कठपुतली हैं हम।
उनका ही ये रंगमंच, उन्हीं के हैं नाट्य सब।
उन्हीं के हाथों में बागडोर, उन्हीं की रचना हैं हम।
उन्हीं की मधुर धुन पर, ता थैया ता थैया करते सब।

कीर्ति गहलोत, ग्राहक सेवा सहयोगी
स्टेशन रोड शाखा, जोधपुर

2

कठपुतली के खेल में है आपका स्वागत ।
कठपुतली करेगी आपका खूब आव भगत।
अगर हो जाए हमारी कठपुतली से प्यार।
दिल खोल के देना हमको रोजगार।

अंशिता वर्मा, अधिकारी,
भुज मुख्य शाखा, भुज क्षेत्र

3

एक इशारे पर नाच दिखाती
दूसरे इशारे पर शांत हो जाती
पल में कितने भिन्न भाव जगाती
सूत्रधार के मन को कठपुतली दर्शाती

आनंद सिंह गौतम, प्रबंधक
ओबरा शाखा, वाराणसी-1 क्षेत्र

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार राशि दी जा रही है।

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत अक्तूबर-दिसंबर, 2023 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं। पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें। श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे। पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई-मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 10 जुलाई, 2024 तक भेज सकते हैं।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट, अंचल कार्यालय, मुंबई और क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा का राजभाषायी निरीक्षण

अंचल कार्यालय, मुंबई

दिनांक 12 फरवरी, 2024 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा मुंबई अंचल कार्यालय का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमी याज्ञिक, संसद सदस्य (राज्य सभा), श्रीमती कांता कर्दम, संसद सदस्य (राज्य सभा), श्री विक्रम सिंह, अवर सचिव (समिति), श्री राम नारायण साव, अनुसंधान अधिकारी, श्री अब्दुल मोहीब, समिति रिपोर्टर, श्री सुनील कुमार शर्मा, अंचल प्रमुख, मुंबई अंचल, श्री सुदीप कुमार, उप अंचल प्रमुख, मुंबई अंचल और श्रीमती रेश्मा जलगांवकर, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट

दिनांक 9 जनवरी, 2024 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति के माननीय सदस्यों द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट का राजभाषायी निरीक्षण किया गया जिसमें बैंक की ओर से श्री सुशांत कुमार महान्ती, अंचल प्रमुख, राजकोट अंचल, श्री संजय सिंह, प्रमुख–राजभाषा एवं संसदीय समिति, श्री अंजनी कुमार सिंगल, क्षेत्रीय प्रमुख, राजकोट, श्री संतोष कुमार सिंह, उप क्षेत्रीय प्रमुख, राजकोट क्षेत्र और श्री संजय कुमार आर्य, मुख्य प्रबंधक राजभाषा, राजकोट अंचल उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

दिनांक 11 मार्च, 2024 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय में किए जा रहे राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की एवं तत्संबंधी सुधार हेतु महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए। निरीक्षण बैठक में प्रधान कार्यालय से प्रमुख–राजभाषा एवं संसदीय समिति, श्री संजय सिंह, बरेली अंचल के उप अंचल प्रमुख श्री पी. एस. नेगी, आगरा क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुंदर सिंह तथा अंचल और क्षेत्र के राजभाषा प्रभारियों ने प्रतिभागिता की।

कौन है जो छिपकर खेलता होली?

कौन है जो छिपकर खेलता होली?
सारे अंबर पर लाल गुलाल उड़ाती
कौन आ रही पर्दे में से रंग लुटाती
धरती की ओढ़नी रंग गई सारी
कौन यह छलना मारे भर पिचकारी
छुप गई झिलमिल करती तारों की टोली
कौन है जो छिपकर खेलता होली?

वसंत ऋतु यौवन के निकट है पहुंची,
'औ' भीतर ही भीतर मंद हास छलकाती
नदियों का जल कल-कल गीत सुनाता,
सृष्टि का चल-चक्र पथ सुझाता,
अति चतुर समझो या भोली-भाली
कौन है जो छिपकर खेलता होली?

उदास चेहरों पर मुस्कान खिली है
तन-मन में शत-शत तान छिड़ी है,
आशा विश्वास के द्वार खुल गए हैं,
सब जीव अपना दुःख भूल गए हैं
कैसे कोई भूले यह घड़ी अमोली
कौन है जो छिपकर खेलता होली?

दीनू भाई पंत (डोगरी भाषा के कवि-नाटककर)
हिंदी अनुवादक : श्यामलाल रैणा